◆ जून, 2019 ◆ मूल्य: 35/-

साक्षात्कार / डॉ. प्रमोद सावंत
मुख्यमंत्री,गोवा

साक्षात्कार / केवल हांडा
अध्यक्ष, यूनियन बैंक ऑफ इंडिया

साक्षात्कार / बी.एन.सिंह
कार्यकारी अध्यक्ष, अल्केम लैबोरेट्रीज लि.

वसुधैव कुटुम्बकम् की भावना से अनुप्राणित

अभ्युदय वात्सल्यम्

राष्ट्रीय हिन्दी मासिक समाचार पत्रिका

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस विशेषांक

योगमय हुआ विश्व

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा 21 जून को अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस घोषित कराकर विश्व के कल्याणार्थ महान कार्य किया है ...

www.avvmagazine.in

KALYANI

With Best Compliments

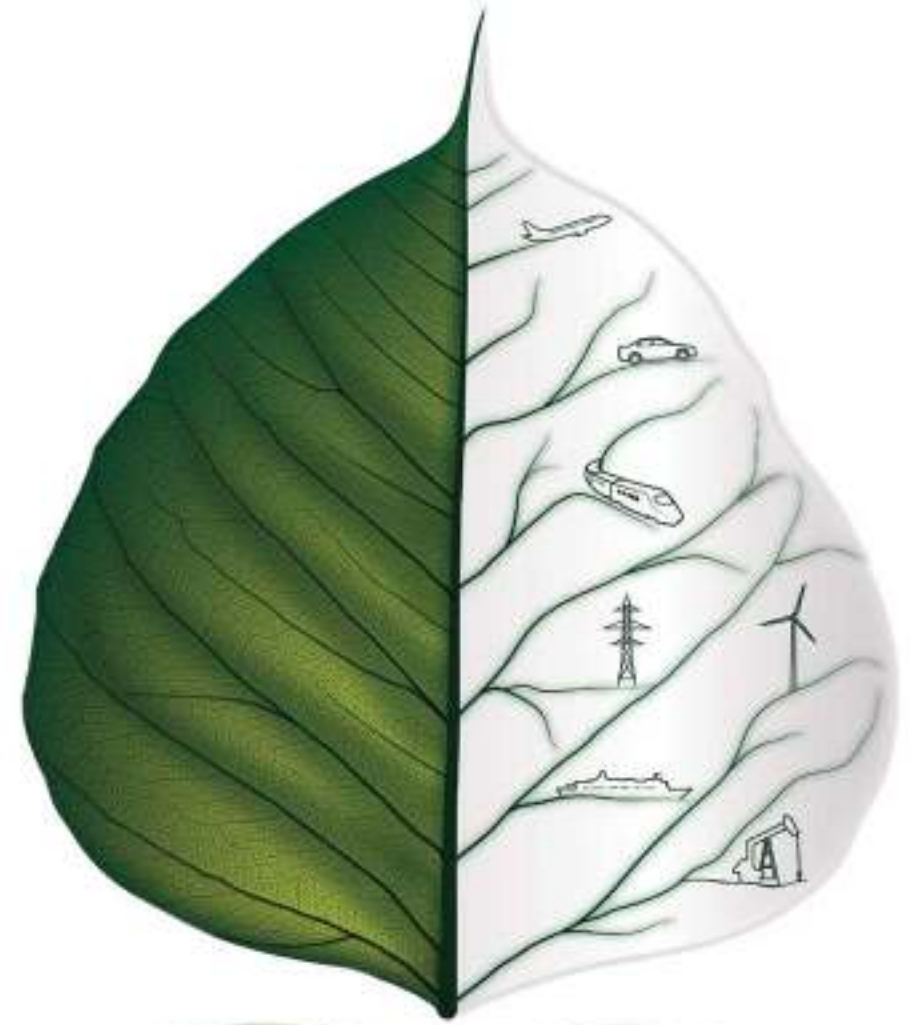

innovation at the heart

EXPANDING HORIZONS

BHARAT FORGE

Mundhwa, Pune - 411 036, INDIA www.bharatforge.com | www.kalyanigroup.com

अनुक्रमणिका

04 — सम्पादकीय: योग ब्रह्माण्ड की अनमोल ज्ञान सम्पदा है
06 — योग दिवस पर विशेष: मोदी ने दुनिया को बांधा योग सूत्र में
08 — योग दिवस पर विशेष: मजबूत हुई भारत की सॉफ्ट पावर छवि
10 — योग दिवस पर विशेष: अपने असर से ही आगे बढ़ रहा है योग
12 — योग दिवस पर विशेष: योग का उपयोग बढ़ाने की जरुरत
14 — योग दिवस पर विशेष : आसन - प्राणायाम भर नहीं है योग
15 — योग दिवस पर विशेष: विश्व की सेवा में अर्पित....
18 — विशेष साक्षात्कार: हमारा उद्देश्य है कि प्रत्येक योजना..... डॉ. प्रमोद सावंत
20 — फार्मा उद्योग: आज के आईने में अल्केम लैबोरेट्रीज लिमिटेड
22 — विशेष साक्षात्कार: अल्केम को हम पहले स्थान पर देखना चाहते हैं - बी.एन.सिंह
24 — विशेष साक्षात्कार: बैंकों के विलय को अच्छा कदम मानता हूँ : केवल हांडा
28 — साक्षात्कार : डिजिटल बैंकिंग के माध्यम से बैंकिंग ..... : सुनील सिंह
30 — विशेष आलेख: भारत में लोकतंत्र मॉडल की प्रासंगिकता
38 — राजनीति : राष्ट्रीय प्रतीक का निरंतर निरादर
40 — अर्थ जगत : ई-कॉमर्स नीति में बदलाव की जरूरत
42 — विश्व व्यापार : ग्लोबल मैन्युफैक्चरिंग हब बन सकता है भारत
44 — विचार / दर्शन: एकात्म मानववाद
50 — अन्तरिक्ष जगत : एण्टी-सैटेलाइट मिसाइल भारत.....
54 — खेल जगत : युवराज ने विदेशी.....
55 — मनोरंजन जगत: राहुल ढोलकिया की अगली फिल्म में कृति सैनन
56 — समाचार: तेलंगाना में विश्व की सबसे बड़ी सिंचाई परियोजना....

हमारा उद्देश्य है कि प्रत्येक योजना का लाभ समाज के अंतिम व्यक्ति तक पहुँचे - डॉ. प्रमोद सावंत

कर्मयोगी एवं उदारमना व्यक्तित्व - बी.एन.सिंह

बैंकों के विलय को अच्छा कदम मानता हूँ - केवल हांडा

वसुधैव कुटुम्बकम् की भावना से अनुप्राणित

अभ्युदय वात्सल्यम्

वर्ष-11 अंक-11 जून, 2019 मूल्य- 35/- राष्ट्रीय हिन्दी मासिक समाचार पत्रिका

संस्थापक सम्पादक
श्री कृपाशंकर तिवारी

प्रधान सम्पादक : आलोक रंजन तिवारी प्रबन्ध सम्पादक : शिवा तिवारी

विज्ञापन प्रबंधक - संजय सिंह
ग्राफिक डिजाइनर - अनमोल शुक्ल
छायाचित्र - अनमोल बैसने

कृपा प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक कृपाशंकर तिवारी द्वारा विनय ग्राफिक्स, युनिट नम्बर 13, रवि इंडस्ट्रियल प्रेमायसेस, महाकाली केव्स रोड, अन्धेरी (पूर्व), मुंबई - 400093 से मुद्रित एवं आर - 2/608, आर.एन.ए. प्लाजा, एमएमआरडीए कॉलोनी, राम मंदिर रोड, गोरेगांव (प.), मुंबई - 400104 से प्रकाशित।

सम्पादक : आलोक रंजन तिवारी
पंजीकृत कार्यालय: आर - 2/608, आर.एन.ए. प्लाजा, एमएमआरडीए कॉलोनी, राम मंदिर रोड, गोरेगांव (प.), मुंबई - 400104

दूरभाष: 022 -26771428 / 9967718221 / 7800611428
ई-मेल: abhyudayvatsalyam@rediffmail.com
वेबसाइट : www.avmagazine.in

पत्राचार कार्यालय: आर - 2/608, आर.एन.ए. प्लाजा, एमएमआरडीए कॉलोनी, राम मंदिर रोड, गोरेगांव (प.), मुंबई - 400104

पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाओं से सम्पादक की सहमति आवश्यक नहीं है। पत्रिका में प्रदर्शित समस्त पद अवैतनिक हैं। पत्रिका से संबंधित किसी भी विवाद का न्यायिक क्षेत्र मुंबई होगा।

योग ब्रह्माण्ड की अनमोल ज्ञान सम्पदा है

आलोक रंजन तिवारी

मानवता एवं संपूर्ण विश्व के व्यापक हित में प्रधानमंत्री मोदी की विशेष पहल के फलस्वरूप विश्व को प्राप्त इस ऐतिहासिक महान जन कल्याणकारी शुभ अवसर ने भारत के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की वैश्विक जन कल्याणकारी भावना, सर्वे भवन्तु सुखिन: - सर्वे संतु निरामया की उदात्त सोच एवं उनके वैश्विक नेतृत्व क्षमता को प्रकट किया है, प्रदर्शित किया है, प्रमाणित किया है।

योग शब्द का सर्वाधिक तर्क संगत एवं मूल अर्थ है- जोड़ने का कार्य। अर्थात् जिसके द्वारा जोड़ने का कार्य सम्पन्न हो, वह योग है। योग शब्द के अन्य अनेक अर्थ भी हैं। जैसे- संयोग, सम्बन्ध, सम्पर्क, युक्ति, उपाय, नियम, विधान, सूत्र, उपयुक्तता, परिणाम, कौशल, गाड़ी, वाहन, कवच,लाभ, धन, औषध, व्यवसाय, ध्यान, संगति, दूत, सुभीता, सुयोग, प्रयोग, चित्तवृत्ति का निरोध, मोक्ष का उपाय, प्रेम, मेल- मिलाप, वैराग्य, शुभकाल, नाम, नाव, साम आदि चार प्रकार के उपाय, सहयोगिता, उत्सव, पर्व, सम्पत्ति का लाभ और वृध्दि, विशिष्ट तिथियों, वारों और नक्षत्रों का निश्चित नियम से पड़ना, अष्टांग योग जिसमें यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधि का अंतर्भाव है, हठयोग आदि। योग शब्द का अर्थ, क्षेत्र और प्रयोग अतीव विशद् है, व्यापक है। मानव जीवन को शांत, प्रसन्नचित्त, प्रेमपूर्ण एवं सर्वरूपेण सुसमृद्ध एवं तेजस्वी बनाने का सर्वाधिक उपयुक्त एवं सबल माध्यम है- योग। अपने अंतस में अनंत की गहराइयों एवं असीमानन्द की प्राप्ति हेतु योग महान शैली है, विधा है, ईश्वर- प्राप्ति का एक प्रमुख प्रशस्त मार्ग है - योग।

सामान्य जन भी योग का आश्रय लेकर स्व जीवन को तेज, ओज, सुबुद्धि एवं चित्त की स्थिरता व प्रसन्नता के माध्यम से पूर्णतया सुखी व सुवासित बना सकते हैं। योग ब्रह्माण्ड की अनमोल ज्ञान सम्पदा है जिसे प्राप्त करना मानव मात्र का परम कर्तव्य है और हमें मानव जीवन प्राप्त करने के कारण इसे प्राप्त करना ही चाहिए। योग के माध्यम से हमें वह दिव्य चरित्र प्राप्त हो सकेगा जो हमारे लिए सुशोभनीय है, हमारे महनीय मानवीय गरिमा के अनुरूप है। योग के माध्यम से व्यक्ति, समाज, राष्ट्र और विश्व में वह दिव्य आत्मिक चेतना का संचार हो सकेगा, जिसके माध्यम से विश्व में वसुधैव कुटुम्बकम् की भावना बलवती होगी और इस प्रकार सम्पूर्ण विश्व में प्रेम, शांति, सद्भाव एवं भाईचारे का साम्राज्य स्थापित हो सकेगा। योग मानव जीवन एवं संसार की अनेक समस्याओं का स्वयं में समाधान है, यौगिक दृष्टि, विचार एवं कर्म दिव्य होते हैं। अन्ततोगत्वा हमारी दिव्यता के आलोक से सम्पूर्ण विश्व प्रकाशमान हो सकेगा, धरती पर स्वर्गानुभूति हो सकेगी। भारत के प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने विश्व के कल्याणार्थ २१ जून को संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस घोषित कराकर सम्पूर्ण विश्व के व्यापक हित और कल्याण हेतु अभिनंदनीय कार्य किया है और मानवता को महती गरिमा प्रदान करने वाले इस योग प्रतिष्ठा के कार्य हेतु आप सदैव याद किये जायेंगे। श्री मोदी स्वयं में यौगिक जीवन का आनंद प्राप्त करने वाले विलक्षण राज नेता हैं, उदारमना हैं, विश्व प्रेमी हैं, मानवता के उद्धारक हैं और वसुधैव कुटुम्बकम् के महान साधक- उपासक हैं, तभी तो सम्पूर्ण विश्व को आनंदित करने का सपना देखे। उनका सपना साकार हो रहा है और सम्पूर्ण विश्व योग के प्रति श्रद्धावान हो रहा है, आचरणशील हो रहा है।

21 जून को अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस मनाकर हमने प्रतीक रूप में योग को स्वीकार किया है परन्तु इसकी पूर्णता और पूर्ण चरितार्थता यह है कि हम अपने जीवन में, नित्य प्रति की दिनचर्या में इसे शामिल करें, इसके उदात्त भावो में अवगाहन करें, स्वजीवन को आलोकित करें और सम्पूर्ण मानवता को महिमामण्डित करते हुए विश्व को योगभूमि बना दें। श्री मोदी जी के पुण्य प्रयासों से विश्व ने अंतर्राष्ट्रीय दिवस पर योग किया। हमें, सबको जोड़ते हुए श्री मोदी के इस महामानवीय महाभियान को सुसफल बनाने का पूर्ण प्रयास करना होगा, तभी जाकर विश्व को प्रेमपूर्ण, शांतिपूर्ण एवं सौहार्द्र पूर्ण बनाने का विश्वनेता का सपना पूरा होगा।

मानवता एवं संपूर्ण विश्व के व्यापक हित में प्रधानमंत्री मोदी की विशेष पहल के फलस्वरूप विश्व को प्राप्त इस ऐतिहासिक महान जन कल्याणकारी शुभ अवसर ने भारत के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की वैश्विक जन कल्याणकारी भावना, सर्वे भवन्तु सुखिन: - सर्वे संतु निरामया की उदात्त सोच एवं उनके वैश्विक नेतृत्व क्षमता को प्रकट किया है, प्रदर्शित किया है, प्रमाणित किया है। इस महान कार्य के मूल में श्री मोदी की महती कर्मयोगी भूमिका ने उन्हें विश्व नेता के रूप में प्रतिष्ठित कर दिया है, मोदी जी सच्चे अर्थों में विश्व नेता हैं।

@alokrt

◆◆◆

Website: www.sairydam.com

With Best Compliments From

Sai Rydam Realtors Pvt. Ltd.

Corporate Office :
603, Western Edge - 1, W.E. Highway,
Borivali (East), Mumbai - 400 066.
Tel : 022 - 2854 4241/ 4360 6161
Email : enquiry@sairydam.com

Registered Office :
DII - 1 & 2, Aakanksha Commercial
Complex,Opposite Sajawat Complex, Achole
Road, Nallasopara (E), Palghar – 401209
Tel : 0250 – 2441010 / 2020
Email : sairydam@gmail.com

मोदी ने दुनिया को बांधा योग सूत्र में

योग अनुशासन है, समर्पण है। यह आयु, रंग, जाति, संप्रदाय, मत, पंथ, अमीरी-गरीबी, सरहद के भेद, सीमा के भेद, इन सबसे परे है। योग सबका है और सब योग के हैं। इसका पालन जीवन भर करना होता है।

– नरेंद्र मोदी

पांचवें अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर भारत के साथ पूरी दुनिया योग के रंग में रंग गई। इस वैश्विक आयोजन का केंद्र था झारखंड की राजधानी रांची का तारा मैदान, जहां प्रधानमंत्री ने योग के आसन भी किए, लोगों को भारतीय संस्कृति के इस प्रतीक से भी जोड़ा और यह ऐलान भी किया कि योग जाति, धर्म, अमीर-गरीब, कमजोर-सशक्त, हर दायरे से ऊपर है। सुबह साढ़े छह बजे प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने योगाभ्यास के लिए जुटे लोगों से कहा-सुप्रभात और इसके साथ ही देश-दुनिया में योग के इस महाआयोजन की शुरुआत हो गई। एक अरब से ज्यादा भारतीयों के साथ दुनिया के अलग-अलग देशों में योग को सलाम करने-अपनाने का सिलसिला शुरू हो गया। सबसे ऊंचे और ठंडे युद्ध क्षेत्र सियाचिन से लेकर अरुणाचल प्रदेश में चीन की सीमा तक सेना के विभिन्न अंगों के साथ तमाम अर्धसैनिक बलों के जवान योगाभ्यास में जुटे। पहाड़ की ऊंचाइयों पर सैनिकों ने योग किया तो समुद्र में तैरते पोत में भी। सैनिकों के साथ ही पूरे देश में अलग-अलग शहरों में भी लोग योग दिवस मनाने के लिए उमड़े। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने रोहतक में योग किया तो संसद परिसर में भी सदस्यों ने योगासन किए। राजपथ पर 15 हजार साधकों के साथ रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह समेत कई मंत्रियों व मुख्यमंत्रियों ने योगाभ्यास में हिस्सा लिया। दिल्ली के उपराज्यपाल अनिल बैजल भी इसमें शामिल हुए। लालकिला परिसर में आयुष मंत्रालय द्वारा आयोजित समारोह में उपराष्ट्रपति वेंकैया नायडू के साथ 40 हजार से अधिक लोगों ने योग किया।

पाकिस्तान की सरकार ने भी पहली बार योग का महत्व स्वीकार किया। पाक सरकार के ट्वीट में इसके फायदे की ओर इंगित करते हुए लिखा गया कि यह फिटनेस के लिहाज से महत्वपूर्ण है। योग शारीरिक और मानसिक क्षमता का तेजी से विकास करता है, जो शरीर व मस्तिष्क को लंबे समय तक स्वस्थ रखता है। श्रीलंका के राष्ट्रपति मैत्रीपाल सिरिसेन भी योग से जुड़े। उन्होंने योग को भारत-श्रीलंका की साझी विरासत के तौर पर पेश किया है। सिरिसेन ने वृक्षासन और भुजंगासन करते हुए वीडियो भी शेयर किए हैं, जबकि चीन की सेना के जवानों ने लाइन ऑफ एक्चुअल कंट्रोल पर भारतीय जवानों के साथ योगासन किया। यह था योग के प्रति दुनिया की बढ़ती दिलचस्पी का प्रमाण। इधर, रांची में पीएम ने आम लोगों के बीच बारिश की धीमी फुहार में बैठकर 45 मिनट तक योग के 13 आसन किए। उनकी सहजता, अपनापन लोगों को भीतर तक सराबोर कर गई। झारखंड में अभिवादन के लिए उन्होंने जहां राऊरे मन के जोहार (आप लोगों को नमस्कार) से शुरुआत की तो अंग्रेजी में सात समुंदर पार बैठे योग प्रेमियों तक भी अपना यह संदेश पहुंचाया कि योग को जन-जन तक पहुंचाएं। महज पांच वर्ष पूर्व 2014 में संयुक्त राष्ट्र की आमसभा में योग को अंतर्राष्ट्रीय फलक पर लाने वाले नरेंद्र मोदी का संदेश इस मायने में भी अहम है कि वह इसे शहर से गांव की ओर ले जाने का आह्वान करते दिखे। यानी उस वर्ग को योग से जोड़ने की कोशिश की गई जो अब तक इसे विशिष्ट वर्ग के काम की चीज मानता है।

पीएम ने कहा, हमें उसी तरह योग के बारे में ज्ञान बढ़ाते रहना चाहिए जिस तरह हम फोन को अपडेट करते रहते हैं। योग अनुशासन व प्रतिबद्धता का दूसरा नाम है और पूरा जीवन इसके अनुरूप बिताना चाहिए। योग हर किसी का है और हर कोई योग के लिए है। प्रभात तारा मैदान से जाते-जाते मोदी योग को वैश्विक समर्थन पर आभार भी जता गए। उन्होंने अपनी चिंता भी साझा की और उसका निदान भी सुझाया। कहा-शांति, सद्भाव और समृद्धि के लिए योग ही पांचवें अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस का संदेश है।

2014 में मोदी की सरकार में आई थी नई योग क्रांति : शाह

केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने कहा कि योग मन, आत्मा और शरीर को जोड़ता है और हमें सकारात्मक दिशा में आगे बढ़ाता है। कालांतर में लंबे समय से देश गुलाम रहा, जिस कारण योग आम जन से हटकर ऋषि-मुनियों तक सीमित हो गया था। वर्ष 2014 में प्रधानमंत्री मोदी की सरकार के समय नई क्रांति आई, जिसने योग अभ्यास को जन-जन की जीवन शैली का हिस्सा बनाकर इस प्राचीन विधा को पुन: जीवित किया। आज योग ने लोगों के स्वास्थ्य का कायाकल्प कर दिया है। अमित शाह रोहतक के मेला ग्राउंड में पांचवें अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर आयोजित राज्यस्तरीय समारोह को बतौर मुख्य अतिथि संबोधित कर रहे थे। इस दौरान उन्होंने स्वयं भी योगाभ्यास किया।

यहां पहुंचने पर हरियाणा के मुख्यमंत्री मनोहर लाल ने उनका स्वागत किया। समारोह में गृह मंत्री अमित शाह ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 11 दिसंबर 2014 को संयुक्त राष्ट्र महासभा में 177 देशों का समर्थन हासिल कर अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस की शुरुआत करवाई और आज 21 जून को विश्व के 200 से अधिक देशों में योग दिवस मनाया जा रहा है। प्रधानमंत्री ने भारत को पुन: वैश्विक गुरु बनाने की दिशा में कार्य किया है। योग गुरुओं व ऋषि-मुनियों को नमन करते हुए अमित शाह ने कहा कि बाबा रामदेव ने योग को आगे बढ़ाने की दिशा में कार्य किया। उन्होंने मुख्यमंत्री को साधुवाद देते हुए कहा कि हरियाणा सरकार ने योग को बढ़ाने के लिए अच्छे कदम बढ़ाए हैं। मुख्यमंत्री मनोहर लाल ने कहा कि योग को बढ़ावा देने के लिए राज्य सरकार ने योग परिषद का गठन किया है। एक हजार से अधिक व्यायामशालाएं खुली हैं और इनमें योग शिक्षकों को नियुक्त किया जा रहा है।

(साभार : दैनिक जागरण)

◆◆◆

मजबूत हुई भारत की सॉफ्ट पावर छवि

पाकिस्तान सरकार की वेबसाइट पर योग की महत्ता को बताया गया लेकिन इसे भारतीय परंपरा मानने के बजाय एक पुरानी वैश्विक परंपरा करार दिया और कहा गया कि दुनिया के कई हिस्सों में इसके कई रूप प्रचलित हैं।

अंतरराष्ट्रीय योग दिवस ने एक बार फिर साबित कर दिया कि इस पारंपरिक जीवन पद्धति को दुनिया जितनी तेजी से अपना रही है भारत दुनिया में उतनी ही मजबूती से अपनी सॉफ्ट पावर की इमेज पुख्ता कर रहा है। इस बार योग दिवस के लिए अगर सयुंक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में पहली बार ओम का उच्चारण गूंजा तो अभी तक इसे अपनाने में आनाकानी कर रहा पाकिस्तान भी आधिकारिक तौर पर इसमें शामिल हुआ। हालांकि पाकिस्तान ने पूरी कोशिश की है कि इसका श्रेय भारत को ना मिले। विदेश मंत्री एस जयशंकर की अगुआई में भारतीय विदेश मंत्रालय ने यहां रह रहे विदेशी राजनयिकों के लिए खास तौर पर योग दिवस का आयोजन किया। इसमें 56 देशों के 250 राजनयिकों ने हिस्सा लिया। जयशंकर ने योग आयोजन को सामान्य मानवता के जश्न के तौर पर चिन्हित किया। दुनिया भर में फैले भारतीय उच्चायोग और मिशन पहले से ही (15 जून से ही) योग दिवस के अवसर पर तमाम कार्यक्रमों का आयोजन कर रहे थे। इस बार दुनिया के जितने भी प्रमुख पर्यटन स्थल हैं वहां पर खास तौर पर योग दिवस आयोजित करने की रणनीति रही। सिडनी के ओपेरा हाउस, पेरिस के एफिल टावर से लेकर वाशिंगटन स्थिति वाशिंगटन स्मारक, चीन के शाओलीन टेंपल और नेपाल के माउंट एवरेस्ट के बेस कैंप जैसे स्थलों पर योग का आयोजन किया गया। इनमें से कुछ स्थलों पर हजारों की संख्या में लोगों ने योगासन किया। भारतीय मिशनों ने छोटे शहरों में योग को प्रचारित करने पर खास तौर पर ध्यान दिया और इसका असर भी दिखा। कई देशों की प्रसिद्ध हस्तियों ने भी इन आयोजनों में हिस्सा लिया।

पड़ोसी देश पाकिस्तान जो पिछले पांच वर्षों से योग दिवस की अनदेखी कर रहा था इस बार बदला हुआ दिखा। पाकिस्तान सरकार की वेबसाइट पर योग की महत्ता को बताया गया लेकिन इसे भारतीय परंपरा मानने के बजाय एक पुरानी वैश्विक परंपरा करार दिया और कहा गया कि दुनिया के कई हिस्सों में इसके कई रूप प्रचलित हैं। लेकिन,पाकिस्तान के कई शहरों से सोशल मीडिया पर जो खबरें आई वे साफ तौर पर बताती हैं कि वहां का आवाम अब खुल कर योग कर रहा है। इस्लामाबाद से लेकर पेशावर तक के पार्कों में योग का आयोजन किया गया।

संयुक्त राष्ट्र में ओम शांति, शांति ओम की गूंज

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के मौके पर संयुक्त राष्ट्र महासभा (यूएनजीए) में योग कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसमें कई देशों के राजनयिक, अधिकारियों, योग गुरु व बच्चों के साथ कई लोग शामिल हुए। इस दौरान महासभा का हॉल **ओम शांति, शांति ओम** के मंत्रोच्चार से गूंज उठा। बीते पांच सालों में यह पहली बार है, जब यूएनजीए के हॉल में योग कार्यक्रम का आयोजन किया गया है। बता दें कि 2014 में महासभा में अपने संबोधन के दौरान प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 21 जून को अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस मनाए जाने का प्रस्ताव दिया था। इसके बाद 2015 से हर साल पूरे विश्व में योग दिवस मनाया जा रहा है।

इस साल योग विथ द गुरुज कार्यक्रम का थीम योग फॉर क्लाइमेट एक्शन था। पहले इसका आयोजन यूएन मुख्यालय के नार्थ लॉन में होना था। हालांकि, बारिश की वजह से यूएनजीए हॉल में कार्यक्रम आयोजित हुआ। कार्यक्रम की शुरुआत नरेंद्र मोदी के वीडियो मैसेज से हुई। इस मौके पर संयुक्त राष्ट्र में भारत के स्थायी प्रतिनिधि सैयद अकबरुद्दीन ने कहा, मुझे उम्मीद है कि योग से स्वच्छ, हरित और चिरस्थायी भविष्य की परिकल्पना सुदृढ होगी। उन्होंने यह भी कहा कि जलवायु परिवर्तन मानवता के अस्तित्व पर संकट बन गया है। योग हमें ऐसी जीवनशैली अपनाने में मदद करेगा, जो सतत है और पर्यावरण के लिहाज से सुरक्षित भी है। कार्यक्रम में मौजूद संयुक्त राष्ट्र की उपमहासचिव अमीना मुहम्मद ने कहा, योग का सार ही संतुलन है। यह हमारे अंदर ही नहीं, बल्कि मानवता व प्रकृति के साथ भी संतुलन बनाने में मदद करेगा। इस मौके पर कार्यक्रम में शामिल लोगों ने योग गुरुओं के निर्देशों का पालन करते हुए 'ओम शांति, शांति ओम" मंत्र का उच्चारण करने के साथ ही अनुलोम – विलोम प्राणायाम का अभ्यास व ध्यान भी लगाया।

इजरायल में भी मना योग दिवस

अंतरराष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर इजरायल स्थित भारतीय दूतावास ने हटाचना परिसर में कार्यक्रम आयोजित किया था। इस योगाभ्यास में इजरायली अभिनेत्री मिशल यनाई के साथ जानी-मानी हस्तियों समेत 400 से ज्यादा लोगों ने हिस्सा लिया। मौके पर इजरायल में भारत के राजदूत पवन कपूर ने कहा, 'मैं इस बात को लेकर हैरान हूं कि इजरायल में योग इस कदर मशहूर है।

पड़ोसी देश चीन व बांग्लादेश में भी मना योग दिवस

चीन की राजधानी बीजिंग स्थित भारतीय दूतावास ने इंडिया हाउस में योग दिवस मनाया। इस कार्यक्रम में भारतीय राजदूत विक्रम मिसरी और उनकी पत्नी डॉली भी मौजूद रहीं। विक्रम ने कहा, ''योग ना सिर्फ दोनों देशों की पुरातन सभ्यता को जोड़ने की कड़ी है, बल्कि यह दोनों देशों के नागरिकों की आधुनिक आकांक्षाओं को भी दर्शाता है।'' वहीं बांग्लादेश की राजधानी में भी योग कार्यक्रम आयोजित हुआ, जिसमें करीब सात हजार लोगों ने हिस्सा लिया। इनमें बांग्लादेश के विदेश मंत्री एके अब्दुल मोमीन व रेल मंत्री मुहम्मद नुरुल इस्लाम सुजन भी शामिल थे।

(साभार : दैनिक जागरण) ◆◆◆

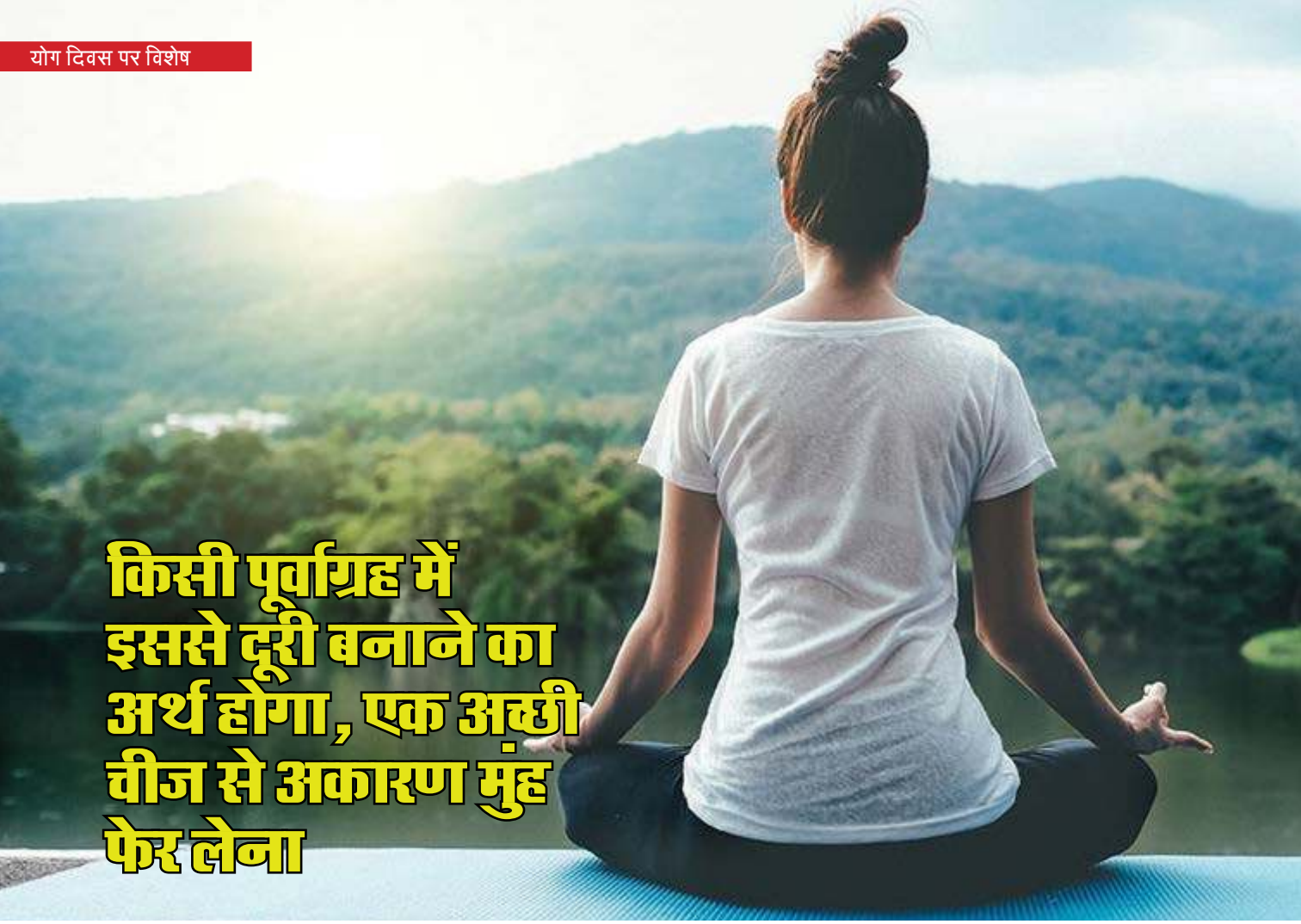

किसी पूर्वाग्रह में इससे दूरी बनाने का अर्थ होगा, एक अच्छी चीज से अकारण मुंह फेर लेना

अपने असर से ही आगे बढ़ रहा है योग

– ललित वर्मा

संयुक्त राष्ट्र ने 2014 में 21 जून को अंतरराष्ट्रीय योग दिवस के रूप में मनाने का प्रस्ताव पास किया। 177 सदस्य देशों ने इसे बिना वोटिंग के मान लिया। ऐसा पहली बार हुआ जब किसी देश की पहल को यूएन असेंबली ने तीन महीने के भीतर मान लिया। इस टिप्पणी के साथ कि ''योग मानव स्वास्थ्य और कल्याण की दिशा में संपूर्ण नजरिया है।'' आज योग इंडस्ट्री 5 लाख करोड़ रुपये का दायरा पार कर चुकी है। भारत में इसका आकार 50,000 करोड़ रुपये के आसपास है। केंद्र की मेक इन इंडिया रिपोर्ट के मुताबिक, करीब 5.32 लाख करोड़ की इस ग्लोबल इंडस्ट्री में अकेले अमेरिका की हिस्सेदारी 1.17 लाख करोड़ रुपये से ज्यादा है। वहां 3 करोड़ 60 लाख से ज्यादा लोग योग करते हैं। योग की इतनी लोकप्रियता और स्वीकार्यता बेवजह नहीं है। शरीर और मन पर पड़ने वाले इसके पॉजिटिव असर ने बाकायदा वैज्ञानिकों का ध्यान अपनी तरफ खींचा है।

योग को धार्मिक उपक्रम समझने के पीछे एक वजह यह हो सकती है कि इसे उस पार्टी की सरकार में ज्यादा प्रमोट किया गया, जिसका दर्शन हिंदुत्व पर टिका है। लेकिन मानसिक शांति और शारीरिक स्वास्थ्य के लिए दुनिया भर में इसका उपयोग वर्षों से हो रहा है।

धर्म और अध्यात्म

जर्मनी की डॉ.डागमार वूयास्तिक भारतविद्या (इंडोलॉजी)में डॉक्टरेट हैं। वह भारत की पारंपरिक चिकित्सा पद्धतियों पर रिसर्च कर रही हैं। यूरोपीय संघ की वैज्ञानिक शोध परिषद ने उन्हें 14 लाख यूरो का फंड दिया है। उनकी तीन सदस्यों वाली टीम 2015 से 'औषधि, अमरत्व और मोक्ष' नाम के प्रॉजेक्ट पर काम कर रही है। यूरोपीय संघ चाहता है कि इस विषय की वैज्ञानिक विवेचना की जाए। दुनिया भर में योग का उपयोग शारीरिक और मानसिक बीमारियों से निपटने के लिए हो रहा है। बड़ी बात यह कि योग में दिलचस्पी इन पांच सालों में ही नहीं बढ़ी है। अमेरिका और यूरोप में पिछले 20 - 25 सालों में इसने लोगों के दिलोदिमाग में अपनी जगह बनाई है। फिर चाहे यह योग के रूप में हो या इसी के एक रूप 'माइंडफुलनेस' के रूप में।

माइंडफुलनेस पश्चिम में जीवन का एक अहम हिस्सा बन चुकी है। इसमें चित्त को शांत करने की प्रैक्टिस की जाती है। मन को अतीत के विचारों से हटाकर एक जगह केंद्रित किया जाता है। चेतना को जगाकर मन में चल रही हलचल का गवाह बना जाता है, उसे अनुभव किया जाता है। सांस और शारीरिक संवेदनाओं के बारे में जागरूकता को बढ़ाया जाता है। जगह-जगह आपको इसके ट्रेनिंग सेंटर दिख जाएंगे। और गौर कीजिए, इसे धार्मिक उपक्रम की तरह नहीं, शारीरिक और मानसिक क्रिया के तौर पर अपनाया गया है। यह मेडिटेशन के बहुत करीब है।

इधर, भारत में 21 जून की तारीख करीब आते ही यह बहस जोर पकड़ लेती है कि योग हिंदू धर्म से जुड़ा उपक्रम है, इसलिए सारे धर्म इसे नहीं अपना सकते। तर्क दिया जाता है कि योग के एक हिस्से प्राणायाम में **ओम** का उच्चारण जरूरी है, इसलिए हिंदू धर्म के अलावा दूसरे धर्म ऐसा नहीं कर सकते।

धर्म की कोई मान्य परिभाषा नहीं है। इसके एक पहलू पर मूल सहमति है कि यह जीने का तरीका है। कुछ नियम हैं, अनुशंसाएं हैं जो समाज को जीने की दिशा देते हैं। अलग-अलग धर्म हैं इसलिए अलग-अलग नियम हैं। अध्यात्म इससे इस मायने में अलग है कि इसे खुद को जानने – समझने की इच्छा और तलाश के उपक्रम के रूप में देखा जाता है। लेकिन योग का विस्तार धर्म और अध्यात्म दोनों में है। योग की सबसे प्रचलित परिभाषा पतंजलि योग सूत्र की रही है। पतंजलि व्यापक तौर पर योग दर्शन के संस्थापक माने जाते हैं। इनका योग बुद्धि के नियंत्रण की प्रणाली है। योग को उन्होंने चित्त की वृत्ति का निरोध कहा है। यानी मन की चपलता को बांधना/साधना। इसके अष्ठांग यानी आठ अंग सुझाए हैं- यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा (एकाग्रता), ध्यान और समाधि। योग को शरीर, मन और आत्मा के जोड़ के रूप में भी प्रचारित किया जाता है।

यह सही है कि योग दिवस पर जो योग कराया जाता है, उसमें मानसिक पहलू से ज्यादा जोर शारीरिक व्यायाम पर ही होता है। मानसिक क्रिया यानी मेडिटेशन पर बहुत कम बात होती है, जबकि इसके बगैर योग की कल्पना अधूरी है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने संयुक्त राष्ट्र महासभा में कहा था- योग भारत की प्राचीन परंपरा का अमूल्य उपहार है। यह दिमाग और शरीर की एकता का प्रतीक है, मनुष्य और प्रकृति के बीच सामंजस्य है, विचार, संयम और संतुष्टि प्रदान करने वाला है और स्वास्थ्य तथा भलाई के लिए समग्र दृष्टिकोण को प्रदान करने वाला है। यह व्यायाम नहीं, अपने भीतर एकता की भावना, दुनिया और प्रकृति की खोज का विषय है।

योग को धार्मिक उपक्रम समझने के पीछे एक वजह यह हो सकती है कि इसे उस पार्टी की सरकार में ज्यादा प्रमोट किया गया, जिसका दर्शन हिंदुत्व पर टिका है। लेकिन मानसिक शांति और शारीरिक स्वास्थ्य के लिए दुनिया भर में इसका उपयोग वर्षों से हो रहा है। और अगर किसी को लगता है कि योग से उसे शारीरिक, मानसिक या मनोवैज्ञानिक लाभ हो रहा है तो इसमें बुराई क्या है? क्यों इसे धर्म या राजनीति के चश्मे से देखा जाए?

सर्व स्वीकार्यता

धर्म का मूल वैसे भी अनुशासित जीवन पद्धति है और योग अनुशासन सिखाता है। अगर यह लोकप्रिय हो रहा है तो अपने असर के कारण हो रहा है, किसी राजनीतिक या धार्मिक प्रभाव के कारण नहीं। आज दुनिया भर में योग पर कार्यक्रम होंगे। योगासन करते वीवीआईपीज की तस्वीरें दिखेंगी। सैकड़ों मुल्क अगर एक दिन, एक ही क्रिया में शामिल होंगे तो यह योग की स्वीकार्यता का ही प्रमाण होगा। कोई चीज इतने व्यापक स्तर पर स्वीकार्य तभी हो पाती है जब उससे सभी को कुछ न कुछ मिल रहा हो। योग ने दुनिया को शारीरिक, मानसिक जागृति के मंच पर एक सूत्र में पिरोया है। इसका खुले दिल से स्वागत किया जाना चाहिए।

◆◆◆

योग का उपयोग बढ़ाने की जरूरत

– डॉ. मोनिका शर्मा

आज यदि भारत के साथ दुनिया के तमाम देशों में योग की लोकप्रियता बढ़ती जा रही है तो इसीलिए कि योग संपूर्ण स्वास्थ्य की सौगात देने वाली प्रक्रिया है। यह केवल शारीरिक व्यायाम भर नहीं, बल्कि एक ऐसी स्वस्थ जीवनशैली है जो मन का स्वास्थ्य भी संवारती है। योग के अलावा दुनिया में ऐसा कोई व्यायाम नहीं जो इंसान को आत्मिक स्तर पर भी परिष्कृत करता हो। हमारे देश में शुरू से ही योग को एक आध्यात्मिक प्रक्रिया माना गया है। जो शरीर, मन और आत्मा को जोड़ते हुए सकारात्मक सोच और स्वस्थ जीवन की राह सुझाती है। मौजूदा समय में न केवल मानसिक रोगियों के बढ़ते आंकड़े, बल्कि आमजन में भी जिस तरह आक्रामकता और विचार एवं व्यवहार में ठहराव की कमी अपनी पैठ बना रही है उसे देखते हुए योग को अपनाने की दरकार है। बीते कुछ बरसों में भारत में ही नहीं दुनियाभर में योग करने वालों की संख्या तेजी से बढ़ी है और इसका एक कारण संयुक्त राष्ट्र की ओर से 21 जून को अंतरराष्ट्रीय योग दिवस घोषित करना और दूसरा, दुनिया भर में यह धारणा पुख्ता होना है कि आज के प्रतिस्पर्धी और तनाव भरे जीवन में योग शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य के लिए भी उपयोगी है।

योग दिवस को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर मनाने की शुरुआत 21 जून, 2015 से हुई, लेकिन यह भारतीय संस्कृति और संस्कारों का सदा से ही हिस्सा रहा है। इसके जरिये सकारात्मक जीवनशैली को सबसे ऊपर रखा गया। योग भारत का एक बड़ा आविष्कार है। यह संपूर्ण मानवता के लिए है। स्वास्थ्य सहेजने की इस कला को दुनिया के हर हिस्से में बसे लोगों ने अपनाया है। सुखद यह है कि अब पूरी दुनिया में इस खास दिन को योग के प्रति लोगों को जागरूक करने के लिए मनाया जाता है, लेकिन आवश्यक केवल यह नहीं है कि योग दिवस पर योग की महत्ता से परिचित हुआ जाए, बल्कि यह भी है कि उसे दैनिक दिनचर्या का हिस्सा बनाया जाए। आज की आपाधापी भरी जीवन शैली में योग तनाव से जूझने और सहज रहने की शक्ति देता है, जो कि मन-मस्तिष्क के स्वास्थ्य को सहेजने के लिए बेहद आवश्यक है। एक ओर आधुनिक जीवनशैली और खानपान शारीरिक स्वास्थ्य को हानि पहुंचा रहे हैं तो दूसरी ओर काम का दबाव और घर से दफ्तर तक अनगिनत उलझनों से जूझता इंसानी मन बीमार हो रहा है। यह स्थिति वाकई चिंतनीय है, क्योंकि नागरिकों की मानसिक सेहत सामाजिक जीवन की बेहतरी से जुड़ा अहम पहलू है। आमजन की सोच की स्थिरता और सकारात्मकता समाज में सुरक्षित और सहज परिवेश बनाने के लिए जिम्मेदार होती है। कहना गलत नहीं होगा कि चाहे खुद को बेहतर ढंग से समझने की बात हो या घर-दफ्तर और सड़क पर सामने आने वाली आम सी परिस्थितियों को संभालने का मामला, मन का सहज रहना जरूरी है। नियमित योगाभ्यास से यह सहजता पाई जा सकती है। यही वजह है कि योग को शरीर को निरोगी और मन को कुदरती तरीके से समृद्ध करने की कला माना जाता है। चिकित्सक से लेकर योग प्रशिक्षक तक सभी यह मानने लगे हैं कि मन का शांत और स्वस्थ होना जीवन के हर क्षेत्र में बेहतरी का आधार बन सकता है। ड्यूक यूनिवर्सिटी के एक अध्ययन के मुताबिक ध्यान एवं आसन, दोनों ही रूपों में योग का मानसिक समस्याओं पर बेहद सकारात्मक प्रभाव होता है। इस शोध के अनुसार मानसिक सेहत के लिए सप्ताह में कम से कम तीन बार, 30 मिनट तक योग करना चाहिए। कैलिफोर्निया स्टेट यूनिवर्सिटी का एक अध्ययन बताता है कि योग तनाव से जुड़े हार्मोन के स्तर को घटाता है। ऐसे शोध और अध्ययन योग को लोकप्रिय बनाने में सहायक बनने के साथ उसकी उपयोगिता को प्रमाणित करने का काम कर रहे हैं। हमारे समाज और परिवारों में आए दिन हो रही घटनाएं बताती हैं कि अब धैर्य और ठहराव नहीं बचा है। रिश्तों को संभालने की बात हो या रीत रहे मन के चलते खुद बीमार होने का मसला, क्षणिक आवेश में किसी की जान ले लेने से लेकर कामुक वृत्तियों के चलते शोषण की घटनाएं अब आम हैं। आज की अनियमित जीवनशैली और भागमभाग भरी जिंदगी बहुत कुछ छीन रही है। इस भागदौड़ में जीवन अस्त-व्यस्त और मन दिशाहीन सा है। विशेषज्ञ मानते हैं कि मन की शक्ति को सही दिशा न दी जाए तो 95 फीसद मानसिक शक्ति व्यर्थ चली जाती है। नकारात्मक विचार दिलो-दिमाग को घेरने लगते हैं। हमारा असुरक्षित और असहिष्णु होता परिवेश बताता है कि व्यावहारिक रूप से यही हो भी रहा है। इतना ही नहीं कम उम्र में ही लोग माइग्रेन, अस्थमा, मधुमेह, रक्तचाप और मोटापा जैसी कई गंभीर बीमारियों से जूझ रहे हैं। साथ ही मानसिक सेहत से जुड़ी परेशानियां जैसे अनिद्रा, भूलने की बीमारी, भय, शक, क्रोध और अवसाद जैसी व्याधियां भी घेर रही हैं। ऐसे में योग बच्चों से लेकर बुजुर्गों तक, सभी की सेहत सहेज सकता है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार 2020 तक भारत में अवसाद दूसरा सबसे बड़ा रोग होगा। पहले से ही स्वास्थ्य सेवाओं के जर्जर ढांचे से जूझ रहे देश में मानसिक रोगियों की इतनी संख्या का उपचार भी क्षमताओं से परे है। ऐसे में योग के जरिये इन आंकड़ों को बहुत हद तक कम किया जा सकता है। योग का एक अहम पक्ष यह भी है कि यह इंसान को प्रकृति से जोड़ता है। भौतिकवादी सोच के बजाय आत्मिक उन्नति का मार्ग सुझाता है। इस प्रक्रिया का पहला कदम ही प्रकृति से जुड़ते हुए सकारात्मक जीवनशैली अपनाना है। इसमें खान-पान से लेकर विचार और व्यवहार तक संतुलन और समन्वय बनाने की कोशिश की जाती है। योग संतुलित जीवनचर्या का आधार है और ऐसी जीवनचर्या अपनाना अपने आप में कई शारीरिक-मानसिक ही नहीं आत्मिक समस्याओं का भी हल है। मन की वृत्तियों को अनुशासित करके अपराध के आंकड़ों में कमी भी लाई जा सकती है। इतना ही नहीं योग के जरिये मानसिक आरोग्यता और मन का "हराव हासिल करने की जीवनशैली देश के जन-संसाधन को सहेजने का भी माध्यम बन सकती है। योग को इस रूप में देखा जाना समय की मांग है कि इसे अपनाकर मन-मस्तिष्क का स्वास्थ्य ही नहीं, सामाजिक मूल्य भी सहेजे जा सकते हैं। सोच-समझ को सही दिशा देना आमजन की जिंदगी में ही नहीं समाज-परिवार और देश में भी बड़ा बदलाव ला सकता है।

(लेखिका सामाजिक मामलों की विश्लेषक हैं)

◆◆◆

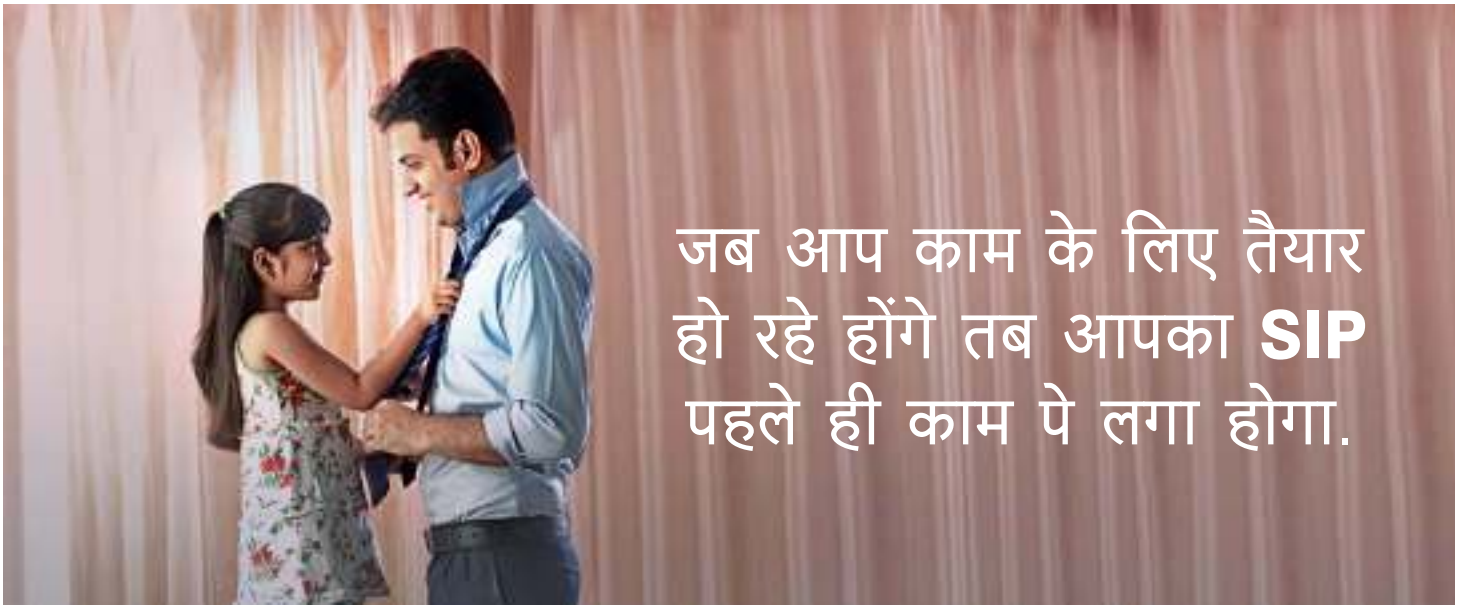

संपत्ति का निर्माण तब होता है जब आपके पैसे हर दिन कड़ी मेहनत करते हैं. हर दिन आपके कुछ घंटे ज़्यादा काम करने के दौरान भी आपके पैसों का काम करना बंद नहीं होना चाहिए. **सिस्टेमैटिक इन्वेस्टमेंट प्लान्स (SIP)** के साथ बरकरार रखें अपनी सक्सेस इन प्रोग्रेस. SIPs के कारण आपको मिलता है पावर ऑफ़ कम्पाउंडिंग का फ़ायदा, जो न केवल आपके निवेश पर बल्कि उससे होनेवाली आय पर भी रिटर्न देते हैं. तो अपना SIP आज ही शुरू करें. अपने सक्सेस इन प्रोग्रेस को रखें बरकरार.

रखें अपनी
Success In Progress
SIP के साथ

एक ग्राहक प्रशिक्षण पहल.

SBI MUTUAL FUND
A PARTNER FOR LIFE

Toll-free: 1800 209 3333 | SMS: 'SIP' to 7065611100 | Visit: www.sbimf.com | Follow us:

Mutual Fund investments are subject to market risks, read all scheme related documents carefully.

With Best Compliments from

ANTARIKSH
GROUP
&
A Residential Township | Vasind

खातिवली,
वासिंद TM
॥ शुभवास्तु ॥
सार काही मनासारखं

HOUSING INDUSTRIAL LOGISTICS BUSINESS PARK

Corporate Office: S-8, 2nd Floor, Eternity Mall, Teen Haath Naka, Thane (W). 400604 Ph.:022-25830011

सुरक्षित गोस्वामी

आसन - प्राणायाम भर नहीं है योग

भीतर मुड़कर अपने स्वरूप से जुड़ना ही योग है। योग में हम अपने शुद्ध स्वरूप को जान कर उसी भाव में स्थित हो जाते हैं। सुख-दुख, मान - अपमान लाभ - हानि राग द्वेष का असर साधक पर नहीं पड़ता। भयंकर से भयंकर विपरीत परिस्थिति भी योगी को तिल भर भी हिला नहीं पाती। योग आत्मा में स्थित हो जाने का नाम है। मुक्ति , मोक्ष, कैवल्य, आत्म साक्षात्कार आदि योग के ही अनेक नाम हैं। योग कहते ही आत्मा तक पहुंचने की यात्रा का वर्णन उसमें शामिल हो जाता है। असलियत में जब हम अपने आत्म स्वरूप में स्थित होते हैं, तब योगी कहलाते हैं । योग मुक्ति मार्ग के साथ - साथ एक जीवन दर्शन भी है । लेकिन आज चार आसन सीखकर कोई योगी, योगाचार्य, योग गुरु कहलाने लगता है। इससे योग की गरिमा नहीं बढ़ रही है,बल्कि योग की उस उच्च स्थिति को धूमिल किया जा रहा है। आज हम योग के नाम पर कुछेक कसरतों को बढ़ावा दे रहे हैं। कहीं ऐसा न हो कि आने वाली पीढ़ियां आसन - प्राणायाम को ही वास्तविक योग मानने लगें।

जीवन की संभावनाएं

आज कुछ लोग धन कमाने के लिए योग का व्यापारीकरण करने पर उतारू हैं । अब से पहले ऐसा कभी नहीं हुआ था। जिस तरह ज्योतिष के कारोबारीकरण से लोगों का विश्वास उससे उठने लगा , धर्म के व्यवसायीकरण से उसके प्रति श्रद्धा कम होने लगी , उसी तरह योग का व्यावसायिक प्रयोग बढ़ने से लोगों का इससे मोहभंग हो सकता है। योग से बीमारियाँ दूर होती हैं , लेकिन योग केवल बीमारियों को दूर करता है ऐसा प्रचारित करना उचित नहीं है। योग तो मुक्ति का मार्ग है। साधक जब मुक्ति के मार्ग पर चलता है तो उसका तन व मन अपने आप ही स्वस्थ हो जाता है। लेकिन योग जब पश्चिमी देशों में गया तो उसके आसनों को ऐसे पेश किया गया जैसे वह सेक्सी बॉडी बनाने का नुस्खा हो। नतीजा यह निकाला कि योग से आध्यात्मिकता दूर हो गई और योग **योगा** बन गया। जबकि योग अच्छे सच्चे मानव का निर्माण करता है और योगा केवल बीमारी को दूर कर शरीर का सुडौल बनाने में मदद करता है।

योग से आध्यात्मिकता निकल जाती है तो वह व्यायाम की श्रेणी में आ जाता है। ऐसा नहीं है कि जो कठिन से कठिन आसन कर ले वह बड़ा योगी हो गया। वैसे तो एक जिमनास्ट की कमर ज्यादा लचीली होती है। वह रस्सी पर एक पैर से चलने में सक्षम है। पर वह बड़ा योगी नहीं बन सकता, क्योंकि वह केवल शरीर के स्तर पर टिका है। आत्मा का ज्ञान वहाँ दूर - दूर तक नहीं। हमारे ऋषियों ने ऐसी अनेक खोजें कीं, जिनसे मानव जीवन की संभावनाओं का विकास किया जा सके। उनके सामने सवाल था कि शरीर का रख-रखाव कैसे किया जाए? इसके लिए ऋषियों ने गहन चिंतन किया और पाया कि सभी पशु- पक्षी अपने शरीर को किसी एक आकृति के माध्यम से स्वस्थ बनाए रखते हैं। सांप को देखकर सर्पासन, मछली को देखकर मत्स्यासन, बगुले को देखकर बकासन, गाय को देखकर गोमुखासन, पेड़ को देखकर वृक्षासन, पर्वत को देखकर पर्वतासन, कमल को देखकर पद्मासन आदि अनेक आसनों का निर्माण किया।

इन आसनों के क्रम में मनुष्य जब इन प्राकृतिक आकृतियों से गुजरेगा तो उसका शरीर ऊर्जावान और निरोगी बना रहेगा। फिर उन्होंने अनुसंधान किया कि कौन से आसन शरीर के किस हिस्से पर असर डालते हैं और उनसे कौन से रोग ठीक होते हैं। इस प्रकार योग का वैज्ञानिक पक्ष प्रस्तुत हुआ। आसन, योग का स्थूल और बाह्य भाग है। यह शरीर को स्वस्थ व निरोग बनाए रखता है। ऋषियों ने अनुभव किया कि शरीर को चलाने के लिए एक प्राण शक्ति कार्य करती है, जिसका हमारी सांस से सीधा संबंध है। उन्होंने पाया कि जो पशु धीरे- धीरे सांस लेते हैं जैसे कछुआ, उनकी उम्र ज्यादा होती है और जो जल्दी-जल्दी सांस लेते हैं जैसे कुत्ता, उनकी उम्र कम होती है। इसलिए ऋषियों ने प्राणायाम का निर्माण किया, जिससे जीवनी शक्ति स्वस्थ रह सके। आसन का उद्देश्य मात्र शरीर को स्वस्थ करना नहीं, बल्कि शरीर की सभी हलचलों को थामकर उसको ध्यान के लिए तैयार करना है। ऐसे ही प्राणायाम का उद्देश्य केवल बीमारियाँ दूर करना नहीं, बल्कि चक्रों व कुण्डलिनी शक्ति को जगाकर चित्त में पड़े हुए संस्कारों का नाश करना है, जिससे साधक का चित्त शुद्ध हो और उसकी आध्यात्मिक यात्रा आगे बढ़े।

दिनचर्या का हिस्सा

हमारी कई इंद्रियाँ हमेशा बाहर की ओर दौड़ती रहती हैं। आँखें रूप निहारती हैं। कान शब्द सुनने में लगे रहते हैं। जीभ बोलने और खाने में उलझी रहती है। नाक गंध और त्वचा कोमल, कठोर, ठंडा, गरम के अनुभव में लगी रहती है। इन बाहर भागती इंद्रियों से ऊर्जा भी बाहर की ओर बह जाती है, तो इसके लिए प्रत्याहार की साधना का वर्णन किया। साथ ही हर व्यक्ति का चित्त अस्थिर रहता है। इसके लिए धारणा की साधना बताई, जिससे चित्त शरीर के अंदर स्थित चक्रों पर एकाग्र हो सके। भागते हुए मन को साधने व आत्मा की यात्रा करने के लिए ध्यान का अभ्यास बताया। समाज में कैसे रहें, इसके लिए अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह, इन यमों का अभ्यास बताया। साथ ही अपने भाव को शुद्ध करने के लिए शौच, संतोष, तप, स्वाध्याय और ईश्वर प्रणिधान, इन नियमों की चर्चा की।

ये बातें हमने अष्टांग योग को ध्यान में रखते हुए कहीं। लेकिन योग की अनेक विधाएँ हैं, जिनमें कर्मयोग, ज्ञानयोग, भक्तियोग आदि प्रमुख हैं। इनमें से किसी भी एक मार्ग पर चल कर व्यक्ति सुख, शांति और अच्छा स्वास्थ्य पा सकता है। आज योग दिवस पर हमें संकल्प लेना चाहिए कि हमें योग को खाने और सोने की तरह ही अपनी दिनचर्या का हिस्सा बनाना है। फिर देखिएगा, जीवन एक उत्सव हो जाएगा।

◆◆◆

सीए. शैलेश हरिभक्ति

विश्व की सेवा में अर्पित श्रेष्ठतम् सेवाभावी पुष्प है अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस

दीर्घावधि से यौगिक जीवन जीने वाले श्री मोदी तन-मन, चिंतन- मनन एवं आत्मरुपेण सर्वथा बलशाली व्यक्तित्व हैं और यही आनंदप्रदायी स्थिति जन-जन को प्राप्त हो की कामना करने वाले मानवता प्रेमी, विश्वसेवी-विश्वनेता हैं।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की विशेष पहल पर संयुक्त राष्ट्र संघ ने 21 जून को अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के रूप में मनाये जाने की ऐतिहासिक घोषणा की। विश्व के व्यापक हित में प्रधानमंत्री मोदी की विशेष पहल पर संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा 177 देशों के समर्थन के बाद 21 जून को अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस घोषित करना संपूर्ण विश्व को, विश्वबन्धुत्व को, मानवता को वसुधैव कुटुम्बकम् के साधक-उपासक, भारत के महान सपूत, प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की अनुपम भेंट है, विश्व की सेवा में समर्पित श्रेष्ठतम् सेवाभावी पुष्प है, जनता-जनार्दन को अर्पित सर्वोत्तम नैवेद्य है। नरेन्द्र मोदी की सर्व हितकारी-मंगलकारी भावना, सर्वेभवन्तु सुखिन: सर्वेसन्तु निरामया: की उदात्त सोच एवं सबके कल्याणार्थ विश्व समुदाय को दिया गया यह नायाब तोहफा उनकी आत्मस्थिति का भावपूर्ण प्रकटीकरण है, सर्व हितैषी भावना का परिचायक है।

दीर्घावधि से यौगिक जीवन जीने वाले श्री मोदी तन-मन, चिंतन- मनन एवं आत्मरुपेण सर्वथा बलशाली व्यक्तित्व हैं और यही आनंदप्रदायी स्थिति जन-जन को प्राप्त हो की कामना करने वाले मानवता प्रेमी, विश्वसेवी-विश्वनेता हैं।

नेता शब्द की उत्पत्ति नेत्र धातु से हुई है, नेत्र का अर्थ है आँख और नेता का भी वही कार्य है जो आँख का कार्य है।आँख सबको समान रुप से देखती है, सबके प्रति समान रुप से संवेदनशील होती है, करुणापूर्ण होती है और सभी के लिए आँसू भी बहाती है।

किसी विद्वान की ये पंक्तियाँ ध्यातव्य हैं- **दर्द हो चाहे किसी भी अज़्ब में रोती है आँख, किस कदर हमदर्द सारे ज़िस्म की होती है आँख।**

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के ऐतिहासिक अवसर पर विश्व में लाखों-करोड़ों की संख्या में लोग अपने तन-मन एवं आत्मस्थिति को स्वस्थ व शक्तिशाली बनाने हेतु आसनस्थ हुए, योगस्थ हुए। मानवता के हित में यह कोई सामान्य बात नहीं है, यह एक बहुत बड़ी वैश्विक उपलब्धि है, बहुत बड़ी मानवीय गरिमानुरूप उपलब्धि है।

तन-मन को स्वस्थ रखने के साथ-साथ मनुष्य को उसके वास्तविक स्वरूप का ज्ञान कराकर ब्रह्माण्ड के सम्पूर्ण आनंद को प्रदान करने की महान सामर्थ्य का नाम है योग। आत्मा-परमात्मा, भक्त -भगवान, जीव-ब्रह्मा के द्वैत को मिटाकर एकत्व की स्थापना करने की महान शक्तिपुंज एवं सामर्थ्य का नाम है योग और यह विश्व हित में मानवता के कल्याणार्थ एवं भलाई के लिए एक सुखद् व मंगलमय् सुसंयोग है - हमारा-आपका-सबका-सम्पूर्ण विश्व का योग है।

इस सुखद् सुसंयोग के सर्वाधिक ऐतिहासिक महत्व का श्रेय यदि किसी को दिया जाना चाहिए तो वह हैं हमारे आपके - सबके नेता, विश्वनेता नरेन्द्र मोदी। आइए, हम सब मिलकर मानवता को महिमामण्डित करें, योग को महिमामण्डित करें, स्वयं का कल्याण करें और योग को निरंतर स्वयं से जोड़ते हुये स्वस्थ जीवन का आनंद उठाएँ।

(लेखक राष्ट्रीय पेंशन प्रणाली न्यास के पूर्व अध्यक्ष एवं अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त चार्टर्ड अकाउंटेंट हैं)

◆◆◆

Finest Integrated Township Experiences Await You

PHILLIPA 3 BHK Apartments | **CARDINAL** 2.5 and 3 BHK Apartments | **SENINA** 2 BHK Apartments | **THE WALK** 1 BHK Apartments

Ready-to-move-in Apartments with Occupancy Certificate at Hiranandani Estate, Thane (W)

Hiranandani Estate, Thane

TOWNSHIP FEATURES - Hiranandani Foundation School • Hiranandani Hospital • Clubhouse • Gymnasium • Squash Courts • Landscaped Gardens • Pedestrian-friendly, Tree-lined avenues • The Walk - High Street Retail

OC Received buildings in The Walk - Fortuna, Ventana A & B and Castalia A & B
OC Received other projects in Hiranandani Estate - RODAS ENCLAVE - Leona - 4 BHK & Basilius - 5 BHK

For more details contact:

+91 22 3357 4512
+91 22 6134 4757

Sales off.: Sales Gallery, Central Avenue,
Hiranandani Estate, off Ghodbunder Road, Thane (W)
www.hiranandani.com | sales@hiranandani.net
/hiranandanidevelopers

For Leasing of apartments in Hiranandani Estate, Thane. +91 82912 84241

Buildings in The Walk & Buildings in Rodas Enclave are mortgaged with HDFC Ltd. Cardinal and Senina are mortgaged with ICICI Bank Limited. The No Objection Certificate (NOC)/ permission of the mortgagee Bank would be provided for sale of flats/units/property, if required.

Hiranandani
creating better communities

योगो योगविदां नेता प्रधानपुरुषेश्वरः ।।
नारसिंहवपुः श्रीमान् केशवः पुरुषोत्तमः ।।

विश्व योग दिवस

'प्राकृतिक ढंग से आनेवाली उदासी, घटती आस्था टालनी हो तो शरीर,
मन तथा हृदय को एक होना चाहिए, योगसाधना, व्यायाम,
अध्ययन तथा सब पे प्रेम करना सीखना चाहिए।'
– भवरलाल जैन

१९३७–२०१६

''सार्थक करेंगे इस जीवन को, बेहतर बनाकर इस जगत को।''

जैन इरिगेशन सिस्टम्स् लि.
छोटे छोटे कदम, आसमाँ छुनेका दम.®

भवरलाल ॲण्ड कांताबाई
जैन फौंडेशन
दया.. कल्पना.. प्रयास!

पो.बॉ. ७२, जलगाँव-४२५००१. दूरभाष: ०२५७-२२५८०११; इ-मेल: jisl@jains.com; वैबसाईट: www.jains.com

JAINART/6/18/VJ

डॉ. प्रमोद सावंत
मुख्यमंत्री, गोवा

हमारा उद्देश्य है कि प्रत्येक योजना का लाभ समाज के अंतिम व्यक्ति तक पहुँचे

– डॉ. प्रमोद सावंत

गोवा के मुख्यमंत्री डॉ. प्रमोद सावंत से अभ्युदय वात्सल्यम् के प्रधान सम्पादक आलोक रंजन तिवारी ने सत्ता, संगठन और अन्य महत्वपूर्ण राजनीतिक विषयों पर विस्तृत बातचीत की। प्रस्तुत है बातचीत के सम्पादित अंश –

■ **प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में भाजपा को प्रचंड जनादेश मिला। इस प्रचंड जीत को कैसे देखते हैं ?**

माननीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी को जो जनादेश मिला है, वह पिछले ५ वर्षों में किये गए कार्यों का सुखद परिणाम है। इसलिए देश की जनता ने उनके नेतृत्व पर अपना विश्वास जताया । लोग चाहते हैं हमारा देश ऊँचाइयों का स्पर्श करे। मोदी जी ने सबका साथ – सबका विकास के मूलमंत्र का पालन करते हुए लोगों के विश्वास को जीता है। जिस तरह उनके प्रथम कार्यकाल में भारत ने तीव्र गति से विकास किया, ठीक उसी तरह उनका द्वितीय कार्यकाल भी शानदार साबित होगा।

■ **देश के गृहमंत्री और भाजपा अध्यक्ष अमित शाह जी की कार्यशैली के बारे में आपका क्या विचार है ?**

अमित शाह जी कुशल संगठक हैं और कर्मठता ही उनकी सबसे बड़ी पहचान है। उन्हीं के कार्यकाल में भारतीय जनता पार्टी उच्च शिखर पर पहुँची है। जिस तरह पूरी निष्ठा से उन्होंने पूरे देश का भ्रमण कर देश भर में सभी कार्यकर्ताओं में चेतना जागृत की, उनके मनोबल को बढ़ाया, उन्हें प्रेरित किया वह अपने आप में बहुत बड़ी बात है। आज प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी और भाजपा अध्यक्ष अमित शाह जी की कर्मठता और कुशल संगठन रणनीति के कारण ही हमें इतना बड़ा जनादेश मिला है। हमें पूर्ण विश्वास है कि वह गृहमंत्री के रूप में भी बहुत अच्छा काम करेंगे।

■ **एक मुख्यमंत्री के रूप में आप गोवा के समावेशी विकास के लिए क्या कर रहे हैं ?**

जबसे मैंने मुख्यमंत्री की कुर्सी संभाली है तब से राज्य में प्रत्येक दृष्टि से व्यापक स्तर पर विकास कार्य चल रहे हैं। सिर्फ इंफ्रास्ट्रक्चर ही नहीं बल्कि ह्यूमन डेवलपमेंट भी हो रहा है। स्वर्गीय मनोहर पर्रिकर जी ने विकास की जो लकीर खींची थी हम उसी को आगे बढ़ा रहे हैं। हमारा उद्देश्य है कि प्रत्येक योजना का लाभ समाज के अंतिम व्यक्ति तक पहुँचे ताकि पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी का जो अंत्योदय का सपना था वह साकार हो सके। अंत्योदय के इन्हीं सिद्धांतों पर चलते हुए हमारी सरकार व्यापक स्तर पर तेजी से काम कर रही है।

■ **डॉक्टर से मुख्यमंत्री तक की यात्रा को कैसे देखते हैं ?**

बहुत पहले से ही मेरे मन में यह था कि मुझे देश और समाज के लिए कुछ करना है । डॉक्टर से मुख्यमंत्री तक का सफर बहुत अच्छा रहा है। अभी हमें गोवा जैसे राज्य में परिवर्तन लाने का अवसर मिला है तो हमारी कोशिश होगी कि मैं गोवा की खुशहाली के लिए , गोवा के विकास के लिए प्रत्येक स्तर पर काम करूँ।

■ **ऐसा सुनने में आया है कि काँग्रेस के कई विधायक भाजपा में आना चाहते हैं। इसके बारे में आपका क्या विचार है ?**

हमारी सरकार स्थायी है। इन चीजों पर हमारा ध्यान नहीं है। गोवा का विकास ही हमारे लिए प्राथमिकता है।

■ **सत्ता और संगठन में किस प्रकार का सम्बन्ध है ?**

मैं तो संगठन का कार्यकर्ता हूँ इसलिए संगठन में कार्य करके ऊपर आया हूँ । मैं मंडल स्तर पर युवा मोर्चा का कार्यकर्ता रह चुका हूँ, मैं युवा मोर्चा का प्रदेश अध्यक्ष रह चुका हूँ, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष भी रहा हूँ, पार्टी का जनरल सेक्रेटरी रहा हूँ, पार्टी का प्रवक्ता रहा हूँ। संगठन में कई दायित्वों का निर्वहन करके मुख्यमंत्री के पद तक पहुँचा हूँ। इसलिए मुझे लोगों से तालमेल बैठाने में कोई दिक्कत नहीं आयी, यही वजह है कि पार्टी से मेरा तालमेल बहुत अच्छा रहता है।

■ **आरएसएस से आपका बहुत अच्छा जुड़ाव है और आप संघ के सर्वाधिक पसंदीदा व्यक्ति हैं। अपनी राजनीतिक यात्रा में संघ की भूमिका को कितना महत्वपूर्ण मानते हैं ?**

मैं तो संघ का कार्यकर्ता हूँ तो जाहिर तौर पर संघ की ही शिक्षा से ही राष्ट्र सेवा

का विचार मन – मस्तिष्क में जागृत हुआ। मेरी राजनीतिक यात्रा में संघ की महती भूमिका है। संघ के माध्यम से ही राष्ट्र और समाज के लिए कुछ करने का भाव जन्म लिया। मैं संघ की विभिन्न शाखाओं के साथ हमेशा काम करते आया हूँ और मुझे उसे आगे बढ़ाने और उसके साथ कार्य करने में बहुत आनंद आता है।

■ **आपकी पत्नी सुलक्षणा जी गोवा भाजपा की महिला मोर्चा की अध्यक्ष हैं। उनकी लीडरशिप को कैसे देखते हैं ?**

मैं मुख्यमंत्री हूँ इसलिए वो महिला मोर्चा की अध्यक्ष नहीं हैं, वो आज जो भी हैं अपनी क्षमता, पात्रता और योग्यता की वजह से हैं। उनका स्वयं का सांगठनिक दायित्व है, पहले भी वह पार्टी में जनरल सेक्रेटरी रह चुकी हैं। पार्टी को उनका काम पसंद आया, इसलिए उन्हें अध्यक्ष बनाया। वह अपने स्तर पर अच्छा कार्य भी कर रही हैं।

◆◆◆

घरेलू बिक्री के मामले में अल्केम ने 750 से अधिक ब्रांडों के विस्तृत पोर्टफोलियो के साथ सभी प्रमुख चिकित्सीय खंडों और एक मजबूत अखिल भारतीय विक्रय और वितरण नेटवर्क को कवर करते हुए भारत की शीर्ष 5 दवा कंपनियों की सूची में विशेष स्थान प्राप्त किया है।

– आलोक रंजन तिवारी

अल्केम लैबोरेट्रीज लिमिटेड का मुख्यालय

आज के आईने में
अल्केम लैबोरेट्रीज लिमिटेड

वैश्विक परिचालन की दृष्टि से अल्केम लैबोरेट्रीज लिमिटेड भारत की सुप्रसिद्ध फार्मा कंपनी है जो फार्मास्यूटिकल और न्यूट्रास्यूटिकल उत्पादों के विकास, विनिर्माण और बिक्री के क्षेत्र में विशेषज्ञता के साथ काम करती है। वर्ष 1973 में स्थापित इस कंपनी के द्वारा उच्च गुणवत्तापूर्ण ब्रांडेड जेनरिक्स, सक्रिय दवा सामग्री और न्यूट्रास्यूटिकल का उत्पादन किया जाता है। इसके साथ ही इन उत्पादों का विपणन विश्व के लगभग 50 से अधिक देशों में किया जाता है। घरेलू बिक्री के मामले में अल्केम ने 750 से अधिक ब्रांडों के विस्तृत पोर्टफोलियो के साथ सभी प्रमुख चिकित्सीय खंडों और एक मजबूत अखिल भारतीय विक्रय और वितरण नेटवर्क को कवर करते हुए भारत की शीर्ष 5 दवा कंपनियों की सूची में विशेष स्थान प्राप्त किया है। अल्केम ने 10 वर्षों से भी अधिक समय तक भारत का नंबर – 1 एंटी इन्फेक्टिव कंपनी का भी दर्जा प्राप्त किया था। अल्केम लैबोरेट्रीज लिमिटेड घरेलू बाजार में जबरदस्त पहुँच होने के अलावा प्रमुख वैश्विक बाजार अमेरिका के साथ – साथ विश्व के 50 से अधिक देशों में अपनी उपस्थिति दर्ज करा चुकी है। वित्त वर्ष 2018 में अपने ग्लोबल बिजनेस के माध्यम से अल्केम ने कंपनी के सम्पूर्ण राजस्व में लगभग 28 प्रतिशत का योगदान दिया था और कंपनी के वित्तीय परिचालन के सन्दर्भ में यह महत्वपूर्ण विषय है। अल्केम लैबोरेट्रीज लिमिटेड के पास भारत में 19 विनिर्माण केंद्र हैं, जबकि अन्य 2 विनिर्माण केंद्र अमेरिका में हैं। यूएस एफडीए, विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ), एमएचआरए (यूके), टीजीए (ऑस्ट्रेलिया),एएनवीआईएसए(ब्राजील) और एमसीसी (दक्षिण अफ्रीका)सहित अग्रणी नियामक प्राधिकरणों द्वारा निर्धारित सीजीएमपी दिशानिर्देशों के अनुसार अल्केम की विनिर्माण सुविधाओं का निरीक्षण और ऑडिट किया जाता है।

कर्मयोगी एवं उदारमना व्यक्तित्व
बी.एन.सिंह

बी.एन.सिंह
कार्यकारी अध्यक्ष
अल्केम लैबोरेट्रीज लिमिटेड

बी. एन. सिंह 79 वर्ष की उम्र में भी कंपनी के मुख्यालय अल्केम हाउस में नियमित बैठते हैं और कंपनी के चेयरमैन के रूप में सक्रियता के साथ काम करते हैं। इन्हीं विशेषताओं की वजह से यदि बी. एन . सिंह को एक कर्मयोगी कहा जाए तो उसमें कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी। भारतीय फार्मा जगत में लगभग 4 दशकों का शानदार अनुभव रखने वाले बी. एन. सिंह सादा जीवन - उच्च विचार के सिद्धांतों का पालन करते हैं।

जीवन के किसी भी क्षेत्र में सफलता का मूलमंत्र व्यक्ति की दृढ़ इच्छाशक्ति, अटूट आत्मविश्वास, कर्तव्य परायणता और एकनिष्ठ प्रयास है। अन्य बातें समान होने पर भी अनेक व्यक्तियों में वही सफल होता है जिसकी इच्छाशक्ति अत्यधिक प्रबल होती है। सफलता का शानदार इतिहास लिखने वाले सभी व्यक्तियों ने इसी गुण के कारण महान सफलताएँ अर्जित कीं। उनमें भले ही अन्य गुण न रहे हों, चाहे उनमें कुछ दुर्बलताएँ भी क्यों न रही हों परंतु अटूट दृढ़ निश्चय एवं दृढ़ इच्छाशक्ति द्वारा वे भीषण बाधाओं के बीच भी निरंतर संघर्षशील रहे और अंतत: उन्नति के महान शिखर पर आरूढ़ हुए। कुछ ऐसे ही औद्योगिक उन्नति के शिखर पर आरूढ़ हैं अल्केम लैबोरेट्रीज लिमिटेड के कार्यकारी चेयरमैन बी. एन. सिंह। बी. एन. सिंह एक सफल और कुशल उद्योगपति के रूप में अत्यंत ही सरल सहज, विनम्र, ईमानदार, दूरदर्शी और कर्मठ व्यक्तित्व के धनी हैं। आपका व्यक्तित्व ऐसा दिव्य प्रकाश है जिसके मूल में उत्कृष्ट चिंतन और सजल संवेदना है, विचारों की अलौकिक आभा है। आपके व्यक्तित्व में स्वतंत्र सत्ता, आत्म योग्यता, प्रभाव उत्पादकता, श्रेष्ठता व उत्कृष्ट चरित्र एवं चिंतन का सुंदर समावेश है। बी. एन . सिंह कहते हैं कि किसी भी क्षेत्र में सफलता प्राप्त करने के लिए पूरी तैयारी करना आवश्यक है। इसके लिए जरूरी है उद्देश्य, सिद्धांत, योजना, अभ्यास, सतत प्रयास, धैर्य और गर्व। इसी से पूरी तैयारी होती है। अवसरों को पहचानने में अयोग्यता, डर, अनुशासन की कमी, कमजोर स्वाभिमान, ज्ञान का अभाव, भाग्यवादी दृष्टिकोण और साहस का अभाव भी असफलता के कारणों में आते हैं। इन कारणों को दूर करके ही सफलता का सौभाग्य प्राप्त किया जा सकता है।

बी. एन. सिंह 79 वर्ष की उम्र में भी कंपनी के मुख्यालय अल्केम हाउस में नियमित बैठते हैं और कंपनी के चेयरमैन के रूप में सक्रियता के साथ काम करते हैं। इन्हीं विशेषताओं की वजह से यदि बी. एन. सिंह को एक कर्मयोगी कहा जाए तो उसमें कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी। भारतीय फार्मा जगत में लगभग 4 दशकों का शानदार अनुभव रखने वाले बी. एन. सिंह सादा जीवन – उच्च विचार के सिद्धांतों का पालन करते हैं। यूँ तो बी. एन. सिंह भी कंपनी के सह संस्थापक हैं लेकिन बातचीत करने के दौरान वह बहुत विनम्रता और आदर के साथ कहते हैं कि सब कुछ तो बड़े भाई साहब ने किया, हम तो बस उनके साथ रहे। बी.एन. सिंह इंडियन ड्रग मैन्युफैक्चरर एसोसिएशन के अध्यक्ष भी रह चुके हैं और आपको फार्मा जगत में विशिष्ट योगदान देने के लिए कई पुरस्कार और सम्मान भी मिले हैं। औद्योगिक कार्यों के साथ- साथ सामाजिक कार्यों में भी अपनी सहयोगपरक भूमिका निभाने वाले कर्मयोगी बी. एन. सिंह एक संवेदनशील एवं उदारमना व्यक्तित्व के परिचायक हैं।

बी.एन.सिंह
कार्यकारी अध्यक्ष
अल्केम लैबोरेट्रीज लिमिटेड

अल्केम को हम पहले स्थान पर देखना चाहते हैं

– बी.एन.सिंह

अल्केम लैबोरेट्रीज लिमिटेड के कार्यकारी अध्यक्ष बी. एन. सिंह ने अभ्युदय वात्सल्यम के प्रधान संपादक आलोक रंजन तिवारी से फार्मा जगत, अर्थव्यवस्था, सीएसआर और अल्केम कंपनी की स्थापना और विकास के सन्दर्भ में विस्तृत बातचीत की। प्रस्तुत है बातचीत के प्रमुख अंश –

▸▸ अपनी इस पूरी औद्योगिक यात्रा और अल्केम की स्थापना के बारे में कुछ बताएँ ?

इस कंपनी की स्थापना वर्ष 1973 में हुई और मेरे बड़े भाई श्री सम्प्रदा सिंह जी ने ही इस कंपनी को स्थापित किया था। कंपनी शुरू करने से पहले भैया के पास दो विकल्प थे – या तो घर पर रहकर खेती करें अथवा नौकरी करें। बिहार सरकार के सचिवालय में उन्हें नौकरी मिली तो वहां उन्होंने काम किया। एक महीने में बेचैन होकर उन्होंने नौकरी छोड़ दी। उसके बाद हाई स्कूल के शिक्षक बने तो वहां थोड़ा मन लगा। लेकिन उनके मन में यह था कि कोई अपना काम करें भले ही छोटा हो। यह बात उनके मन में हमेशा बनी रहती थी। समस्या यह थी कि पूँजी की कमी रहती थी। जो पैसा खेती से निकलता था तो वह घर – परिवार को चलाना, बहनों की शादी – विवाह करना , हमारी पढ़ाई – इन सब चीजों में खर्च हो जाता था। उन्होंने फार्मा कंपनी में जानकारी प्राप्त करने के लिए नौकरी करना शुरू किया । हमारे एक सम्बन्धी की कंपनी थी,

दवा का होलसेल शुरू किया , रिटेल शुरू किया। एक मैनेजर के रूप में काम करना शुरू किया, वहां 500 रुपये प्रति महीना वेतन मिलता था। उसके बाद उन्होंने उस व्यवसाय को व्यापक स्तर पर आगे बढ़ाया और पूरे बिहार में नंबर 1 बनाया। उसके बाद भाई साहब ने अपने उन सम्बन्धी महोदय से कहा कि हमें भी हिस्सा दीजिये तो हम और अच्छा प्रदर्शन करेंगे। वो लोग उसके लिए तैयार नहीं हुए। उसके बाद भाई साहब के मित्रों ने उन्हें सलाह दिया कि बैंक से लोन लेकर कुछ अपना शुरू कीजिये। हम लोग मगध वासी हैं तो उन्होंने मगध फार्मा नामक डिस्ट्रीब्यूशन कंपनी की शुरुआत की। तब तक मैं पढ़ाई ख़त्म कर प्राध्यापक बन चुका था। मैंने राजनीति शास्त्र से एम. ए. तक की पढ़ाई की है। मेरी रूचि प्राध्यापक बनने की थी और वहां मैंने काम भी किया। लेकिन भाई साहब का कहना था कि तुम्हें हमारे साथ रहना है, आगे देखो क्या होता है। इसलिए मैं हमेशा कहता हूँ कि वह दूरदृष्टा हैं। मगध फार्मा को वहां उन्होंने नंबर 1 डिस्ट्रीब्यूशन हाउस बनाया, एक और फार्मा कंपनी थी – नालंदा फार्मा। उसके बाद जब वहां बड़े कंपनियों के मैनेजिंग डायरेक्टर, मैनेजर और सेल्स मैनेजर आते थे तो उन्होंने देखा कि इन लोगों में ताकत है कंपनी को आगे ले जाने में। फिर उन्हीं लोगों ने सलाह दिया कि आप लोग अपनी कंपनी बनाइये। फिर वही 1973 में अल्केम की स्थापना हुई। हम लोग मुंबई आये, यहाँ होटल हेरिटेज में सामान रखा। यहाँ आने पर लगा कि कहाँ आ गए। बस में घूमना है , टैक्सी के लिए पैसे नहीं। 5 लाख की पूँजी बैंक से लेकर आये थे। हम लोगों ने यह तय किया था कि कंपनी के पैसे का प्रयोग अपने कार्यों में नहीं करना है। हम लोगों ने यह विचार किया कि कंपनी के लिए क्या – क्या प्रोडक्ट बनाना है , क्या लिटरेचर बनाना है । उसमें बड़ी – बड़ी बहुराष्ट्रीय कंपनियों के वरिष्ठ प्रबंधकों की मदद मिली और जिस कार्य में लगन हो, निष्ठा हो, अथक परिश्रम हो तो सफलता अवश्य मिलती है। काम में लगे रहे तो किसी ने पूछा कि बासुदेव सिंह जी, एक करोड़ का सेल हो जायेगा? यह मेरे लिए कठिन प्रश्न था। मैंने कहा कि शायद अगले साल हो जाए।

एक और बात बताता हूँ आपको। मेरे एक मित्र थे पटना में, उनकी ग्रैंड मेडिको नाम से एक दुकान थी। उन्होंने हमसे कहा कि कहाँ चले गए हो। यहाँ एम्बेस्डर कार में घूमते थे, वहां लोकल ट्रेन और टैक्सी में घूम रहे हो, अपनी गाड़ी भी नहीं है। वहां हमने उस समय 26 हजार में नया एम्बेस्डर ख़रीदा था। कहने का मतलब यह है कि कठिनाइयाँ तो आती हैं लेकिन यदि उन कठिनाइयों का हल निकाल लिया जाए तो सफलता अवश्य मिलती है और उसके लिए नीयत अच्छी होनी चाहिए। होता क्या है कि बहुत लोग आगे तो बढ़ते हैं लेकिन नीयत उनकी अच्छी नहीं होती। जब हमने अल्केम की स्थापना की तो हमने इस बात की परवाह नहीं की कि हमें लाभ कितना हो रहा है। हमने हमेशा से ही दवा की गुणवत्ता पर ध्यान दिया है। पहले कालीना में 5000 स्क्वायर फ़ीट जमीन किराये पर मिल गई , इंडो फार्मा के कुछ मित्र मिल गए उन्होंने मदद किया। मुंबई में तो सबसे बड़ी दिक्कत जगह की है। हमारे ही एक मित्र थे सदाशिव वालंजु, 82 साल के हैं। वह अभी भी इसी कंपनी के एम्प्लॉयी हैं। उन्होंने हमें अपना एक फ़्लैट 900 रुपये प्रति महीने के हिसाब से किराये पर दे दिया। वह फ़्लैट प्रभादेवी में था, 2 बीएचके। उसमें रहने लगे तो सहूलियत होने लगी। फिर हमने यहाँ एक सेकण्ड हैण्ड एम्बेस्डर कार ख़रीदा । उसके बाद हम यहाँ स्थापित हो गए तो अच्छा काम करते गए, आगे बढ़ते गए।

▸▸ एल्कम की विश्वव्यापी पहुँच के बारे में कुछ बताएँ और वर्तमान में कितने लोग इस कंपनी में कार्यरत हैं ?

इस कंपनी के द्वारा उच्च गुणवत्तापूर्ण ब्रांडेड जेनरिक्स, सक्रिय दवा सामग्री और न्यूट्रास्यूटिकल का उत्पादन किया जाता है। इसके साथ ही इन उत्पादों का विपणन विश्व के लगभग 50 से अधिक देशों में किया जाता है। अल्केम लैबोरेट्रीज लिमिटेड के पास भारत में 19 विनिर्माण केंद्र हैं, जबकि अन्य 2 विनिर्माण केंद्र अमेरिका में हैं। वर्तमान में लगभग 16 हजार लोग इस कंपनी में कार्य करते हैं।

▸▸ आप देश की सुप्रसिद्ध फार्मा कंपनी के चेयरमैन हैं। भविष्य में अल्केम को कहाँ देखना चाहते हैं ?

हमारे भाई साहब की इच्छा है कि अल्केम को पहले स्थान पर पहुँचाया जाए। इसलिए अल्केम को हम पहले पायदान पर देखना चाहते हैं लेकिन यह एक कठिन कार्य है।

▸▸ फार्मा सेक्टर वर्तमान में किन स्थितियों में है और इस सेक्टर की वर्तमान चुनौतियाँ क्या हैं ?

फार्मा सेक्टरअच्छी स्थिति में है। चुनौतियाँ तो हर एक व्यवसाय में आती रहती हैं।

▸▸ आपके बड़े भाई और इस कंपनी के चेयरमैन इमेरिटस सम्प्रदा सिंह जी के व्यक्तित्व के बारे में आपका क्या विचार है ?

बड़े भाई साहब दूरदर्शितापूर्ण व्यक्तित्व के परिचायक हैं , मेहनती हैं। उनमें निष्ठा है, कार्य के प्रति लगन है। सरलता , सहजता और विनम्रता ही उनकी सबसे बड़ी पहचान है। मैं उन्हें अपना आदर्श मानता हूँ। हमेशा उन्हीं के बताये रास्ते पर चलता आ रहा हूँ।

▸▸ सीएसआर के तहत आप देश और समाज के लिए क्या कर रहे हैं ?

कॉर्पोरेट सोशल रेस्पॉन्सिबिलिटी के अंतर्गत अल्केम फाउंडेशन का संचालन किया जाता है। इस फाउंडेशन के माध्यम से हम शिक्षा , स्वास्थ्य, स्वच्छता और जल उपलब्धता के क्षेत्र में काम करते हैं। अल्केम फाउंडेशन के माध्यम से देश के कई क्षेत्रों में चिकित्सा शिविर भी लगाए जाते हैं, एम्बुलेंस की सुविधा भी कई क्षेत्रों में प्रदान की जाती है। एक एनजीओ के साथ अल्केम फाउंडेशन कैंसर के इलाज के लिए विशेष कार्य करता है टाटा मेमोरियल हॉस्पिटल को हम काफी सहयोग देते हैं , क्योंकि कैंसर के मरीजों को देखकर बड़ी चिंता होती है। हमारी कंपनी मिर्गी के इलाज के लिए धन देती है और समाज के वंचित वर्गों के मूक–बधिर बच्चों के इलाज के लिए आई हियर फाउंडेशन को भी सहयोग देती है। हम कई विद्यालयों के आधुनिकीकरण के लिए आर्थिक सहायता भी देते हैं। इसी तरह बहुत सारे सामाजिक कार्य अल्केम फाउंडेशन के अंतर्गत किये जाते हैं।

▸▸ देश के प्रमुख उद्योगपति के रूप में आप वर्तमान भारतीय अर्थव्यवस्था को कैसे देख रहे हैं ?

भारतीय अर्थव्यवस्था बहुत समृद्धशाली स्थिति में है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी के सुयोग्य नेतृत्व में देश आगे बढ़ रहा है। यहाँ उद्योग का विकास होगा। इसका कारण यह है कि हमारे यहाँ एक स्थायी सरकार है और स्थायी सरकार को ठोस निर्णय लेने में कोई समस्या नहीं होती। प्रधानमंत्री जी भी बहुत अच्छा काम कर रहे हैं। गरीबी हटाने के लिए, घर – घर में गैस कनेक्शन पहुँचाने के लिए , बिजली कनेक्शन उपलब्ध कराने जैसी अन्य चीजों के लिए उनका प्रयास बहुत सफल साबित हुआ है।

▸▸ आज की युवा पीढ़ी के लिए आप क्या सन्देश देना चाहेंगे ?

इस देश का उज्जवल भविष्य युवाओं के हाथों में है। आज के युवा के पास विभिन्न प्रकार के संसाधनों की उपलब्धता है। युवाओं को अपनी पात्रता और योग्यता का सदुपयोग करना चाहिए ताकि वे जीवन में कुछ अच्छा कर पाने में सफल हों।

◆◆◆

केवल हांडा
अध्यक्ष
यूनियन बैंक ऑफ इंडिया

बैंकों के विलय को अच्छा कदम मानता हूँ – केवल हांडा

यूनियन बैंक ऑफ़ इंडिया के अध्यक्ष केवल हांडा किसी भी पहचान के मोहताज नहीं हैं। यूनियन बैंक का अध्यक्ष बनने से पहले आप फाइजर लिमिटेड, इंडिया के प्रबंध निदेशक थे, इससे पूर्व आपने फाइजर लिमिटेड के कार्यपालक निदेशक-वित्त तथा वर्ष 2009 से 2012 तक वाईथ लिमिटेड के प्रबंध निदेशक के रूप में अपनी उल्लेखनीय सेवाएं प्रदान की हैं। आपके नेतृत्व में कार्यान्वित नई पहलों और नवोन्मेषी रणनीतियों की वजह से फाइजर इंडिया को भारत की शीर्ष 10 फार्मास्युटिकल कंपनियों में विशेष स्थान प्राप्त हुआ। आपने हर चुनौती का निरंतर सामना किया, फिर चाहे वह ब्रांडेड जेनेरिक क्षेत्र में फाइजर को भारत की प्रथम बहुराष्ट्रीय कंपनी के रूप में स्थापित करना हो या अपनी पहुँच बढ़ाने हेतु सरकार के साथ विशिष्ट साझेदारी की संभावनाओं का पता लगाना हो। हांडा को वित्त, वाणिज्य, रणनीति, कारोबार विकास, विलय और अधिग्रहण, बैंकिंग, कॉर्पोरेट मामलों का सुदीर्घ अनुभव है। आपको श्रेडर स्कॉविल, हिंदुस्तान लीवर लिमिटेड (एचएलएल), विद्युत ब्लेड और राज्य औद्योगिक निवेश निगम, महाराष्ट्र (एसआईसीओएम) जैसी कंपनियों में इंजीनियरिंग, उपभोक्ता और परियोजना वित्त जैसे क्षेत्रों का भी शानदार अनुभव है। आप एक योग्य प्रबंध लेखाकार एवं कंपनी सेक्रेटरी हैं। आपने हावर्ड विश्वविद्यालय से फाइजर लीडरशिप डेवलपमेंट प्रोग्राम एवं आईआईएम, अहमदाबाद से सीनियर मैनेजमेंट डेवलपमेंट प्रोग्राम पूर्ण किया है। इसके साथ ही आपने कोलंबिया बिजनेस स्कूल, न्यूयॉर्क से मार्केटिंग स्ट्रेटेजी में सर्टिफिकेट कोर्स भी किया है। अभ्युदय वात्सल्यम् पत्रिका से हुई विशेष बातचीत में यूनियन बैंक ऑफ इंडिया के चेयरमैन केवल हांडा ने भारतीय अर्थव्यवस्था और बैंकिंग जगत से सम्बंधित विभिन्न विषयों पर विस्तृत बातचीत की। प्रस्तुत है बातचीत के प्रमुख अंश –

आप यूनियन बैंक ऑफ इण्डिया के चेयरमैन हैं। इस बैंक की गति - प्रगति के बारे में कुछ बताएँ ?

यूनियन बैंक ने भारत की आर्थिक संवृद्धि में अत्यन्त सक्रिय भूमिका निभाई है और इसने अर्थव्यवस्था के विविध सेक्टरों (क्षेत्रों) की आवश्यकताओं के लिए साख सुविधाओं का विस्तार किया है। उद्योग, निर्यात, व्यापार, कृषि व संरचना और व्यक्तिगत संवर्ग ऐसे सेक्टर हैं, जिनमें बैंक ने आर्थिक संवृद्धि को प्रेरित करने और परिसम्पित्तियों के एक सुविविधीकृत पोर्टफोलियो से लाभार्जन के लिए साख सुविधाएं प्रदान की हैं। ग्राहकों को दी जा रही सुविधाओं की दृष्टि से यूनियन बैंक एक उत्कृष्ट बैंकिंग प्रणाली को मूर्त रूप देता है। तकनीकी मोर्चे पर बैंक ने आरंभ में ही पहल करते हुए अपनी शत - प्रतिशत (100%) शाखाओं को कम्प्यूटरीकृत किया है। बैंक ने शाखाओं के बीच सम्पर्क सुविधा के साथ कोर बैंकिंग समाधान भी लागू किया है। तकनीकी सुधारों को अपनाकर बैंक को लागतों में पर्याप्त कमी करने में सफलता मिली है,जबकि इसके साथ ही विपुल संभावनाएं प्रस्तुत करने वाले प्रतिस्पर्धी परिवेश में कारोबार की अभूतपूर्व ढंग से बढ़ती मात्रा को संभालने के लिए आवश्यक क्षमता सृजन भी किया जा सका है। हमारे यहाँ अधिकांश कर्मचारी युवा हैं और उनमें आगे बढ़ने की एक भूख है। अब युवाओं के मन में अपने काम की गुणवत्ता और उस कार्य के बदले मिलने वाली सैलरी के प्रति एक सकारात्मक भावना जन्म लेने लगी है। 31 मार्च, 2019 तक की डेटा के अनुसार यूनियन बैंक के पास लगभग 4292 शाखाएं हैं। यूनियन बैंक लगभग 7.3 करोड़ ग्राहकों को बैंकिंग सुविधाएँ प्रदान करता है और लगभग 36 हजार कर्मचारी इस बैंक में काम करते हैं।

भारतीय बैंकिंग जगत की वर्तमान स्थिति के बारे में आपका क्या विचार है ?

आज बैंकिंग सेक्टर की जरूरतों को सार्वजनिक क्षेत्र के अंतर्गत आने वाले बैंकों द्वारा व्यापक स्तर पर पूरा किया जा रहा है और यह वास्तविकता भी है। आज सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक बड़े पैमाने पर कॉर्पोरेट लोन और अन्य बड़े लोन देने में अपनी भागीदारी सुनिश्चित करते हैं, जबकि अन्य बैंक चुनिंदा मामलों में ऐसा करते हैं। पब्लिक सेक्टर के बैंकों ने कॉर्पोरेट ग्रोथ में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है और एनपीए बढ़ने का सबसे बड़ा कारण भी यही है। प्राइवेट बैंक इस मामले में सतर्कता बरतते हैं। वे हाउसिंग और रिटेल जैसे क्षेत्रों के लिए लोन उपलब्ध कराते हैं। देश के विकास में बड़े प्रोजेक्ट्स महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। आधारिक संरचना, विद्युत, भवन निर्माण और कृषि जैसे परियोजनाओं को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता। इस तरह की परियोजनाओं को आर्थिक सहयोग उपलब्ध कराने में सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक ही सबसे आगे हैं। जन - धन खाता खुलवाने, कृषि लोन देने और 59 मिनट में एमएसएमई लोन देने जैसे अन्य मामलों में सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों का प्रदर्शन सबसे अच्छा रहा है।

यूनियन बैंक के चेयरमैन बनने से पहले आप फाइजर इण्डिया लिमिटेड के एमडी थे और आप कई अन्य कंपनियों के बोर्ड में हैं। यहाँ आने पर आप किस तरह का परिवर्तन महसूस करते हैं ?

Union Bank of India
Good people to bank with

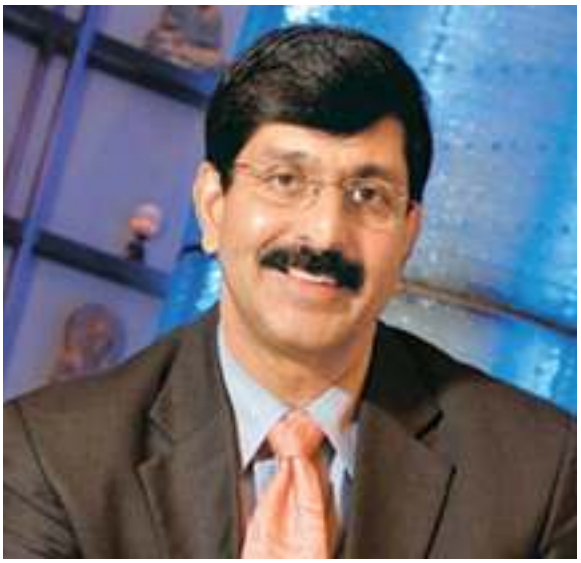

कई लोग मुझसे यह सवाल करते हैं कि आप बहुराष्ट्रीय कंपनी से आये हैं। लेकिन मैं आपको बता दूँ कि मैं इसके पहले भी राज्य सरकार के अंतर्गत आने वाले उपक्रम में काम कर चुका हूँ। मैं ऐसे - ऐसे जगह गया हूँ जहाँ कोई एमएनसी वाला या बैंक वाला भी नहीं जाता। मैंने चंद्रपुर में जाकर मिनी स्टील प्लांट सेटअप किया है। मैंने महाराष्ट्र सरकार के अंतर्गत आने वाली सिकॉम के लिए काम किया है। एक बार मुझे कोंकण में जाना था , वहां हमने एक मिनी स्टील प्लांट के लिए एक व्यक्ति को लोन दिया था। उस दौरान भीषण बारिश हो रही थी। मैं सम्बंधित व्यक्ति को फोन करता तो वह बहाना बनाता तो मुझे उसकी नीयत पर शक हुआ। हमने सोचा कि चलकर देखते हैं क्या प्रगति है। मैं जब प्रोजेक्ट एरिया में पहुंचा तो जबरदस्त बारिश रुकने का नाम नहीं ले रही थी और वहां तक जाने के लिए नदी क्रॉस करना होता था। नदी भी उफान पर थी। हमने उस व्यक्ति से पूछा कि कैसे किया जाए तो उसने कहा कि वापस लौट जाइये , बारिश की वजह से आप नदी नहीं पार कर सकते। हम वहां 2-3 दिन तक रुके रहे, उसके बाद जब पानी कम हुआ तो हम वहां गए। वहां जाने पर देखा कि कोई प्लांट ही नहीं लगी थी। तो हमारे पास पब्लिक सेक्टर के मामले में काफी अनुभव है (हँसते हुए)। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि आप अपने काम को कितना प्रोफेशनली करते हैं। आपके काम में नैतिक मानदंड स्पष्ट होना चाहिए। एक अन्य चीज जो महत्वपूर्ण है वह यह है कि आपके पास जो लोग हैं, उन्हीं के साथ समन्वय बनाकर आपको काम करना है।

पब्लिक सेक्टर बैंकों में इनोवेशन की प्रक्रिया को कैसे शुरू किया जा सकता है ?

लोगों को लगता है कि इनोवेशन बड़े लेवल पर होता है लेकिन मेरा मानना है कि इनोवेशन प्रत्येक स्तर पर होता है।

नए प्रोडक्ट्स लाना, नई तकनीक लाना और नए – नए संसाधनों को स्थापित करना भी इनोवेशन है। एक व्यक्ति ने एक क्षेत्र में इनोवेशन कर दिया उतना ही पर्याप्त नहीं है। इनोवेशन हर मामले में होना चाहिए। हम अपने बैंक के माध्यम से 40-50 करोड़ नए – नए स्टार्टअप्स और इनोवेशन के लिए अलग से फण्ड बनाये हैं और जो हमें उचित लगता है हम उसे प्रोत्साहित करते हैं। हमारे आलावा एसबीआई को छोड़कर कोई भी अन्य पब्लिक सेक्टर का बैंक ऐसा नहीं करता।

■ **आप बैंकिंग जगत में इतने बड़े पद पर आसीन हैं। भारत की बैंकिंग प्रणाली को समृद्ध बनाने के लिए क्या किया जाना चाहिए ?**

इसे पूँजी के माध्यम से समृद्ध बनाया जा सकता है। अभी जो 15-16 % एनपीए बढ़ा था उसी से सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों की दुर्दशा हुई थी। अब सवाल यह है कि पूँजी कहाँ से आए? सरकार पूँजी दे सकती है लेकिन उस पूँजी से ही आपकी जरूरत नहीं ख़त्म होगी। इसके लिए चाहिए की बैंकों को लॉन्ग टर्म बॉन्ड जारी करने के अधिकार दे दिए जाएँ। इससे यह होगा कि पब्लिक सेक्टर बैंकों के पास लॉन्ग टर्म कैपिटल आ जायेगा। दूसरा महत्वपूर्ण तरीका है बैंकों का विलय। विलय करने पर यह सुनिश्चित कर लिया जाए कि विलय के लिए पूँजी की आवश्यकता नहीं पड़ेगी, बल्कि विलय होने के बाद सम्बंधित बैंकों के पास जो पूँजी है उसी से काम किया जायेगा।

■ **पीएसयू बैंकों के कंसोलिडेशन के बारे में आपका क्या विचार है ?**

हम सभी ने महसूस किया है कि बैंकों के संचालन में लागत की तुलना में लाभ कम है। ऐसे में बैंकों के सञ्चालन में खर्च हो रहे लागत को कम करने के लिए यही बेहतर विकल्प है। देश की बैंकिंग व्यवस्था के सामने एनपीए सबसे बड़ी चुनौती है। इसलिए मैं बैंकों के विलय को अच्छा कदम मानता हूँ।

■ **एमएसएमई सेक्टर के ग्रोथ के लिए किस प्रकार के कदम उठाने चाहिए ?**

सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम (एमएसएमई) किसी भी देश के आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, वह चाहे अमेरिका हो या जर्मनी । इसमें भारत भी शामिल है। जीडीपी भारत की अर्थव्यवस्था के लिए महत्वपूर्ण है, क्योंकि ये सकल घरेलू उत्पाद यानी जीडीपी में अहम योगदान देते हैं और औद्योगिक व सेवा क्षेत्रों में बड़ी संख्या में लोगों को रोजगार देते हैं। जर्मनी के परिप्रेक्ष्य में बात करते हैं। जर्मनी मिटलस्टैंड को वहां का एसएमई कहा जाता है। जर्मन मिटलस्टैंड जर्मनी में उत्पादन करता है और पूरे विश्व को आपूर्ति करता है। इस क्षेत्र को वहां की सरकार बहुत सपोर्ट भी करती है। इसका एक उदाहरण देता हूँ – वहां के एसएमई ने संयंत्र या प्रोजेक्ट्स स्थापित किये थे वो तकनीक के मामले में पुराने हो गए थे। उनके पास डिजिटल मशीन नहीं था, सब पुराने मशीन थे। वहां की सरकार ने मिटलस्टैंड को आधुनिक बनाने के लिए एक फंड बनाया और कोई भी एसएमई उस फण्ड का प्रयोग कर खुद को आधुनिक बना सकता है। वहां की सरकार ने फंड ही नहीं बनाया बल्कि विशेषज्ञ लोगों की एक टीम भी बनायी जो एसएमई को आधुनिक बनाने के लिए सलाह/परामर्श भी देती थी। इसलिए वहां की एसएमई वैश्विक स्तर पर चमक गई और वे पब्लिक सेक्टर को भी टक्कर देने लग गए। आज भारत को भी इसी तरह के पहल की आवश्यकता है ताकि हम रोजगार उत्पन्न कर सकें, मार्केट को समृद्ध बना सकें। इससे अर्थव्यवस्था को मजबूती मिलेगी।

■ **इस समय चल रहे ट्रेड वार के असर को कैसा देखते हैं ? भारतीय अर्थव्यवस्था पर इसका क्या कुछ प्रभाव पड़ेगा ?**

इस ट्रेड वार में भारत को लाभ है। अमेरिका ने हम पर टैरिफ लगा दिया, हमने उन पर लगा दिया और अंत में यदि अमेरिका ने चीन से सामान खरीदना बंद कर दिया तो हम एक बेहतर विकल्प के रूप में खुद को स्थापित कर सकते हैं। यह एमएसएमई से ही संभव हो सकता है और सरकार को चाहिए कि वह एमएसएमई को सपोर्ट करे। यह अपने आप में बड़ा अवसर है।

◆◆◆

With Best Compliments
From
A Well Wisher

DESAI HARMONY

WADALA (W)

MAHA RERA NO.P51900009455

Follow Us On

Swimming Pool

Ample Car Parking

Podium Garden

Health & Fitness Center

Luxurious 2, 3 & 4 BHK Apartments

Centrally located in the heart of the city (Wadala, West), Desai Harmony makes your life convenient as the best of the metropolis surrounds you. It's a two minutes drive from all the major infrastructure facilities and the most happening destinations of Mumbai. **Stay closer to life.**

Call :+91 9209206206 / +91 75061 18929 / +91 98198 51644

E : sales@sparkdevelopers.in | sms Spark Wadala to 56677

Our Projects At : Worli | Andheri | Ghatkopar | Vile-Parle

Site Address : Desai Harmony, G.D Ambekar Marg, Opp. Hanuman Industrial Estate, Near Dadar Workshop, Wadala, Mumbai - 400 031

Corp. Office : 102, Saroj Apartment, 1st Floor, N.P. Marg, Opp. Matunga Gujarati Club, King's Circle, Matunga, Mumbai – 400 019

SPARK DEVELOPERS
creating world for you

www.sparkdevelopers.in

Disclaimer: This advertisement is merely conceptual and is not a legal document. It cannot be treated as a part of final purchase agreement. All dimensions are approximate and subject to construction variances. The developer reserves sole rights to amend architectural specifications during development stages.

सुनील सिंह
चेयरमैन
समता सहकारी बैंक

डिजिटल बैंकिंग के माध्यम से बैंकिंग प्रणाली आसान हो गई है

– सुनील सिंह

समता सहकारी बैंक की स्थापना वर्ष 1983 में स्वर्गीय अमरनाथ सिंह के कुशल प्रयासों के माध्यम से हुई। बाद में उनकी मृत्यु हो गई तो उनके छोटे भाई स्वर्गीय निर्भय सिंह ने इस बैंक के सञ्चालन का दायित्व संभाला। स्व. निर्भय सिंह महाराष्ट्र के पूर्व मुख्यमंत्री वसंतदादा पाटिल के निजी सहायक थे और उनके बारे में कहा जाता है कि वह उत्तर भारतीयों के सबसे बड़े हितैषी थे। राजनीतिक दुनिया में होने के बावजूद भी वह कभी राजनीति का हिस्सा नहीं बने। लोग उन्हें अजातशत्रु कहते थे। वर्तमान में स्वर्गीय निर्भय सिंह के सुपुत्र सुनील सिंह इस बैंक के चेयरमैन हैं। सुनील सिंह अपनी क्षमता, पात्रता और योग्यता के माध्यम से इस बैंक का शानदार संचालन कर रहे हैं। आपके सुयोग्य नेतृत्व में समता सहकारी बैंक लिमिटेड का वित्तीय प्रदर्शन बेहद अच्छा साबित हुआ है। अभ्युदय वात्सल्यम् पत्रिका से हुई विशेष बातचीत में समता सहकारी बैंक लिमिटेड के चेयरमैन सुनील सिंह ने बैंक की शुरूआती यात्रा से लेकर बैंकिंग क्षेत्र के कई अन्य महत्वपूर्ण विषयों पर बातचीत की। प्रस्तुत है बातचीत के सम्पादित अंश –

● समता सहकारी बैंक की स्थापना कब और कैसे हुई ?

समता सहकारी बैंक की स्थापना वर्ष 1983 में हुई थी। मेरे बड़े पिता स्वर्गीय अमरनाथ सिंह जी ने इस बैंक की स्थापना की थी। वो एक ऐसा दौर था जब मुंबई में उत्तर भारतीयों को प्रताड़ित किया जाता था, जब उत्तर भारतीयों को बहुत हीनता की दृष्टि से देखा जाता था। ऐसे दौर में अमरनाथ जी ने बैंक की स्थापना कर उत्तर भारतीयों के सम्मान को बढ़ाने का काम किया था। अमरनाथ सिंह जी लोहिया विचार मंच से जुड़े थे और वह लोहिया जी के विचारों से बहुत प्रभावित भी थे। सांताक्रुज़, जुहू और विले पार्ले जैसे क्षेत्रों में हॉकर्स मार्केट का गठन उन्होंने ही किया था। वह हॉकर्स मार्केट यूनियन के अध्यक्ष थे और अध्यक्ष के रूप में अपनी बात सरकार

के सामने बेझिझक रखते थे। उन्होंने उस समय महसूस किया कि उत्तर भारतीयों को बैंकों के चक्कर में काफी परेशान होना पड़ता था, इसलिए उन्होंने कॉपरेटिव बैंक शुरू करने के बारे में विचार किया। मेरे पिता स्वर्गीय निर्भय सिंह जी महाराष्ट्र के बड़े नेता रहे वसंत दादा पाटिल के निजी सहायक थे। पिता जी ने यह बात वसंत दादा को बताया कि उनका इस तरह का एक विजन है। 1983 में महाराष्ट्र की सरकार ने को – ऑपरेटिव बैंकों को लाइसेंस देना बन्द कर दिया था। उस सन्दर्भ में वसंत दादा ने उनकी मदद की और परिणाम यह हुआ कि उनके प्रयासों से आखिरी लाइसेंस समता को मिला। बैंक को लाइसेंस तो मिल गया लेकिन कई लोग यह कहने लगे कि यह बैंक नहीं चल पायेगा। तरह – तरह की नकारात्मक बातें होने लगीं। जब इस बैंक की शुरुआत हुई तो उत्तर भारतीयों ने 10-20 रुपये से अपना खाता खोला था। हमने सोचा था कि आज 10 से शुरुवात हुई है तो आगे 20 - 40 से होगी। आज ऐसा हो गया है कि इस पूरे इलाके में किसी भी उत्तर भारतीय को कोई भी तकलीफ होती है तो वह बिना किसी हिचक के आ जाता है और अपनी जरुरत के हिसाब से उधार ले जाता है। धीरे – धीरे यहाँ हर एक प्रान्त के लोगों ने अपना खाता खोलना शुरू कर दिया। आज इस बैंक से कई उद्योगपति भी जुड़े हैं, उनका भी खाता यहाँ है। समता में लोगों का एक विश्वास है, यहाँ अपनापन है। इसलिए इस क्षेत्र के लोग हमारे पास ही आते हैं, जबकि कई पब्लिक सेक्टर और प्राइवेट सेक्टर के बैंक यहाँ खुले हैं।

● वर्तमान में समता की कितनी शाखाएँ हैं और इस बैंक में कितने कर्मचारी काम करते हैं ?

जब इस बैंक का उद्घाटन हुआ तब 7-8 कर्मचारी थे और आज 100 कर्मचारी हो गए हैं। वर्तमान में हमारे पास कुल 4 शाखाएँ हैं। समता बैंक की पहली शाखा वर्ष 1998 में बांद्रा में खुली थी जिसका उद्घाटन तत्कालीन पुलिस कमिश्नर एम. एन. सिंह, पूर्व पुलिस कमिश्नर सत्यपाल सिंह, सुप्रसिद्ध चित्रकार एम. एफ. हुसैन और फ़िल्मी दुनिया के कई प्रसिद्ध सितारों ने किया था। दूसरी शाखा ओशिवरा में खुली, उसका उद्घाटन महानायक अमिताभ बच्चन जी ने किया था। तीसरी शाखा मलाड में खुली, जिसका उद्घाटन अभिनेता गोविंदा और एम. एफ. हुसैन जैसे लोगों ने किया था।

● अपने पिता स्वर्गीय निर्भय सिंह के व्यक्तित्व के बारे में कुछ बताएँ ?

मेरे पिता निर्भय सिंह जी महाराष्ट्र के पूर्व मुख्यमंत्री स्वर्गीय वसंतदादा पाटिल जी के निजी सहायक थे। वह उस समय एलएलबी किये थे जब पढ़ाई हर मामले में कठिन होती थी। एक दौर ऐसा था कि जितने भी उत्तर भारतीय नेता हैं सबके गॉड फादर मेरे पिताजी ही थे, वो सबकी मदद करते थे। मेरे पिताजी का दायरा ऐसा था कि शरद पवार से लेकर संजय निरुपम, कृपाशंकर सिंह, विलासराव देशमुख जी सबको अच्छे से जानते थे। वह काँग्रेस, भाजपा और शिवसेना सभी पार्टियों के नेताओं से जुड़े थे और सबके साथ उनके अच्छे ताल्लुकात भी थे। पिताजी के राजनीतिक रिश्ते काफी अच्छे थे लेकिन ऊपरी तौर पर वो कभी राजनीति में प्रवेश नहीं किये। कभी कोई चुनाव नहीं लड़े। वह अजातशत्रु की तरह थे, उनकी किसी से कोई दुश्मनी नहीं रही। उनका नाम ही निर्भय था और सच में वह कभी किसी से डरे नहीं।

● सहकारी बैंकों के सञ्चालन में किस तरह की चुनौतियाँ आती हैं ?

चुनौतियां काफी बढ़ गई हैं क्योंकि पिछले 10 सालों में आरबीआई के मानदंड काफी बदल गए हैं। अब चाहे किसी भी क्षेत्र का बैंक हो , पब्लिक सेक्टर का हो, प्राइवेट सेक्टर का हो अथवा को – ऑपरेटिव हो, सभी बैंकों को समान रूप में कार्य करना होता है। हमारे यहाँ जब ऑडिट होता है तो एक ही सवाल सामने आता है कि कहीं आप किसी राजनेता से तो नहीं जुड़े हैं ? उनका यह सवाल पूछना लाजिमी है क्योंकि अधिकांश को – ऑ परेटिव बैंकों में राजनेता ही होते हैं। हम उन्हें कहते हैं कि हमारा बैलेंस शीट आपके सामने है, आप देख लीजिये किसी भी नेता का कोई अकाउंट हमारे बैंक में नहीं है। हम उन्हें बताते हैं कि किसी राजनेता के दम पर हमारा बैंक नहीं चलता। हम कभी किसी नेता के लिए बैंक के कानून से हटकर कार्य नहीं करते। चाहे कोई नाराज हो या खुश। बैंकिंग सेक्टर में हम निजी रिश्ते नहीं निभा सकते। अगर कुछ गड़बड़ होता है तो आरबीआई सीधे कहती है कि आप या तो विलय कर लीजिये या फिर बंद कर दीजिये।

● डिजिटल बैंकिंग के आने से बैंकिंग सेक्टर को आपने किस तरह परिवर्तित होते देखा है ?

डिजिटल बैंकिंग के माध्यम से बैंकिंग प्रणाली आसान हो गई है। डिजिटल बैंकिंग की वजह से बैंकिंग व्यवहार में सुगमता आ गई है। सभी बैंकों की तरह समता बैंक ने भी खुद का ऍप बनाया है, हमारा खुद का डेबिट कार्ड है। हमने आरबीआई के सारे गाइडलाइंस को पूरा किया है। आरबीआई द्वारा कोर बैंकिंग निकालने से पहले ही हम इस दिशा में काम करना शुरू कर दिए थे।

● आप इस बैंक से कब जुड़े ?

मैंने 2007 में शुरुवात की थी। जब मैंने अपना पद संभाला था तब मुझे बैंक का अ,ब,स भी नहीं पता था। लोग कहते थे ये क्या सोच लेकर चल रहा है। तब मुझे सिर्फ चालू खाता, बचत खाता यही पता था। जब मैंने काम करना शुरू किया तब हमारे एनपीए थोड़ी दिक्कत में चल रहे थे। तब मेरे दिमाग मे आया कि हमें सारी चीजें ऑनलाइन करनी चाहिये। उसके ६ महीने बाद ही आरबीआई के गाइडलाइन्स आये कि सारे को – ऑपरेटिव बैंकों को अपना सीबीएस पूरा करना होगा जिसके लिए 2 साल का वक़्त दिया गया था। चूंकि हमने इस पर पहले से ही काम करना शुरू कर दिया था तो आरबीआई के गाइडलाइन्स आने के 6 माह बाद ही हमने अपना पूरा काम कर दिया।

● मुद्रा योजना के बारे में आपका क्या विचार है ?

केंद्र सरकार ने छोटे उद्यम शुरू करने के लिए प्रधानमंत्री मुद्रा योजना शुरू की है। इसके तहत लोगों को अपना उद्यम (कारोबार) शुरू करने के लिए छोटी रकम का लोन दिया जाता है। लेकिन आज लोग इसकी आड़ में इस लोन का प्रयोग व्यक्तिगत कार्यों में करने लगे हैं। इसके मापदंड बड़े हैं इसलिए इसमें दिक्कतें भी बहुत हैं।

◆◆◆

भारत में लोकतंत्र मॉडल की प्रासंगिकता

-डॉ. विक्रम सिंह

सभी लोकतंत्र प्रणालियों की एक मुख्य विशेषता होती है कि वहाँ शासन या सत्ता का अन्तिम सूत्र जनसाधारण के हाथों में रहता है, ताकि सार्वजनिक नीति जनता की इच्छा अनुसार और जनता के हित साधन के उद्देश्य से बनाई जाए और कार्यान्वित की जाए।

इतिहास इस बात का गवाह है कि मानव जाति ने अपनी उत्पत्ति से लेकर आज तक एक सुखी, समृद्ध एवं खुशहाल जीवन जीने लायक आदर्श समाज एवं शासन व्यवस्था को स्थापित करने के लिए शक्तिशाली लोगों, राजाओं, सामंतों और निरंकुश शासकों आदि के दमन – अत्याचार को सहन करने के बाद लोकतांत्रिक व्यवस्था को जन्म दिया। हालांकि राजतंत्र के पतन एवं लोकतंत्र को स्थापित करने में इंग्लैण्ड की गौरवमय क्रांति (1688), अमरीका का स्वतंत्रता संग्राम (1776), फ्रांसीसी क्रांति (1789) आदि क्रांतियों का अहम् योगदान रहा है।

लोकतंत्र क्या है?

सामान्य अर्थों में समझा जाए तो अब्राहम लिंकन के अनुसार लोकतंत्र जनता का – जनता के लिए – जनता के द्वारा जनता का शासन है। अर्थात् लोकतंत्र शासन व्यवस्था का रूप है, जिसके तहत् जन-साधारण एक निश्चित अवधि के अन्तराल में अपने द्वारा निर्वाचित प्रतिनिधियों के शासन से शासित होते हैं। आधुनिक समय में दुनिया के अधिकांश देशों ने लोकतांत्रिक शासन व्यवस्था को ही अपनाया है। इस व्यवस्था के प्रारम्भिक संकेत यूनान के नगर राज्यों में मिलते हैं जहाँ लोग शासकीय कार्यों में प्रत्यक्ष जन सहभागिता करते थे, जोकि

प्रत्यक्ष लोकतंत्र का एक स्वरूप था। लेकिन उस समय की लोकतांत्रिक व्यवस्था में एक बहुत बड़ी कमी थी कि शासकों का निर्वाचन लॉटरी पद्धति के तहत् किया जाता था, जो कि अपने आप में दोषपूर्ण व्यवस्था थी, जिसका पूरे यूनान के नगर राज्यों में सुकरात ने विरोध किया, जिसके एवज में उन्हें दण्ड के रूप में जहर का प्याला पीना पड़ा। शायद दुनिया में सुकरात पहला व्यक्ति था, जिसने अच्छी शासन व्यवस्था और शासक के चयन के उचित तौर-तरीकों को न अपनाने के विरोध में अपनी शहादत दी थी। इसके बावजूद आज दुनिया के अधिकांश देशों ने लोकतांत्रिक व्यवस्था को एक आदर्श मॉडल के रूप में अपनाया है।

लोकतंत्र, अन्य शासन व्यवस्थाओं से इसलिए उपयुक्त है, क्योंकि यह राजनीतिक और सामाजिक समानता पर आधारित होता है और यह अपने नागरिकों को कुछ बुनियादी अधिकारों और स्वतंत्रता की गारंटी देता है, ताकि वहाँ के नागरिक गरिमामय और सम्मानजनक जीवन जी सकें। लोकतंत्र के ये तत्व तो अधिकांश देशों में समान हैं पर सामाजिक स्थिति, अपनी आर्थिक उपलब्धि और अपनी संस्कृतियों के मामलों में एक-दूसरे से काफी अलग-अलग हैं। सभी लोकतंत्र प्रणालियों की एक मुख्य विशेषता होती है कि वहाँ शासन या सत्ता का अन्तिम सूत्र जनसाधारण के हाथों में रहता है, ताकि सार्वजनिक नीति जनता की इच्छा अनुसार और जनता के हित साधन के उद्देश्य से बनाई जाए और कार्यान्वित की जाए। इसमें शासन चलाने का काम आम नागरिकों के प्रतिनिधियों को सौंपा जा सकता है, परन्तु उन्हें निश्चित अन्तराल के बाद फिर से जनसाधारण का विश्वास प्राप्त करना होता है।

लोकतंत्र, जनतंत्र या प्रजातंत्र (Democracy) शब्द का उद्भव ग्रीक भाषा के शब्द डेमोस (Demos) से हुआ है, जिसका अर्थ है जनसाधारण, यूनानी इतिहासकार हिरोडोटस ने पाँचवी शताब्दी ई.पू. में इस शब्द का प्रयोग किया था इसमें क्रेसी (Cracy) शब्द जोड़ा गया है, जिसका अर्थ है शासन या सरकार इस तरह लोकतंत्र का अर्थ अभिजात्यों के विपरीत किसी अन्य वर्ग के शासन से है। इस ग्रीक शब्द का अर्थ है, गरीबों, सामान्यजनों तथा सबसे कम समझदारों का शासन।

भारत में स्वतंत्रता के बाद अपनाया गया लोकतांत्रिक मॉडल

भारत के सामने ब्रिटिश उपनिवेशवाद से स्वतंत्रता मिलने के बाद अनेक महत्वपूर्ण चुनौतियाँ थीं, जैसे राष्ट्र की एकता और अखण्डता को बनाये रखने के लिए देशी रियासतों को भारतीय संघ में सम्मिलित करना, आर्थिक पिछड़ेपन से देश को उभारना, सामाजिक विषमताओं और क्षेत्रीय विभिन्नताओं के मध्य सामंजस्य स्थापित करना आदि। इन लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए एक उचित शासन प्रणाली की आवश्यकता थी, ताकि आजाद भारत के लोगों के सपनों को पूरा किया जा सके। इन सब कार्यों एवं उद्देश्यों को पूरा करने के लिए लोकतंत्र को अपनाने का संकल्प लिया गया। इसीलिए स्वतंत्रता के बाद पाश्चात्य देशों से प्रेरित संसदीय प्रणाली पर आधारित उदारवादी प्रतिनिधित्वमूलक लोकतांत्रिक व्यवस्था के मॉडल को अपनाया गया, ताकि लोगों की महत्वाकांक्षा एवं आवश्यकताओं को पूरा करके उन्हें आत्मनिर्भर बनाया जा सके तथा देश की विविधतामूलक जातीयता धार्मिक, भाषायी, क्षेत्रीयता आदि व्यवस्थाओं के साथ उचित तालमेल बिठाकर समतामूलक समाज का निर्माण हो सके, जिससे भारत की एकता और अखण्डता बची रहे तथा राजनीतिक, सामाजिक

एवं आर्थिक सभी क्षेत्रों में भारत का सशक्तिकरण हो। लोकतंत्र को अपनाने का संकल्प तो ले लिया, लेकिन उसका मॉडल कैसा होगा इसे लेकर स्वतंत्रता आन्दोलन से जुड़े हुए राजनेताओं और प्रबुद्ध अभिजन वर्ग के मध्य गहन राष्ट्रीय विमर्श चला और आपस में गहरा मतभेद भी था।

एक तरफ राष्ट्रीय आन्दोलन के नेतृत्व के एक बड़े हिस्से ने लोकतंत्र के जिस मॉडल को भारत के लिए चुना था, उसे सिद्धान्त की भाषा में उदारवादी और मध्यमार्गी लोकतंत्र कहा जाता है। यह प्रणाली सार्वभौमिक मताधिकार पर आधारित निर्वाचन और हितों की होड़ पर आधारित बहुलतावाद के जरिए संचालित होती है। हमारे तात्कालिक अभिजनों की यह मान्यता एक तरह उचित थी कि एक विविधतामूलक समाज में इस मॉडल के कामयाब होने की सम्भावना सबसे ज्यादा है, लेकिन इसके चयन के पीछे उपयोगिता से ज्यादा पश्चिमी राजनीतिक चिन्तन के प्रगतिशील आयामों से मिली प्रेरणा की भूमिका थी।

देश के राष्ट्रीय आन्दोलन से जुड़े राजनेता लोकतांत्रिक व्यवस्था के मॉडल को लेकर एकमत नहीं थे। जवाहर लाल नेहरू और उनके समर्थक सांविधिक-कार्याविधिक लोकतंत्र और विकासिक रणनीतिक के जरिए जातियों, राष्ट्रीयताओं, भाषाओं और संस्कृतियों के खानों में बंटे समाज को उसकी बहुलता और विविधता का सम्मान करते हुए बदलना चाहते थे। चूँकि वे अंग्रेजों द्वारा छोड़े गए राज्य के उत्तराधिकारी बने इसलिए उन्हें अपने एजेंडे को लागू करने का अवसर भी मिला। डॉ.भीमराव आंबेडकर जो बहुलवादी लोकतंत्र को संविधान का जामा पहनाने में प्रमुख भूमिका का निर्वाह करने के बावजूद लोकतंत्र के सांविधिक राजनीतिक सिद्धांत तथा कर्मकांडीय श्रेणीबद्ध समाज-व्यवस्था के बीच टकराव को लेकर चिन्तित थे। उन्हें डर था कि एक वोट और एक व्यक्ति का सिद्धान्त राजनीति में लागू तो होगा पर समाज के स्तर पर यह समता उपलब्ध नहीं हो पाएगी।

राजनीतिक हिन्दुत्व के सिद्धांतकार विनायक दामोदर सावरकर को ऐसा बहुलवादी लोकतंत्र स्वीकार्य नहीं था। जिसमें अल्पसंख्यकों को बराबर के अधिकार मिलने की सम्भावनाएं हों। दिलचस्प बात यह है कि नेहरू, आंबेडकर और सावरकर तीनों ही जातिवाद के विरोधी थे। वे सभी जातियों को मिटाए बिना अपने-अपने राजनीतिक उद्देश्य की प्राप्ति असम्भव मानते थे। परंतु सभी का चिन्तन व विमर्श अलग-अलग था। नेहरू को बहुलवादी लोकतंत्र की समाज परिवर्तनकारी क्षमताओं पर विश्वास था। आंबेडकर के पास एक लोकतंत्र का कोई विकल्प नहीं था। लेकिन वह यह देख पाने में असमर्थ थे कि यह लोकतंत्र भविष्य में भारतीय समाज का रूपान्तरण कैसे करेगा। और सावरकर एक समतल हिन्दू समाज बनाने के लक्ष्य में ऐसे लोकतंत्र को बाधक मानते थे। कम्युनिस्टों को वर्ग-सिद्धांत के प्रभाव में बहुलवादी लोकतंत्र को बुर्जुआ वर्ग की तानाशाही के रूप में व्याख्यायित करने के लिए बाध्य थे।

कुल मिलाकर इन सभी विचारकों में ऐसा कोई विचार मौजूद नहीं था जो भारतीय समाज के अनुरूप कोई राजनीतिक शासन प्रणाली खोजने के इरादे से जुड़ा हो अर्थात् जो लोकतंत्र को भारतीय समाज की जरूरतों के अनुसार ढालने की कोई यूटोपियन इच्छा रखता हो। इन नेताओं और विचारकों को राज्य की पारम्परिक भारतीय धारणा में कोई रुचि नहीं थी। लोकतंत्र के मॉडल को लेकर गांधी जी का विचार इन सब विचारकों से अलग रहा। वह लोकतंत्र को जनता की आवश्यकताओं के अनुरूप ढालने के समर्थक थे। गांधी यह मानने को तैयार नहीं थे कि हितों की होड़ अपने आप में कोई आदर्श हो सकती है। वे हितों की होड़ की बजाय जनता की बुनियादी आवश्यकताओं को प्राथमिकता देते थे और हितों को आवश्यकताओं का पर्याय मानने से इन्कार करते थे। उनकी मान्यता थी कि लोकतांत्रिक व्यवस्था को इस तरह नियोजित किया जाना चाहिए कि वह संस्थाओं की मध्यस्थता के चक्कर में फँसे बिना जन साधारण के साथ सीधे तादात्म्य स्थापित कर सके और कारगर ढंग से रोजाना उसके काम आ सके। जाहिर है कि उनका मॉडल कमोबेश प्रत्यक्ष लोकतंत्र या सहभागी लोकतंत्र का था। लेकिन आजादी के बाद गांधी जी के इस सहभागी लोकतंत्र के मॉडल को दरकिनार करके व्यवहार में पाश्चात्य से प्रेरित उदारवादी, बहुलतावादी लोकतांत्रिक व्यवस्था के मॉडल को नेहरू स्वतंत्रता आन्दोलन से जुड़े अभिजन द्वारा समर्थित बहुलवादी लोकतांत्रिक मॉडल को अपनाया गया।

भारतीय लोकतंत्र ने जब पं.जवाहर लाल नेहरू के नेतृत्व में अपनी यात्रा प्रारम्भ की तो उसके सामने सामने अनेक प्रमुख चुनौतियाँ थीं। जिनका विवरण निम्न प्रकार से है-

- देश की सभी जातियाँ, धार्मिक समुदायों, वर्गों, सांस्कृतिक अस्मिताओं एवं क्षेत्रीय विविधताओं के मध्य सामंजस्य स्थापित करना।
- राजनीतिक स्थायित्व प्रदान करना, ऐसा विकास मॉडल एवं आर्थिक नीतियों को अपनाना, जिससे ब्रिटिश उपनिवेशवाद से प्राप्त आर्थिक पिछड़ेपन से राष्ट्र को उभारा जा सके और गरीबी, भुखमरी से लोगों को छुटकारा दिलाया जा सके।
- संविधान की प्रस्तावना में उल्लेखित प्रभुत्वसम्पन्न, समाजवादी पंथनिरपेक्ष, गणराज्य बनाने के साथ ही सभी नागरिकों को सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक न्याय, विचार अभिव्यक्ति धर्म, विश्वास और उपासना की स्वतंत्रता, प्रतिष्ठा और अवसर की समता प्राप्त करने व राष्ट्र की एकता और अखण्डता सुनिश्चित करने व बंधुता की भावना बढ़ाने आदि लक्ष्यों को हासिल करते हुए देश में समतामूलक समाज का निर्माण करना।
- स्वतंत्र और निष्पक्ष विदेश नीति का निर्माण एवं संचालन करना, ताकि देश के राष्ट्रीय हितों को प्राप्त किया जा सके।

नेहरु से इन्दिरा तक

आजादी के बाद जब देश जवाहर लाल नेहरू के नेतृत्व में आगे बढ़ा तो उनके सामने अनेक चुनौतियाँ थीं। उन्होंने राजनीतिक, आर्थिक , सामाजिक और वैदेशिक सभी मोर्चों पर भारत को सफलता दिलाने के लिए पाश्चात्य से प्रेरित लोकतंत्र मॉडल एवं सोवियत संघ से प्रेरित समाजवाद के आर्थिक मॉडल को अपनाने का निर्णय लिया। हमारे देश के लोकतंत्र में नेहरू युग एक स्वर्णकाल युग भी रहा। उनके राजकाज में आर्थिक विकास हुआ। कानून का राज्य स्थापित हुआ, संस्थागत राजनीति चली, धर्मनिरपेक्ष नीतियाँ बनीं और दूरदर्शी विदेश नीति की शुरूआत हुई। 1964 में उनकी मृत्यु के बाद उनकी पुत्री और राजनीतिक वारिस इंदिरा गांधी ने जब सत्ता सँभाली तो पहले धीरे-धीरे लेकिन बाद में तेज गिरावट शुरू हुई। इंदिरा गांधी के दौर में संस्थाओं का क्षरण हुआ और अधिनायकतावादी प्रवृत्ति, जातीय और धार्मिक अल्पसंख्यकों के प्रति असहिष्णुता और आक्रामक विदेश नीति की बुनियाद पड़ी।

उनके बाद तीसरे दौर में सत्ता अन्ततः संयुक्त रूप से कांग्रेस-विरोधी दलों के हाथ में आ गई और इसी कारण देश पूरी तरह अस्थिरता के दौर में फँस गया। लोकतांत्रिक संस्थाएं उठापटक की शिकार हो गईं। राष्ट्रीय पार्टियों की कीमत पर क्षेत्रीय ताकतों को मजबूती मिली, राजनीतिक एजेंडे पर क्षेत्री माँगें और अलगाववादी राजनीति छा गई।

UPL

At the Forefront of Agricultural Technologies

UPL has advanced technologies along the total agriculture value chain from *"Pre-planting to Post harvest".*

UPL offers integrated solution to growers across the globe.

www.uplonline.com

राष्ट्रीय आपातकाल के बाद

राष्ट्रीय आपातकाल के बाद भारतीय लोकतांत्रिक व्यवस्था में विशेष रूप से राजनीतिक क्षेत्र में बड़ा बदलाव दिखाई देने लगा। भारत की राजनीति में पहली बार सातवीं लोक सभा चुनाव 1977 में द्विदलीय पद्धति के विकास की स्पष्ट सम्भावना दिखाई देने लगी। इस समय देश के दो प्रमुख दल थे – एक तो जनता पार्टी थी, जो कई गैर-कांग्रेसी दलों से मिलकर बनी थी। दूसरी ओर कांग्रेस पार्टी थी, जो 1977 के लोकसभा चुनाव में पराजित हो गई। इसके बाद जनता पार्टी की सरकार बनी। इसके बाद 1989 में विश्वनाथ प्रताप सिंह के नेतृत्व में राष्ट्रीय मोर्चे की सरकार बनी, इस सरकार ने 1989 में सामाजिक और आर्थिक रूप से पिछड़ों की पहचान के लिए मंडल आयोग का गठन किया, इस आयोग ने पिछड़े वर्ग के लोगों के लिए 27 प्रतिशत आरक्षण दिए जाने की सिफारिश की थी। 90 के दशक में 1989 में वी.पी.सिंह ने इसे लागू किया, जिसे लेकर देश में व्यापक विरोध प्रदर्शन भी हुआ। हालांकि, बाद में नरसिंह राव ने भी अगड़ी जाति के लोगों को आर्थिक आधार पर 10 प्रतिशत आरक्षण देने की शुरूआत की थी, लेकिन सफल नहीं हो सके, जिसे वर्तमान केन्द्र की मोदी सरकार ने लागू करके साकार कर दिया है। इस दशक में एक तरफ राष्ट्रीय राजनीतिक समुदाय की रचना हुई तो दूसरी तरफ क्षेत्रीय और जातीय विविधता पर आधारित सत्ता के कुछ दावों को बलपूर्वक दबाया भी गया। असम और पंजाब के ऐसे दावों से जिस संवेदनहीन ढंग से निपटा गया, उसने लम्बे राजनीतिक संकट को जन्म दिया। 1983 में अमृतसर के स्वर्ण मन्दिर पर ऑपरेशन ब्लू स्टार के रूप में सेना के हमले के परिणामस्वरूप पंजाब गृह युद्ध की चपेट में आते-आते बचा। सिख समुदाय के कुछ लोगों द्वारा 1984 में श्रीमती इंदिरा गांधी की हत्या कर दी गई। इसके बाद 1984 में सिख अल्पसंख्यकों के कातिलों को कांग्रेस का संरक्षण मिलने का आरोप आज भी कायम है। सिख समुदाय को कांग्रेस से मिलने वाले न्याय का मामला आज भी न्यायालयों में अधर में पड़ा हुआ है।

90 के दशक बाद भारतीय लोकतंत्र का परिदृश्य

90 के दशक में भारतीय लोकतांत्रिक व्यवस्था में राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक क्षेत्रों में बड़े बदलाव दिखाई देने लगे। आजादी के बाद नेहरू द्वारा अपनाई गई (राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक) नीतियों से अलग राष्ट्रीय विमर्श के क्षितिज पर एक साथ तीन (मंडल, मन्दिर, मार्केट) ऐसे मुद्दे उभर कर आए, जिनकी वजह से देश की लोकतांत्रिक व्यवस्था का परिदृश्य ही बदल गया। विश्वनाथ प्रताप सिंह की सरकार ने अगस्त 1990 में जब अचानक पिछड़ों के लिए आरक्षण की सिफारिश को लागू कर दिया, तब मंडल पिछड़ों के उस आन्दोलन का पर्याय बन गया। मन्दिर से तात्पर्य संघ परिवार के राम जन्मभूमि आन्दोलन से है, जिसकी परिणति 6 दिसम्बर, 1992 को बाबरी मस्जिद के ध्वंस में हुई। तीसरा मुद्दा मार्केट का था, अर्थात् आर्थिक उदारीकरण और भूमंडलीकरण अर्थव्यवस्था से जुड़ी नीतियों से है, चार दशकों तक समाजवाद का नाम लेने वाले नीति-निर्माताओं ने यकायक उलटे घूम जाने का निर्णय लिया। इस मुद्दे पर जनादेश लेने की तो दूर, उन्होंने मतदाताओं को इसके लिए आगाह भी नहीं किया।

इस दशक में सत्ता का विकेन्द्रीकरण कर स्थानीय स्वशासन के रूप में पंचायतों को 1993 में संवैधानिक दर्जा देकर निचले से निचले स्तर के जनसाधारण की देश के लोकतांत्रिक व्यवस्था में जनसहभागिता तय करने का कार्य किया गया। इस दौर में आर्थिक क्षेत्र में उदारीकरण की नीति को अपनाकर भले ही कुछ फायदा हुआ हो, लेकिन राष्ट्रीय राजनीति में 1990 से 2000 तक का दौर राजनीतिक अस्थिरता का रहा है। इसका प्रमुख कारण राष्ट्रीय नेतृत्व में क्षेत्रीय राजनीतिक दलों की भूमिका भी एक प्रमुख कारण रही है। केन्द्र में गठबंधन की सरकारों के गठित संयुक्त प्रगतिशील गठबंधनों की सरकारों ने कहीं समान विचारधारा के राजनीतिक दलों को साथ लेकर गठबंधन की सरकारें स्थापित करके देश को राजनीतिक अस्थिरता के दौर से बाहर निकाला है, लेकिन आर्थिक और सामाजिक मोर्चे पर अभी भी बहुत कुछ करना बाकी है।

21वीं सदी में भारतीय लोकतंत्र का परिदृश्य

इस सदी में भारतीय लोकतंत्र अहम् परिवर्तन, प्रयोगों, सफलताओं व चुनौतियों आदि के होते हुए भी निरन्तर आगे बढ़ रहा है। राजनीतिक क्षेत्र में विभिन्न विचारधारा रखने वाले राजनीतिक दलों के मध्य केन्द्र और राज्य स्तरों पर एक निश्चित अवधि के दौरान गठित सरकारों के गठन में गठबंधन की राजनीति के कहीं सफल और असफल प्रयोग हो रहे हैं। इससे देश में, विशेषकर राज्य स्तर पर गठित सरकारों के गठन के बाद राजनीतिक अस्थिरता की स्थिति उत्पन्न हो रही है। हालांकि, केन्द्र स्तर पर भी यूपीए और एनडीए के नेतृत्व में समय-समय पर गठबंधन की सरकारों का गठन हो रहा है। राजनीतिक अस्थिरता की स्थिति उत्पन्न होने की सम्भावना कम ही है। केन्द्रीय स्तर पर भले ही गठबंधन की सरकारें गठित हो रही हों, लेकिन सत्ता पर भारतीय जनता पार्टी एवं कांग्रेस पार्टी का ही वर्चस्व बना हुआ है। हालांकि, कहीं लोक सभा चुनाव से पूर्व राष्ट्रीय एवं क्षेत्रीय दलों ने मिलकर इन दलों से हटकर जनता के सामने तीसरे मोर्चों के विकल्प देने की कोशिश तो की है।

विकास, रोजगार, राष्ट्रीयता, महँगाई, सुरक्षा, शिक्षा, किसानों के हितों से जुड़े विषय, आर्थिक समानता, सुशासन तथा नेतृत्व के दायरे का अभिजन वर्ग से हटकर जातीय धार्मिक, क्षेत्रीयता आदि आधारों पर विभक्त होने के कारण भारत की राजनीति केन्द्र और राज्य – दोनों स्तरों पर प्रभावित हो रही है। इसे भारतीय राजनीति में एक नए प्रयोग के तौर पर देखा जा सकता है। जो सरकार केन्द्र और राज्य स्तर पर सत्ता में रहने के बाद इन

WITH BEST COMPLIMENTS

FROM A
WELL WISHER

मुद्दों को मद्देनजर रखते हुए कानूनों एवं नीतियों का निर्माण करेगी, वही लम्बे समय तक शासन कर सकती है।

आजादी के बाद देश में विगत 70 वर्षों से उदारवादी और प्रतिनिधित्व आधारित बहुलतावादी लोकतांत्रिक मॉडल को कारगर बनाने की कोशिश चल रही है, लेकिन इसके लिए देश की संस्थाएँ मजबूत नहीं हो पायी हैं। लगता है कि समाज उथल-पुथल के दौर में स्थायी रूप से फँस गया है। शीतयुद्ध के बाद से हमारे उदारवादी राज्य ने भूमण्डलीय आर्थिक और राजनीतिक नुस्खों को अपनाने के चक्कर में अपनी समस्याएं कैसे बढ़ाई है। देश की सामाजिक स्थिति एक तरफ अपनी बहुजातीयता के कारण और दूसरी तरफ राष्ट्र-राज्य द्वारा शासित होने के कारण खासी पेंचीदा रही है। यही कारण है कि भारतीय राजनीति में जमीनी स्तर पर सक्रिय नए सामाजिक आन्दोलन विगत चार दशकों से स्थानीय जनता की समस्याओं को लेकर एक नई जमीन तैयार कर रहे हैं और इसके लिए राज्य सत्ता की स्थानीय संरचनाओं से संघर्ष करते रहे हैं। राजनीतिक दलों की दिलचस्पी केवल चुनाव लड़ने में रह गई है। सत्ता को पाने की होड़ में जनसाधारण के मुद्दे गायब होते जा रहे हैं। इसलिए उनके द्वारा छोड़ी गई जगह को इन्हीं सामाजिक आन्दोलनों ने भरा है। ये आन्दोलन ही इस समय राजनीतिक सत्ता और भूमण्डलीय आर्थिक शक्तियों को प्रतिनिधित्व करने वाली ताकतों से संघर्षरत् है, ताकि जनसाधारण के हितों की अनदेखी न हो और लोकतांत्रिक व्यवस्था के स्वरूप को भी जीवित रखा जा सके।

निष्कर्ष

स्वतंत्रता के बाद भारत ने जिन सिद्धांतों, मूल्यों, विचारों और उद्देश्यों को लेकर लोकतांत्रिक व्यवस्था को अपनाया, वह मॉडल विगत ७० वर्षों में बहुत सशक्त तो हुआ है, लेकिन कुछ मोर्चों पर सफलता और असफलता के साथ निरन्तर आगे बढ़ रहा है। लोकतंत्र की इस ऐतिहासिक यात्रा में उसके कई स्वरूप देखने को मिले, जैसे बहुलतावादी, अधिनायकवाद व सहभागिता-मूलक आदि। इन बदलते स्वरूपों के बाद लोगों का भरोसा लोकतंत्र व्यवस्था पर कायम रहा है। क्योंकि भारत के लोगों की राजनीतिक संस्कृति में महत्वाकांक्षा एवं आशावादी दृष्टिकोण के लक्षण मौजूद हैं। यही कारण है हर लोक सभा, विधानसभा एवं स्थानीय स्तर के चुनावों में मतदान के प्रतिशत में लगातार बढ़ोतरी होती जा रही है। यहाँ तक कि हर स्तर की शासकीय संस्थाओं के प्रमुख को भी निर्णायक मतदान के द्वारा चुनते हैं। लेकिन समय के साथ जनसाधारण ने सरकार की नीतियों के विरुद्ध देश के हर भाग में सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक रूपान्तरण की कोशिशों के लिए जनआन्दोलनों का दायरा भी बढ़ाया है। वे चाहते हैं कि राजनीति के स्थानीय से लेकर सभी स्तरों पर जनसाधारण की आत्मनिर्भरता हो, ताकि उसे अधिक सहभागी, जनता की आकांक्षाओं के प्रति अधिक चिन्तित और उसके प्रति सीधे जवाबदेह बनाया जा सके। वे इस काम की शुरूआत जन जीवन को सीधे प्रभावित करने वाले मुद्दों के आस-पास जन गोलबन्दी करते हैं। उनका प्रयास होता है कि सामाजिक ऊर्जा को जमा करके उसका इस्तेमाल समाज में सत्ता के सम्बंधों को बदलने में किया जाए। आजादी से लेकर आज तक शासन में किसी एक व्यक्ति को प्रभुत्वशाली होने का अवसर नहीं दिया। यदि किसी ने कोशिश भी की तो उसे चुनावों में हराकर सबक दिया है। यहां भारतीय लोकतंत्र की अनोखी पहचान रही है, लेकिन यह लोकतांत्रिक व्यवस्था एक समतामूलक समाज के निर्माण में नाकाम रही है। स्वतंत्रता से लेकर आज तक भारत में लोकतांत्रिक व्यवस्था का स्वरूप स्थायी नहीं रहा है। प्रारम्भ में देश के अन्दर जिस बहुलतावादी लोकतांत्रिक मॉ

डल को अपनाया गया था, उसके संचालन में प्रबुद्ध अभिजन की महत्वपूर्ण भूमिका रही, आम नागरिकों की भूमिका सिर्फ मतदान तक ही सीमित होती थी। अभिजन लोगों में एक धारणा बन गई थी कि प्रतिनिधित्वमूलक लोकतंत्र की संस्थाओं पर बहुसंख्यावादी दबाव और बढ़ेगा। इसी मान्यता के प्रभाव के कारण आजादी के बाद के दशकों में अंग्रेजी शिक्षित, शहरी और ऊँची जाति के मुट्ठी भर लोग सरकार और निर्णयकारी प्रक्रिया पर हावी हो गए थे। हालांकि, उनका प्रभुत्व लोकतंत्र की आड़ में अपना काम करता था, इस वर्चस्व को सत्तर के दशक में चुनौती मिलनी शुरू हुई, जब छोटी जातियों और गरीबों ने चुनावी राजनीति और नागरिक समाज की जमीन पर अपने दावे पेश करने शुरू किए, लेकिन देश वर्तमान समय में सामाजिक अंतर्विरोध एवं आर्थिक असमानता के दौर से गुजर रहा है। इससे अमीरों और गरीबों के मध्य की जीवनशैली और संसाधनों पर हक की स्थिति में काफी अन्तर है। साथ ही राजनीति में ज्यादा लोगों की भूमिका मात्र मतदान तक ही सीमित है, जो लोकतंत्र की मजबूती के लिए अच्छा संकेत नहीं है, जबकि राष्ट्रीय एवं आम लोगों के हित से जुड़े हुए मुद्दों पर गहन विचार-विमर्श आवश्यक है।

उदारवादी लोकतांत्रिक व्यवस्था के अन्तर्गत संसदीय प्रणाली को भारतीय अभिजन वर्ग ने आजादी के बाद ग्रहण किया था। जो कि अपने आप में एक मिश्रित मॉडल था, जिसका भारतीयकरण करके, देश के जनसाधारण की आकांक्षाओं के अनुरूप ढालने की कोशिश की गई। इस मॉडल के भारतीयकरण की प्रक्रिया में मतदाताओं की मुख्य भूमिका रही है, यह मॉडल आर्थिक मोर्चे पर अपेक्षाकृत असफल रहा, लेकिन जातियों के राजनीतिकरण में उल्लेखनीय सफलता हासिल की है। भारतीय लोकतंत्र ने अपनी ऐतिहासिक यात्रा में कहीं उतार-चढ़ाव झेलने के बाद भी अपने सशक्तिकरण का मार्ग तय किया। अभिजनवर्ग से लोकतंत्र हस्तान्तरण हो समाज के जनसाधारण में पहुँच गया है। इसी कारण दुनिया का सबसे बड़ा लोकतांत्रिक देश तथा एशिया महाद्वीप का सबसे मजबूत लोकतांत्रिक देश होने का गौरव हासिल किया है, निश्चित रूप से जिसके मूल में सदैव भारत के मध्यवर्ग की अपेक्षा निम्न व गरीब वर्ग का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। जो कि भारत के लोकतांत्रिक व्यवस्था में अधिक आस्था एवं विश्वास रखते हैं, लेकिन बावजूद इसके भी भारत की लोकतांत्रिक व्यवस्था कहीं अन्तर्विरोधी, उम्मीदों, खामियों, अन्देशों और बाहरी तत्वों के साथ संघर्षरत् है। इन सबके बीच सामंजस्य बिठाना अभी शेष है।

भारतीय लोकतंत्र की सफलताएं

स्वतंत्रता से लेकर वर्तमान समय तक विगत 70 वर्षों में लोकतंत्र की निम्नलिखित सफलताएँ हैं-

- संविधान की सर्वोच्चता के सिद्धांत का पालन करते हुए देश में सदैव कानून के शासन को बनाए रखा अर्थात् देश को निरंकुश, तानाशाही एवं सैनिक शासन के प्रभाव से बचाया है।
- भारतीय लोकतंत्र ने राजनीतिक समानता और कानूनी रूप से सामाजिक समानता के मोर्चे पर अत्यधिक सफलता हासिल की है। इस कारण देश के सबसे नीचे तबके के लोगों को भी नेतृत्व करने का अवसर मिला, इससे देश के विकास में उनका योगदान भी बढ़ा है। समाज के जिस वर्ग के साथ जातीय आधार पर भेदभाव हुआ था, उचित कानून बनाकर उसे समाप्त कर दिया गया है अर्थात् देश के अन्दर प्रत्येक नागरिक सम्मान के साथ जी रहा है।
- देश में जातीय, धार्मिक व भाषायी आधारों पर विविधताएं होने के बाद भी विगत् 70 वर्षों से राष्ट्र की अखण्डता व एकता को बनाए रखा है।
- संवैधानिक संस्थाओं जैसे न्यायपालिका, कार्यपालिका और व्यवस्थापिका जैसी अन्य संवैधानिक संस्थाओं के अस्तित्व को बचाए रखा है।
- देश में नागरिकों के अधिकारों और स्वतंत्रता में बाधा, पुराने धार्मिक रीति-रिवाजों पर आधारित प्रथाओं को समाप्त करके उनके स्थान पर सबको समान अधिकार देने के लिए नए कानून का निर्माण किया गया है।
- समाज से जुड़े हर क्षेत्र के मुद्दों में बदलाव एवं समाधान के लिए सामाजिक आन्दोलन का उदय हुआ है।
- समाज के वंचित, पिछड़े वर्ग के लोगों और महिलाओं का राजनीतिक सशक्तिकरण हुआ है अर्थात् देश के नेतृत्व में हर स्तर पर इनकी भागीदारी बढ़ी है।

भारतीय लोकतंत्र की असफलताएं

स्वतंत्रता से लेकर वर्तमान समय तक विगत् 70 वर्षों में लोकतंत्र की निम्नलिखित असफलताएं हैं-

- संविधान की प्रस्तावना में उल्लिखित लक्ष्यों के अनुरूप एक समतामूलक समाज के निर्माण में नाकाम रहे हैं। विभिन्न जाति, वर्ग और धर्म के लोगों को कानूनी आधार पर अधिकार तो दिए गए हैं लेकिन सामाजिक स्तर पर इन अधिकारों को मान्यता मिलना अभी भी बाकी है अर्थात् देश में सामाजिक स्तर पर सामाजिक विषमता आज भी विद्यमान है।
- आजादी से लेकर आज तक देश में आर्थिक विकास के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए अनेक विकास मॉडलों का सहारा लिया जा रहा है। फिर भी आर्थिक विकास के मोर्चे पर नाकाम रहे हैं। अमीरी और गरीबी में सम्पत्ति के स्वामित्व,आय एवं जीवन स्तर को लेकर बड़ा अन्तर है देश की एक बड़ी आय पर चन्द लोगों का कब्जा है। इससे देश में आर्थिक विषमता बनी हुई है।
- युवाओं को रोजगार, गुणवत्तापरक शिक्षा, अच्छी स्वास्थ्य सुविधाएं शत-प्रतिशत जनता की पहुँच तक नहीं हो सकी। इस तरह के अभाव से देश की एक बड़ी आबादी देश के विकास में अपना योगदान देने से वंचित रही है और अभाव में जीने के लिए मजबूर रही है।
- देश में विकास कार्यों एवं अन्य कार्यों में खर्च होने वाली धनराशि को लेकर भ्रष्टाचार का प्रभाव बढ़ रहा है अर्थात् शासकीय कार्यों में पारदर्शिता एवं उत्तरदायित्व का अभाव है। यह लक्षण सुशासन व्यवस्था स्थापित करने के मार्ग में बहुत बड़ी बाधा है। हालांकि, इसके समाधान के लिए समय पर कई कानूनों का निर्माण भी किया गया है। बावजूद इसके भी जनता को परेशानियों का सामना करना पड़ता है।
- आदिवासी और पिछड़े वर्ग के लोगों को विकास की मुख्यधारा से जोड़ने में नाकाम रहे हैं। इसीलिए नक्सलवाद आज हमारे देश की आन्तरिक सुरक्षा के लिए नासूर बना हुआ है।
- देश में प्रत्येक नागरिक को व्यक्तिगत सुरक्षा देने में असफल रहे हैं। सुरक्षा चाहे किसी भी स्तर की हो सामाजिक, शारीरिक, आर्थिक आदि।
- नागरिकों द्वारा अपने मतदान के प्रयोग से जन प्रतिनिधियों को चुनने का जो राजनीतिक अधिकार प्राप्त हुआ है, इसके तहत आज भी ऐसे लोग जन प्रतिनिधि बन जाते हैं जो अपराधी रहे हों। इनके निर्वाचन पर प्रतिबंध लगाने की आवश्यकता है।
- केन्द्र और राज्य सरकारों के मध्य अनेक मामलों को लेकर विवाद हो जाता है। ऐसी स्थिति पर भारतीय संघीय ढाँचे को आघात पहुँचता है, राजनीतिक अस्थिरता का माहौल बन जाता है, अर्थात् केन्द्र और राज्यों के मध्य अच्छे सम्बन्ध बनाने में नाकाम रहे हैं। ऐसी स्थिति में राष्ट्रीय हितों और राज्यों के हितों के बीच टकराव की स्थिति उत्पन्न हो जाती है, जो देश की एकता और अखण्डता को बनाए रखने के लिए अच्छे संकेत नहीं हैं।

◆◆◆

राष्ट्रीय प्रतीक का निरंतर निरादर

वंदे मातरम् का आदर राष्ट्रीय कर्तव्य है। संविधान के अनुच्छेद 51ए में संविधान का पालन, राष्ट्रध्वज, राष्ट्रगान का आदर व राष्ट्रीय आंदोलन के प्रेरक उच्च आदर्शों का पालन मूल कर्तव्य है।

- हृदयनारायण दीक्षित

राष्ट्रभाव का विकल्प नहीं होता। वंदे मातरम् भारतीय राष्ट्रभाव की काव्य अभिव्यक्ति है। यह साधारण गीत नहीं, राष्ट्रगीत है। संविधान सभा ने 24 जनवरी,1950 को इसे राष्ट्रगीत स्वीकार किया। सभा के अध्यक्ष डॉ.राजेंद्र प्रसाद ने कहा, "एक मुद्दा विचार के लिए बाकी है अर्थात राष्ट्रगान का प्रश्न। प्रस्ताव के माध्यम से निर्णय लेने से बेहतर है कि मैं राष्ट्रगान के संबंध में कुछ कहूं।" जन-गण-मन वाली संगीत रचना भारत का राष्ट्रगान है। "वंदे मातरम् गीत ने स्वतंत्रता संग्राम में ऐतिहासिक भूमिका निभाई। उसे भी जनगणमन के समान सम्मान दिया जाएगा।" कार्यवाही रिकार्ड के अनुसार सभी सदस्यों ने इस पर हर्षध्वनि की। वंदे मातरम का आदर राष्ट्रीय कर्तव्य है। संविधान के अनुच्छेद 51ए में संविधान का पालन, राष्ट्रध्वज, राष्ट्रगान का आदर व राष्ट्रीय आंदोलन के प्रेरक उच्च आदर्शों का पालन मूल कर्तव्य है। चीन के 1982 के संविधान में भी निर्देश है कि 'नागरिकों का कर्तव्य है कि मातृभूमि की रक्षा करें।' रूसी परिसंघ के 1993 के संविधान में 'पितृभूमि की रक्षा कर्तव्य और बाध्यता है।' इसके पहले सोवियत संघ के संविधान में 'समाजवादी मातृभूमि की रक्षा कर्तव्य है। मातृभूमि के प्रति द्रोह से अधिक कोई गंभीर अपराध नहीं।' मातृभूमि या पितृभूमि कहने से धार्मिक भावना का कोई संबंध नहीं। इसके बावजूद अपने शपथ ग्रहण में सपा सांसद शफीकुर्रहमान बर्क ने वंदे मातरम् का विरोध किया। प्रतिकार में कई सदस्यों ने वंदे मातरम के नारे लगाए और बर्क से माफी मांगने की अपील की। दुनिया के किसी भी देश में राष्ट्रभाव या राष्ट्रगीत का विरोध नहीं होता, लेकिन भारत में विशिष्ट महानुभावों द्वारा होता है। बर्क ने राष्ट्रगीत के विरोध की भड़काऊ वजह ही बताई है। उनके मुताबिक यह इस्लाम विरोधी है। इसलिए वह इसका समर्थन नहीं कर सकते, लेकिन यह सच नहीं है। मौलाना अबुल कलाम आजाद की अध्यक्षता के समय कांग्रेस के सभी सत्रों में वंदे मातरम गाया जाता था। कांग्रेसी रफी अहमद किदवई मुसलमानों के भी वरिष्ठ नेता थे। वंदे मातरम के पक्षधर थे। आरिफ मोहम्मद खान लेखक और राजनेता हैं। उन्होंने वंदे मातरम का उर्दू अनुवाद किया। उन्होंने लिखा भी कि 'वंदे मातरम का विरोध मुस्लिम लीग ने शुरू किया था। इसके विरोध का कोई कारण इस्लाम में नहीं है। यह विभाजनवादी राजनीति है। राष्ट्रगीत के विरोधी संवैधानिक आदर्शों को खारिज करते हैं।' राष्ट्रगीत संविधान का राष्ट्रभाव है। शिक्षाविद् फिरोज बख्त अहमद ने 2006 में लिखा था 'एक मुस्लिम की हैसियत से मैं देशवासियों विशेषकर मुस्लिम समाज से कहूंगा कि कुछ लोग राजनीति से प्रेरित होकर वंदे मातरम को भावनात्मक मुद्दा बनाने की कोशिश करते हैं।' प्रख्यात संगीतकार एआर रहमान ने वंदे मातरम को संगीत के नए आयाम दिए। 'मां तुझे सलाम' में इस्लाम विरोध नहीं है।

वंदे मातरम इस्लाम विरोधी नहीं है। मां संसार की आदि-अनादि अनुभूति है। इस्लामी विश्वास में जन्नत बेहतरीन स्थिति है। हदीस

में 'मां के पैरों' के नीचे जन्नत बताई गई है। वेदों में पृथ्वी माता है। हमारे शास्त्रों में यह बातें न भी होतीं तब भी हमें स्वाधीनता संग्राम के बीजमंत्र और संवैधानिक राष्ट्रगीत को खारिज करने का अधिकार नहीं है। वंदे मातरम के ऐसे ही विरोध पर लोकसभा में अटल बिहारी वाजपेयी ने मार्मिक प्रतिक्रिया दी थी। उन्होंने कहा था, "ऐसे मुद्दों पर किसी को भी असहमत होने की इजाजत नहीं दी जा सकती। कल वे कहेंगे कि हम तिरंगे के सामने नहीं झुकेंगे। हिन्दुस्तान में रहने वाले हर इंसान को तिरंगे के सामने झुकना पड़ेगा।" आज फिर वंदे मातरम का विरोध हो रहा है। कोई भी राष्ट्रभक्त इसे राष्ट्रद्रोह कह सकता है। तब उन्हें यह अतिरेक प्रतिक्रिया लगेगी। ऐसे लोगों को राष्ट्रीय प्रतीकों का आदर करना सीखना होगा। अनेक मुस्लिम देशों के राष्ट्रगीतों में भी वंदे मातरम जैसे प्रतीक है।

वंदे मातरम् में यह 'धरती सुजला, सुफला और मलयज शीतला' है। बांग्लादेश के राष्ट्रगीत में यह 'आमार सोनार' है। स्वर्ण दीप्ति वाली है। इस्लामी देश मिस्र के राष्ट्रगीत में भी धरती माता है। मालदीव के राष्ट्रगीत में कई बार सलाम है। जार्डन में बादशाह को सलाम है। ऐसे राष्ट्रगीतों में कोई इस्लाम विरोधी भावना नहीं है तो वंदे मातरम में इस्लाम विरोध का फिर आखिर क्या औचित्य? इसकी वजह विभाजनकारी राजनीति है। मुस्लिम लीग के अध्यक्ष सैयद अली इमाम ने अमृतसर अधिवेशन में वंदे मातरम पर हमला बोला। फिर मुहम्मद अली जिन्ना ने वंदे मातरम के विरोध को अपना अलगाववादी हथियार बना लिया। वह देश तोड़ने में कामयाब रहे। स्वतंत्र भारत की राजनीति में भी अक्सर जिन्ना का प्रेत जाग जाता है।

वैदिक संस्कृति में पृथ्वी माता है। इसी सांस्कृतिक प्रवाह में बंकिम चंद्र ने वंदे मातरम् लिखा। यह 1882 में प्रकाशित उनके उपन्यास 'आनंदमठ' का भाग है। तीन साल बाद 1885 में कांग्रेस बनी। एक वर्ष बाद कलकत्ता के कांग्रेस अधिवेशन में हमेंद्र बाबू ने वंदे मातरम गाया। अध्यक्ष मो. रहमत उल्लाह भी मंच पर थे। विरोध नहीं हुआ। 1886 में कलकत्ता कांग्रेस अधिवेशन में रवींद्र नाथ टैगोर ने इसे छंदबद्ध देश राग एक ताल में गाया। बंगाल विभाजन के दौर में धरती आकाश तक वंदे मातरम् का जयघोष था। डरी सत्ता ने वंदे मातरम पर प्रतिबंध लगाया। 1905 के वाराणसी के कांग्रेस अधिवेशन में भी वंदे मातरम् गाया गया। वहीं कांग्रेस ने वंदे मातरम को राष्ट्रगीत स्वीकार किया। लाला लाजपतराय ने उर्दू में लाहौर से 'वंदे मातरम्' अखबार निकाला। विपिन चंद्र पाल और योगी अरविंद भी इसके संपादक रहे। इस पर 1907 में मुकदमा चला। पाल ने इस कार्रवाई को राष्ट्रद्रोह कहा। उन्हें छह माह की सजा हुई। तमिल कवि सुब्रमण्यम भारती ने इसे तमिल में गाया और पंतलु ने तेलुगु में। इसकी जड़ें भारत की धरती, आकाश और पाताल में हैं।

कांग्रेस के काकीनाडा अधिवेशन में प्रख्यात संगीत सर्जक पं. विष्णु दिगंबर पुलस्कर के वंदे मातरम गायन के समय अध्यक्ष मो. जौहर अली ने विरोध किया। 1937 में डरी कांग्रेस ने वंदे मातरम को संक्षिप्त किया। स्वतंत्रता दिवस पर आकाशवाणी के निदेशक ने पं. ओंकारनाथ ठाकुर को संदेश दिया कि सरदार पटेल ने आपको वंदे मातरम गायन के लिए बुलाया है। ठाकुर ने कहा कि हम पूरा गाएंगे। उन्हें सहमति मिली, उन्होंने पूरा गाया। वंदे मातरम के अंतरसंगीत ने महान गायकों को आकर्षित किया। यदुनाथ भट्ट ने इसे राग मल्हार, हीराबाई बड़ोदकर ने तिलक कामोद व पुलस्कर

ने कई राग मिलाकर गाया। अभ्यंकर ने खंभावती व कृष्णराव ने राग झिझोटी में गाया, लेकिन राजनीति ने इसे 'तुष्टीकरण राग' में गाया।

स्वाधीनता संग्राम में यह जन-जन की प्रेरणा था। गांधी जी ने 1905 में ही इसे राष्ट्रगीत बनाने की पैरवी की थी। वह राष्ट्रगीत बना। फिर इसे हिंदुत्व से जोड़कर इसका विरोध हुआ। गांधी जी ने 'हरिजन' में लिखा 'मुझे नहीं लगता कि यह हिंदू गीत है। हम बुरे दिन देख रहे हैं।' गांधी जी 1937 में बुरे दिन देख रहे थे और हम 2019 की लोकसभा में। वंदे मातरम के विरोधियों से प्रार्थना है कि वे नए भारत का संज्ञान लें। राष्ट्रभाव-राष्ट्रगीत का सम्मान करें।

(लेखक उत्तर प्रदेश विधानसभा के अध्यक्ष हैं)

◆◆◆

भारतीय कंपनियों को वैश्विक कंपनियों के बराबर अवसर उपलब्ध कराना जरूरी है

ई-कॉमर्स नीति में बदलाव की जरूरत

– जयंतीलाल भंडारी

ई-कॉमर्स नीति के नए मसौदे में डेटा के स्थानीय स्तर पर भंडारण के विभिन्न पहलुओं पर जोर देना होगा और इसे एक अहम आर्थिक संसाधन के रूप में मान्यता देनी होगी

पिछले कुछ समय से देश में ई-कॉमर्स नीति में बदलाव की जरूरत महसूस की जा रही है। केंद्र सरकार ने इसके संकेत भी दिए हैं। इसके लिए उसने पिछले कार्यकाल में उद्योग संवर्धन एवं आंतरिक व्यापार विभाग द्वारा नई ई-कॉमर्स नीति का मसौदा विभिन्न पक्षों के विचार-मंथन के लिए जारी किया था। इस मसौदे में ऐसी कुछ बातें खासतौर पर कही गई हैं जिनका संबंध ई-कॉमर्स की वैश्विक और भारतीय कंपनियों के लिए समान अवसर मुहैया कराने से है ताकि छूट और विशेष बिक्री के जरिए कोई बाजार को बिगाड़ने का काम न कर सके।

रिटेल में क्रांति

मसौदे में कहा गया है कि यह सरकार का दायित्व है कि ई-कॉमर्स से देश की विकास संबंधी आकांक्षाएं पूरी हों तथा बाजार भी विफलता और विसंगति से बचा रहे। इस मसौदे के तहत ई-कॉमर्स कंपनियों द्वारा ग्राहकों के डेटा की सुरक्षा और उसके व्यावसायिक इस्तेमाल को लेकर पाबंदी लगाए जाने का प्रस्ताव है। इसमें ऑनलाइन शॉपिंग से जुड़ी कंपनियों के बाजार, बुनियादी ढांचा, नियामकीय और डिजिटल अर्थव्यवस्था जैसे बड़े मुद्दे शामिल हैं। यह मुद्दा भी है कि ऑनलाइन शॉपिंग कंपनियों के माध्यम से निर्यात कैसे बढ़ाया जा सकता है। नई ई-कॉमर्स नीति के इस मसौदे पर ई-कॉमर्स कंपनियों के साथ-साथ

विभिन्न संबंधित पक्षों ने सुझाव प्रस्तुत किए हैं। देश के उद्योग-कारोबार संगठनों ने साफ कर दिया है कि वे मसौदा नीति में पूरी तरह से सुधार चाहते हैं क्योंकि उनका मानना है कि इसमें छोटे खुदरा कारोबारियों और ट्रेडर्स के हितों का अधिक ध्यान रखा जाना चाहिए। चूंकि ई-कॉमर्स में विदेशी निवेश के मानक बदले गए हैं लिहाजा कंपनियों में ढांचागत बदलाव की आवश्यकता है। ई-कॉमर्स नीति में विदेशी कारोबारियों की ही नहीं, घरेलू कारोबारियों की भी अहम भूमिका होनी चाहिए। देश में खुदरा कारोबार में जैसे-जैसे विदेशी

निवेश बढ़ा है वैसे-वैसे ई-कॉमर्स की रफ्तार बढ़ती गई। हाल ही में प्रकाशित डेलॉय इंडिया और रिटेल एसोसिएशन ऑफ इंडिया की रिपोर्ट में बताया गया है कि भारत का ई-कॉमर्स बाजार वर्ष 2021 तक 84 अरब डॉलर का हो जाएगा। वर्ष 2017 में यह 24 अरब डॉलर का था।

भारत में ई-कॉमर्स बाजार सालाना 32 प्रतिशत की दर से बढ़ रहा है। इसने देश में खुदरा कारोबार (रिटेल सेक्टर) में क्रांति ला दी है। भारत में इंटरनेट के उपयोगकर्ताओं की संख्या 60 करोड़ से भी अधिक होने के कारण ई-कॉमर्स की रफ्तार तेजी से बढ़ रही है। दुनिया में चीन के बाद भारत दूसरा सबसे बड़ा इंटरनेट यूजर देश बन गया है। संसार के कुल इंटरनेट उपयोगकर्ताओं में भारत का हिस्सा 12 फीसदी है। ई-कॉमर्स बाजार की यह वृद्धि देश में बढती आबादी, तेज शहरीकरण और मध्य वर्ग के तेजी से बढ़ने के चलते हो रही है। जरूरी है कि देश की नई ई-कॉमर्स नीति बनाने के साथ-साथ डेटा संरक्षण कानून भी बनाया जाए। ये दोनों कानून बड़े पैमाने पर एक दूसरे के क्षेत्र में हस्तक्षेप करते हैं। अगर इसका ध्यान नहीं रखा गया तो एक दूसरे से टकराव हो सकता है। नई वैश्विक आर्थिक व्यवस्था के तहत भविष्य में डेटा की वही अहमियत होगी जो आज कच्चे तेल की है।

उल्लेखनीय है कि आर्थिक संदर्भ में डेटा एक ऐसा क्षेत्र है जहां कोई नियम-कानून नहीं है। इसका एक पहलू नागरिक और राजनीतिक अधिकार है जो निजता से जुड़ा है जबकि दूसरा पहलू यह है कि डिजिटल अर्थव्यवस्था में डेटा एक बुनियादी संसाधन है। जिस देश के पास जितना ज्यादा डेटा संरक्षण होगा, वह देश आर्थिक रूप से उतना मजबूत होगा। ई-कॉमर्स नीति के नए मसौदे में डेटा के स्थानीय स्तर पर भंडारण के विभिन्न पहलुओं पर जोर देना होगा और इसे एक अहम आर्थिक संसाधन के रूप में मान्यता देनी होगी। सरकार ने स्पष्ट किया है कि वह डेटा पर नियंत्रण चाहती है और खास डेटा को भारत में ही रखना चाहती है। डेटा के देश में ही भंडारण के पीछे मकसद यह सुनिश्चित करना है कि व्यक्तिगत जानकारी का संरक्षण हो सके। तमाम तरह की निजी सूचनाओं पर उपभोक्ताओं का ही नियंत्रण रहे। डेटा स्वामित्व भविष्य में देश की आर्थिक वृद्धि के लिहाज से भी अहम है।

भारत के उपभोक्ताओं से संबंधित डेटा का पिछले कुछ समय में विदेशी कंपनियों ने जमकर उपयोग किया है। नई ई-कॉमर्स नीति के तहत सरकार द्वारा भारत के बढ़ते हुए ई-कॉमर्स बाजार में उपभोक्ताओं के हितों और उत्पादों की गुणवत्ता संबंधी शिकायतों के संतोषजनक समाधान के लिए एक नियामक भी रखना होगा। सरकार को देश में ऐसी बहुराष्ट्रीय ई-कॉमर्स कंपनियों पर उपयुक्त नियंत्रण करना होगा जिन्होंने भारत को अपने उत्पादों का डंपिंग ग्राउंड बना दिया है। पाया गया है कि कई बड़ी विदेशी ई-कॉमर्स कंपनियां टैक्स की चोरी करते हुए देश में अपने उत्पाद बड़े पैमाने पर भेज रही हैं। ये कंपनियां इन उत्पादों पर गिफ्ट या सैंपल का लेबल लगाकर इन्हें भारत में भेज देती हैं।

तालमेल के साथ

नई ई-कॉमर्स नीति के तहत हर ई-कॉमर्स कारोबारी के लिए पंजीकरण की व्यवस्था होनी चाहिए, चाहे वह छोटा हो या बड़ा। मार्केट प्लेस व अन्य में साफ-साफ अंतर करना होगा। नीति का उल्लंघन करने वालों के खिलाफ तत्काल और प्रभावी कार्रवाई करने का प्रावधान करना होगा। अनुमति मूल्य, भारी छूट और घाटे के वित्त पोषण पर लगाम लगाने की व्यवस्था करनी होगी, जिससे सबको समान अवसर मिल सके। आशा की जानी चाहिए कि मोदी- 2 सरकार ई-कॉमर्स कंपनियों तथा देश के उद्योग-कारोबार से संबंधित विभिन्न पक्षों के हितों के बीच उपयुक्त तालमेल के साथ अर्थव्यवस्था को लाभान्वित करने वाली नई ई-कॉमर्स नीति शीघ्र घोषित करेगी। इसमें कोई संदेह नहीं कि यह नीति देश की विकास दर को बढ़ाने में भी प्रभावी भूमिका निभाएगी।

◆◆◆

With Best Compliments
From
A Well Wisher

ट्रेड वार के दौर में कई ग्लोबल कंपनियां चीन से

ग्लोबल मैन्युफैक्चरिंग हब

ट्रेड वॉर से एक बार फिर ग्लोबल सप्लाई चेन को लेकर डर बढ़ गया है क्योंकि इलेक्ट्रॉनिक असेंबली में चीन का दबदबा है। जापान में भूकंप के बाद कई कंपनियों ने सप्लाई चेन के रिस्क की पहचान की थी और उसे कम करने की पहल की थी। ट्रेड वॉर की वजह से चीन को लेकर ऐसा ही ट्रेंड शुरू होता दिख रहा है।

– मृत्युंजय राय

अमेरिका और चीन के बीच चल रहे 'व्यापार युद्ध' से दुनिया की मैन्युफैक्चरिंग ताकत बनने का मौका भारत के हाथ लगा है। जापान और चीन पहले यह करिश्मा कर चुके हैं। अब इसको दोहराने की बारी एशिया की तीसरी बड़ी इकॉनमी भारत की है, जिसकी शुरुआत अच्छी हुई है। विदेशी ब्रोकरेज फर्म यूबीएस ने अप्रैल की एक रिपोर्ट में कहा था, 'हमें लगता है कि चीन से मैन्युफैक्चरिंग के शिफ्ट होने का कई साल चलने वाला ट्रेंड शुरू हुआ है, जो भारत के लिए सुनहरा मौका साबित हो सकता है।' हाल में खबर आई थी कि लोकसभा चुनाव खत्म होने के बाद करीब 200 अमेरिकी कंपनियां चीन से अपना मैन्युफैक्चरिंग बेस भारत शिफ्ट करने की योजना बना रही हैं। भारत में इन कंपनियों की दिलचस्पी सिर्फ चीन के साथ ट्रेड वॉर की वजह से नहीं बढ़ी है। अगर ट्रेड मामलों पर अमेरिका और चीन में सुलह हो जाती है, तब भी ऊंची लेबर कॉस्ट और सख्त पर्यावरण नियमों की वजह से ग्लोबल कंपनियां चीन से मैन्युफैक्चरिंग बेस और जगहों पर शिफ्ट करेंगी।

मेक इन इंडिया

मल्टीनेशनल कंपनियां अपनी सप्लाई चेन का रिस्क कम करने के लिए भी चीन के बजाय भारत जैसे ठिकानों की तलाश में हैं। इस रिस्क को ऐसे समझा जा सकता है कि साल 2011 में जापान में भूकंप और सूनामी के बाद प्रिंटेड सर्किट बोर्ड्स के लिए कॉपर फॉइल, चिप बनाने के लिए सिलिकॉन वेफर्स जैसे कंपोनेंट की सप्लाई प्रभावित होने से कई इलेक्ट्रॉनिक्स कंपनियों का प्रॉडक्शन ठप हो गया था। ट्रेड वॉर से एक बार फिर ग्लोबल सप्लाई चेन को लेकर डर बढ़ गया है क्योंकि इलेक्ट्रॉनिक असेंबली में चीन का दबदबा है। जापान में भूकंप के बाद कई कंपनियों ने सप्लाई चेन के रिस्क की पहचान की थी और उसे कम करने की पहल की थी। ट्रेड वॉर की वजह से चीन को लेकर ऐसा ही ट्रेंड शुरू होता दिख रहा है। मैन्युफैक्चरिंग के लिए सस्ते श्रम, पूंजी, इंफ्रास्ट्रक्चर, स्किल्ड मैनपावर और तकनीक की जरूरत है। भारत में सस्ते श्रम की कमी नहीं है। इंफ्रास्ट्रक्चर लगातार बेहतर हो रहा है। पूंजी की कमी विदेशी निवेश और हाउसहोल्ड सेविंग्स से पूरी की जा सकती है। तकनीक के लिए विदेशी कंपनियों को आकर्षित

निकलकर भारत में कारोबार लगाना चाहती हैं

बन सकता है भारत

करना होगा। पिछले तीन-चार साल में ईज ऑफ डूइंग बिजनेस और खासतौर पर अपैरल, लेदर और इलेक्ट्रॉनिक्स जैसे सेगमेंट में बेहतर नीतियों से भी मैन्युफक्चरिंग को लेकर भारत का आकर्षण बढ़ा है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने पहले कार्यकाल में 'मेक इन इंडिया' और इंडस्ट्री को तैयार कामगार मुहैया कराने के लिए 'स्किल इंडिया' जैसी पहल शुरू की थी, लेकिन अब तक इनका उम्मीद के मुताबिक नतीजा नहीं निकला है। डिफेंस में मेक इन इंडिया की बड़ी गुंजाइश है। राफेल विमानों के लिए फ्रांस की दिग्गज कंपनी दसॉ भारत में प्लांट लगाने जा रही है। अमेरिका की लॉकहीड मार्टिन ने कहा है कि भारत अगर 114 एफ-21 विमानों के ऑर्डर देता है तो वह किसी देश को ये प्लेन नहीं बेचेगी। उसने इन्हें भारत में ही बनाने का वादा किया है। हाल ही में भारतीय वायुसेना ने 18 अरब डॉलर में 114 लड़ाकू विमानों के लिए टेंडर मंगाए हैं, जिसे हाल के वर्षों में दुनिया का सबसे बड़ा मिलिट्री ऑर्डर माना जा रहा है।

दुनिया की दिग्गज डिफेंस कंपनियां मेक इन इंडिया के लिए लार्सन एंड टुब्रो, रिलायंस, टाटा, महिंद्रा, भारत फोर्ज जैसे देश के बड़े कारोबारी समूहों के साथ पार्टनरशिप कर रही हैं। वित्त वर्ष 2019 में भारत का डिफेंस एक्सपोर्ट 10,000 करोड़ रुपये तक पहुंचने का अनुमान है, जो तीन साल पहले 1500 करोड़ रुपये का था। इलेक्ट्रॉनिक्स इंडस्ट्री में भी सरकार को मेक इन इंडिया में शुरुआती सफलता मिली है। तैयार फोन के आयात पर सरकार की सख्ती के कारण इनका आयात 2014-15 के 47,439 करोड़ से 80 पर्सेंट घटकर 2018-19 में फरवरी तक 9,592 करोड़ रुपये रह गया था। हालांकि, इस दौरान मोबाइल कंपोनेंट्स का आयात 47,011 करोड़ से बढ़ कर 1.02 लाख करोड़ का हो गया। इसका कारण यह है कि हैंडसेट कंपनियां विदेश से कंपोनेंट मंगाकर फोन भारत में असेंबल कर रही हैं। किसी स्मार्टफोन की कीमत में असेंबलिंग से सिर्फ 5-6 पर्सेंट की वैल्यू बढ़ती है। हालांकि, इस मामले में भी तस्वीर बदल रही है।

पिछले साल जुलाई में सैमसंग ने ग्रेटर नोएडा में मोबाइल हैंडसेट बनाने का प्लांट शुरू किया, जिसकी सालाना क्षमता 12 करोड़ यूनिट्स की होगी। यह दक्षिण कोरिया की कंपनी का दुनिया में कहीं भी सबसे बड़ा प्लांट है। भारत की सबसे बड़ी स्मार्टफोन कंपनी शाओमी अपने सप्लायर्स को यहां प्लांट्स लगाने को कह रही है। इससे देश की मोबाइल फोन इंडस्ट्री में वैल्यू एडिशन होगा। ऐपल भी भारत में फोन मैन्युफैक्चरिंग शुरू करने जा रही है। उसकी वेंडर फॉक्सकॉन पहले से भारत में फोन बना रही है। जापान और चीन ने दुनिया की मैन्युफैक्चरिंग ताकत बनने के लिए मजबूत राजनीतिक इच्छाशक्ति दिखाई थी। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भी अपने पहले कार्यकाल में इस मामले में अपने इरादे स्पष्ट किए थे, लेकिन बात सिर्फ इतने से नहीं बनेगी। भारत को मेक इन इंडिया को लेकर जो शुरुआती सफलता मिली है, उसे और आगे ले जाना होगा।

तकनीक और पूंजी

सरकार को पॉलिसी में बार-बार बदलाव करने से बचना होगा, तभी विदेशी कंपनियां तकनीक और पूंजी लेकर यहां आएंगी। मसलन, पिछले साल ई-कॉमर्स पॉलिसी में संशोधन और डेटा लोकलाइजेशन की शर्त से अमेरिकी कंपनियां नाराज हैं। दूसरी बात यह है कि यह काम रातोंरात नहीं होगा। इसके लिए लॉन्ग टर्म पॉलिसी बनाने के साथ उसके लक्ष्य हासिल करने के लिए शिद्दत से काम करना होगा। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 2014 में मेक इन इंडिया को लॉन्च करते वक्त ग्लोबल कंपनियों से कहा था, 'आइए, भारत में सामान बनाइए। आप इसे कहीं भी बेचिए, लेकिन बनाइए हमारे यहां।' अगर उनका यह ख्वाब पूरा होता है तो देश के मैन्युफैक्चरिंग सेक्टर और ग्रोथ को तो पंख लगेंगे ही, इससे जॉबलेस ग्रोथ की शिकायत भी दूर हो सकती है।

◆◆◆

राष्ट्रीयता और अन्तर्राष्ट्रीयता के इस संघर्ष के संदर्भ में पश्चिम का मानव जाति के संबंध में जो विचार है उसमें प्रगति की कोई संभावना नहीं दिखाई देती। इसका कारण यह है कि उनके समस्त विचार संकेंद्री (Homocentric) हैं। इसका आशय यह है कि इस समस्त विश्व का केन्द्र मानव जाति है और उसी के चारों ओर पश्चिमी जगत् का वैचारिक आंदोलन घूमता रहा है।

एकात्म मानववाद

– दीनदयाल उपाध्याय

आज स्वतंत्रता – प्राप्ति के ६३ वर्ष के उपरान्त भी भारत के सामने एक महत्वपूर्ण प्रश्न बना हुआ है कि सम्पूर्ण जीवन की रचनात्मक दृष्टि से कौन–सी दिशा ली जाये? इस संबंध में सामान्यतया लोग सोचने के लिए तैयार नहीं। वे तो तात्कालिक प्रश्नों का ही विचार करते हैं। कभी आर्थिक प्रश्नों को लेकर उनको सुलझाने का प्रयत्न होता है और कभी राजनीतिक अथवा सामाजिक प्रश्नों को सुलझाने के प्रयत्न किये जाते हैं। किंतु मूल दिशा का पतन होने के कारण ये जितने प्रयत्न होते हैं, न तो उनमें पूरा उत्साह रहता है, न उनमें आनंद का अनुभव होता है और न उनके द्वारा जैसी कि सफलता मिलनी चाहिए वैसी सफलता ही मिल पाती है।

आधुनिक बनाम पुरातन

देश की दिशा के संबंध में विचार करने वालों में दो प्रकार के लोग हैं। एक तो वे हैं जो कि भारत की हजारों वर्षों से चली आने वाली प्रगति की दिशा में, पराधीन होने पर जहाँ–तहाँ रुक गया, वहाँ से उसे आगे बढ़ाना चाहिए– यह विचार ले कर चलते हैं। दूसरी और वे लोग हैं जो कि भारत की उस पुरानी वस्तु का भिन्न–भिन्न कारणों से (काल के कारण से या मूलत: उस अवस्था को अयोग्य मानकर) उसके संबंध में विचार करने को तैयार नहीं। इसके विपरीत पश्चिम में जो आंदोलन हुए, राजनीतिक और आर्थिक क्षेत्रों में जो विचार–सारणियाँ जन्मीं, उनको ही वे प्रगति की दिशा समझ कर उन संपूर्ण विचारधाराओं और आंदोलनों को भारत के ऊपर आरोपित करने का प्रयत्न करते हैं। भारत उन्हीं का किसी–न–किसी प्रकार से प्रतिबिम्ब बने, इसी विचार को लेकर वे चलते हैं। ये दोनों ही प्रकार के विचार सत्य नहीं हैं। किंतु, उनको पूर्णत: अमान्य करके भी चलना ठीक नहीं होगा। उनमें सत्यांश अवश्य है। जो यह विचार करते हैं कि जहाँ हम रुक गये थे वहीं लौट कर पुन: चलना आरंभ करें, वे यह भूल जाते हैं कि लौटकर चलना वांछनीय हो या न हो, असंभव अवश्य है, क्योंकि समय की गति को पीछे नहीं ले जाया जा सकता।

पुराना छूट नहीं सकता

हजारों वर्षों में जो कुछ हमने किया है, वह विवशता में हमें मिला हो या प्रेमपूर्वक हमने मिलाया हो, उसमें से हर वस्तु को हटा करके नहीं चल सकते। साथ ही इस काल में हमनें स्वयं भी कुछ न कुछ अपने जीवन में निर्माण किया है। जो नयी परिस्थितियाँ पैदा हुईं, जो नयी चुनौतियाँ आयीं उनमें हम सदैव वैरागी रुप में निष्क्रिय होकर नहीं बैठे। बाहर वालों ने जो कुछ किया, हम केवल उसका प्रतिकार ही नहीं करते रहे, हमने भी परिस्थितियों के अनुसार अपने जीवन को ढालने का प्रयत्न किया। इसलिए उस सब जीवन को भुलाकर तो चल नहीं सकते।

विदेशी विचार सार्वलौकिक नहीं

इसी प्रकार जो लोग विदेशी जीवन तथा विचारों को भारत की प्रगति का आधार बनाकर चलना चाहते हैं, वे भी यह भूल जाते हैं कि ये विदेशी विचार एक परिस्थिति–विशेष तथा प्रवृत्ति–विशेष की उपज है, ये सार्वलौकिक नहीं है। उन पर पश्चिमी देशों की राष्ट्रीयता, प्रकृति और संस्कृति की अमिट छाप है। साथ ही वहाँ के ये बहुत से विचार अब पुराने पड़ चुके हैं। कार्ल मार्क्स का सिद्धांत देश और काल दोनों ही दृष्टियों से इतना बदल चुका है कि आज हम मार्क्सवादी विश्लेषण को तोते की तरह रटकर आँख मूँद कर भारत पर लागू करें तो यह वैज्ञानिक अथवा विवेकपूर्ण दृष्टिकोण नहीं कहा जायेगा। वह रुढ़िवादिता होगी। जो अपने देश की रुढ़ियों को मिटाकर सुधार का दावा करें, वे विदेश की रुढ़ियों के दास बन जायें, यह तो आश्चर्य का विषय है।

अपना देश: अपनी परिस्थितियाँ

प्रत्येक देश की अपनी विशेष ऐतिहासिक, सामाजिक और आर्थिक परिस्थिति होती है और उस समय उस देश के जो भी नेता और विचारक होते हैं, वे उस परिस्थिति में से देश को आगे बढ़ाने की दृष्टि से मार्ग निर्धारित करते हैं। अपनी समस्याओं के समाधान के लिए जो हल उन्होंने सुझाये, वे उसी प्रकार, भिन्न परिस्थितियों में रहने वाले समाज पर पूरी तरह लागू हो जायें, यह विचार करना गलत है।

एक सामान्य उदाहरण लें। विश्व भर में मनुष्यों के शरीर के अंगों की क्रिया समान होते हुए भी जो औषधि इंग्लैण्ड में कारगर होती है, वह भारत में भी उपयोगी सिद्ध होगी यह निर्विवाद नहीं कहा जा सकता। रोगों का संबंध जलवायु, आचार–विचार, खानपान तथा वंश–परंपरा से रहता है। ऊपर से देखने पर रोग एक–सा दिखाई देने पर भी उसकी औषधि सब मनुष्यों के लिए एक नहीं हो सकती।

#LIFEUPGRADED

— AT —

Terraform
DWARKA
A HOME FOR EVERY NEED

1, 2 & 3 BHK PREMIUM HOMES
GHATKOPAR (E)

A never before living experience takes shape at Dwarka, Ghatkopar(E), The only address that endows you with premium amenities, enriched luxuries and superfast connectivity.

Now upgrade to a faster lane and always stay connected to convenience with easy access to SCLR, Eastern Express Highway, Western Express Highway, Eastern Freeway and JVLR.

So come and gift yourself an upgraded lifestyle to make your life happy and future ready.

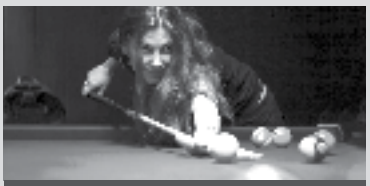
Exciting Indoor Games

Kid's Play Area

Indoor Pool Facility

2 Level Basement & 1 Level Podium Parking

NEW LIVING EXPERIENCES

Indoor Jogging Facility | Indoor Pool Facility | Ultra-modern Fitness Centre | Indoor Games | Celebration Arena | 2 Level Basement & 1 Level Podium Parking | CCTV & Intercom Facility | Video Door Phone

Call: - 022-6231 0772

Site: Next to Neelyog Mall, 60 ft. Road Patel Chowk, Near Neelkanth Regent, Near Metro and Railway Station, Ghatkopar (E), Mumbai – 400 077 | **E:** dwarka@terraformrealty.com | **W:** www.terraformrealty.com

Premium Homes by:
Terraform Realty®
(Formerly Everest Developers)

Disclaimer: All the plans, drawings, facilities etc. are subject to the approval of the respective authorities and would be changed if required. The discretion remains with Terraform Realty. All renderings and maps are artist's conception and not actual depiction of the walls, driveways or landscaping and Developers reserves the right to make changes at any time, without notice or obligation to the information contained in this Ad.

अपने परिवार का स्वास्थ्य सुरक्षित कीजिए होमियोपैथी के साथ।

हम तरह-तरह की चिकित्सा दशाओं जैसे कि एलर्जियों, घबराहट तथा अवसाद, बच्चों के रोग-विकार, पेट की समस्याओं, बालों का झड़ना, जोड़ों का दर्द, यौन संबंधी समस्याओं, स्त्रियों के रोगों तथा सभी उम्र के लोगों की अन्य रोगों का उपचार करते हैं तथा अमेरिकन क्वॉलिटी एसेसर्स द्वारा प्रमाणित हमारी सफलता दर ९१% है।

हमारे होमियोपैथिक डॉक्टर से कंसल्टेशन प्राप्त करें

(091677 91677 ✉ **DBH to 575758**

Dr Batra's®
MULTI-SPECIALTY HOMEOPATHY

१३० से अधिक शहर | २२५ क्लिनिक्स | ३५० होमियोपैथिक एक्सपर्ट्स | १ मिलियन संतुष्ट रोगी

सब रोगों और सब मनुष्यों के लिए एक ही औषधि का नारा लगाने वाले नीम-हकीम हो सकते हैं, चिकित्सक नहीं। आयुर्वेद में सिद्धांत बताया है – यद्देशस्य यो जन्तु: तद्देश्य तस्यौषधम्। इसलिए बाहर की जितनी भी बातें हैं उनको हम उसी प्रकार से लेकर अपने देश में चलें, यह तो समीचीन नहीं होगा। उसके द्वारा हम कभी प्रगति नहीं कर सकेंगे। किंतु दूसरी बात का भी विचार करना होगा कि ये जितनी भी बातें विश्व में हुई हैं, ये सबकी सब ऐसी नहीं कि उनका संबंध केवल देश विशेष के साथ ही हो। वहाँ भी मानव रहते हैं और मानव के चिंतन और क्रियाओं में से जो वस्तु पैदा होती है, उसका शेष मानवों के साथ भी कुछ न कुछ संबंध रह सकता है। इसलिए मानव के ज्ञान में जो कुछ अर्जित है उससे हम बिल्कुल आँख बंद करके चलें, यह भी बुद्धिमत्ता की बात नहीं होगी। उसमें से सत्य को हमें स्वीकार करना और असत्य को छोड़ना पड़ेगा। सार का भी अपनी परिस्थिति के अनुसार परिष्कार करना होगा। संक्षेप में यह कह सकते हैं कि जहाँ तक शाश्वत सिद्धांतों तथा स्थायी सत्यों का संबंध है, हम संम्पूर्ण मानव के ज्ञान और उपलब्धियों पर संकलित विचार करें। इन तत्वों में जो हमारा है उसे युगानुकूल और जो बाहर का है उसे देशानुकूल ढालकर हम आगे चलने का विचार करें।

आदर्शों का संघर्ष

पश्चिम की राजनीति अभी तक राष्ट्रीयता, प्रजातंत्र, समता या समाजवाद के आदर्शों को मानकर चली है। विश्वशांति के लिए भी बीच-बीच में प्रयत्न हुए हैं तथा विश्व-एकता के आदर्श की कल्पना भी लोगों ने की है-इन उद्देश्यों की प्राप्ति के साधन के रुप में लीग ऑफ नेशन्स तथा दूसरे विश्व युध्द के बाद संयुक्त राष्ट्र संघ को जन्म दिया गया। विभिन्न कारणों से ये सफल नहीं हुए। फिर भी ये उस दिशा में प्रयत्नशील अवश्य हैं। परन्तु, ये सभी आदर्श व्यवहार में अधूरे तथा विभिन्न समस्याओं को जन्म देने वाले सिध्द हुए हैं। राष्ट्रीयता से टकराकर उनके लिए घातक बन जाती है तथा विश्वशांति को नष्ट करती है। साथ ही विश्वशांति को यदि यथास्थिति का पर्याय मान लिया जाये तो बहुत-से राष्ट्र स्वतंत्र ही नहीं हो पायेंगे।

विश्व की एकता और राष्ट्रीयता में भी टकराव आता है। कुछ लोग विश्व – एकता के लिए राष्ट्रीयता को नष्ट करने की बात कहते हैं तो दूसरे विश्व-एकता को स्वप्न-जगत की बात बताकर अपने राष्ट्र के स्वार्थों को ही सर्वाधिक महत्व देते हैं। दोनों का मेल कैसे बिठाया जाये, इस प्रकार की समस्या प्रजातंत्र और समाजवाद के बीच उपस्थित होती है।

प्रजातंत्र में व्यक्ति-स्वातन्त्र्य तो है, परन्तु उसका विकास पूँजीवादी व्यवस्था के साथ शोषण और केन्द्रीयकरण के साधन के रुप में हुआ। शोषण मिटाने के लिए समाजवाद लाया गया। परन्तु उसने व्यक्ति की स्वतंत्रता और गरिमा को ही नष्ट कर दिया। आज विश्व किंकर्तव्यविमूढ़ है। उसे मार्ग नहीं दिख रहा कि वह कहाँ जाये? पश्चिम आज इस अवस्था में नहीं कि वह निर्विवाद रुप से आत्म-विश्वासपूर्वक कह सके नान्य: पन्था। वे स्वयं मार्ग टटोल रहे हैं, अत: उनका अंधानुकरण करने से तो अन्धेन नीयमाना यथान्ध: की ही उक्ति चरितार्थ होगी। इस परिस्थिति में हमारी दृष्टि भारतीय संस्कृति की ओर जाती है। क्या यह विश्व की समस्या के समाधान में कुछ योगदान कर सकती है?

संस्कृति का विचार करें

राष्ट्रीय दृष्टि से तो हमें अपनी संस्कृति का विचार करना ही होगा, क्योंकि वह हमारी अपनी प्रकृति है, स्वराज्य का स्वसंस्कृति से घनिष्ठ संबंध रहता है। संस्कृति का विचार न रहा तो स्वराज्य की लड़ाई स्वार्थी और पदलोलुप लोगों की राजनीतिक लड़ाई मात्र रह जायेगी। स्वराज्य तभी साकार और सार्थक होगा जब वह अपनी संस्कृति की अभिव्यक्ति का साधन बन सकेगा। इस अभिव्यक्ति में हमारा विकास भी होगा और हमें आनंद की अनुभूति भी होगी। अत: आज राष्ट्रीय और मानवीय दृष्टियों से आवश्यक हो गया है कि हम भारतीय संस्कृति के तत्वों का विचार करें।

भारतीय संस्कृति – एकात्मवादी

भारतीय संस्कृति की पहली विशेषता यह है कि वह संपूर्ण जीवन का, संपूर्ण सृष्टि का संकलित विचार करती है।उसका दृष्टिकोण एकात्मवादी है। टुकड़े-टुकड़ों में विचार करना विशेषज्ञ की दृष्टि से ठीक हो सकता है, परन्तु व्यवहारिक दृष्टि से उपयुक्त नहीं। पश्चिम की समस्या का मुख्य कारण उनका जीवन के संबंध में खण्डश: विचार करना तथा फिर उन सबको थेगली लगाकर जोड़ने का प्रयत्न है।

हम यह तो स्वीकार करते हैं कि जीवन में अनेकता अथवा विविधता है, किंतु उसके मूल में निहित एकता को खोज निकालने का हमने सदैव प्रयत्न किया है। यह प्रयत्न पूर्णत: वैज्ञानिक है। विज्ञानवेत्ता का प्रयत्न रहता है कि वह जगत में दिखने वाली अव्यवस्था में से व्यवस्था ढूँढ़ निकाले, उनके नियमों का पता लगाये तथा तदनुसार व्यवहार के नियम बनाये। रसायनशास्त्रियों ने संपूर्ण भौतिक जगत् में से कुछ आधारभूत तत्व ढूंढ़ निकाले तथा बताया कि सभी वस्तुएँ उनसे ही बनी हैं। भौतिकी उससे भी आगे गयी। उसने इन तत्वों के मूल में निहित शक्ति अर्थात् चेतना को ढूँढ़ निकाला। आज संपूर्ण जगत में चेतना का अविष्कार है।

दार्शनिक भी मूलत: वैज्ञानिक हैं। पश्चिम के दार्शनिक द्वैत तक पहुँचे। हीगेल ने थीसिस, एण्टीथीसिस तथा सिन्थेसिस का सिद्धांत रखा, जिसका आधार लेकर कार्ल मार्क्स ने अपना इतिहास और अर्थशास्त्र का विश्लेषण प्रस्तुत किया।

डार्विन ने मात्स्यन्याय को ही जीवन का आधार माना। किंतु हमने सम्पूर्ण जीवन में मूलभूत एकता का दर्शन किया। जो द्वैतवादी रहे, उन्होंने भी प्रकृति और पुरुष को एक-दूसरे का विरोधी अथवा परस्पर संघर्षशील न मान कर पूरक ही माना है। जीवन की विविधता अन्तर्भूत एकता का आविष्कार है और इसलिए उनमें परस्परानुकूलता तथा परस्पर पूरकता है। बीज की एकता ही पेड़ के मूल, तना, शाखा, पत्ते, फूल और फल के विविध रुपों में प्रकट होती है। इन सबके रंग, रुप तथा कुछ न कुछ मात्रा में गुण में भी अंतर होता है। फिर भी उनके बीज के साथ के एकत्व के संबंध को हम सहज ही पहचान सकते हैं।

परस्पर संघर्ष – विकृति का द्योतक

विविधता में एकता अथवा एकता का विविध रुपों में व्यक्तीकरण ही भारतीय संस्कृति का केन्द्रस्थ विचार है। यदि इस तथ्य को हमने हृदयंगम कर लिया तो फिर विभिन्न सत्ताओं के बीच संघर्ष नहीं रहेगा। यदि संघर्ष है तो वह प्रकृति का अथवा संस्कृति का द्योतक नहीं, विकृति का द्योतक है। जिस मात्स्यन्याय या जीवन संघर्ष को पश्चिम के लोगों ने ढूँढ़ निकाला, उसका ज्ञान हमारे दार्शनिकों को था। मानव-जीवन में काम, क्रोध आदि षड्विकारों को भी हमनें स्वीकार किया है। किंतु इन सब प्रवृत्तियों को अपनी संस्कृति अथवा शिष्ट व्यवहार का आधार नहीं बनाया। समाज में चोर और डाकू होते हैं। उनसे अपनी और समाज की रक्षा भी करनी चाहिए। किंतु उनको हम अनुकरणीय अथवा मानव-व्यवहार की आधारभूत प्रवृत्तियों का प्रतिनिधि मानकर नहीं चल सकते। जिसकी लाठी उसकी भैंस जंगल का विधान है। मानव की सभ्यता का विकास इस विधान को मानकर नहीं, बल्कि यह विधान न चल पाये, इस व्यवस्था के कारण ही सभ्यता का विकास हुआ है। आगे भी यदि बढ़ना हो तो हमें इस इतिहास को ध्यान में रखकर ही चलना होगा।

सृष्टि में जैसे संघर्ष दिखता है वैसे ही सहयोग भी दृष्टिगोचर होता है। वनस्पति और प्राणी दोनों एक-दूसरे की आवश्यकता को पूरा करते हुए ही जीवित रहते हैं। हमें ऑक्सीजन वनस्पतियों से मिलती है तथा वनस्पतियों के लिए आवश्यक कार्बन-डाइऑक्साइड प्राणिजगत से प्राप्त होती है। इस परस्पर-पूरकता के कारण ही संसार चल रहा है। संसार में एकता का दर्शन कर, उसके विविध रूपों के बीच पूरकता को पहचान कर उनमें परस्परानुकूलता का विकास करना तथा उसका संस्कार करना ही संस्कृति है। प्रकृति को ध्येय की सिद्धि के अनुकूल बनाना संस्कृति तथा उसके प्रतिकूल बनाना विकृति है। संस्कृति प्रकृति की अवहेलना नहीं करती, उसकी ओर दुर्लक्ष्य नहीं करती, बल्कि प्रकृति में जो भाव सृष्टि की

साल भर के
400/-

अभ्युदय वात्सल्यम्

राष्ट्रीय हिन्दी मासिक समाचार पत्रिका

आप हासिल कर सकते हैं 25% छूट के साथ। सब्सक्राइब करें राष्ट्रीय हिन्दी मासिक समाचार पत्रिका अभ्युदय वात्सल्यम्

राजनीति, खेल, अर्थजगत, शिक्षा, स्वास्थ्य और मनोरंजन से लेकर धर्म तक... हर महत्वपूर्ण मुद्दों पर अभ्युदय वात्सल्यम् की नजर होती है।

हाँ, मैं अभ्युदय वात्सल्यम् का ग्राहक बनना चाहता हूँ

नीचे अपनी पसंद के ऑफर पर निशान लगाएं और ग्राहक फॉर्म भर कर इस पते पर भेजें : आर-2/608, आर.एन.ए प्लाजा, राम मंदिर रोड, गोरेगांव (प), मुंबई - 400104.

टिक करें	अवधि	कुल अंक	कवर मूल्य (रु।)	आपको देना है (रु)	बचत
☐	3 वर्ष	36	1260	945	25%
☐	2 वर्ष	24	840	672	20%
☐	1 वर्ष	12	420	357	15%

चेक / डीडी से भुगतान

मैं कृपा प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड के पक्ष में भेज रहा हूँ ---------- दिनांक ---------- आहरित बैंक (बैंक का नाम)----------
चेक डीडी नं ---------- (मुंबई से बाहर के चेक के लिए 50 /- रु अतिरिक्त दें। ऐट पार चेक के लिए लागू नहीं)

अथवा मेरे कार्ड से वसूलें ☐ ☐ ☐ कार्ड नं ☐☐☐☐ ☐☐☐☐ ☐☐☐☐ ☐☐☐☐

कार्डधारक का नाम ☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐ कार्ड एक्सपायरी की तिथि ------- महीना ------ वर्ष -----

कार्डधारक के हस्ताक्षर: ---------- जन्म तिथि: ---------- दिन ---------- महीना---------- वर्ष ----------
नाम : ---------- पता ----------
---------- शहर ----------
राज्य : ---------- पिन ---------- फोन नं (निवास) ----------

मोबाइल फोन ---------- ई मेल: ----------

आप इन माध्यमों से भी सब्सक्राइब कर सकते हैं

फोन नं
022 -26771428

ई मेल
abhyudayvatsalyam@rediffmail.com

लॉग ऑन करें
www.avmagazine.in

कृपया ध्यान दें : ऑफर सीमित अवधि के लिए है। कृपा प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड के पास इस ऑफर या इससे जुड़ी किसी शर्त को खत्म करने या बढ़ाने का अधिकार आरक्षित है।

धारणा करने वाले तथा उसको अधिक सुखमय एवं हितकर बनाने वाले हैं, उनको बढ़ावा देकर दूसरी प्रकृतियों की बाधा को रोकना ही संस्कृति है।

एक छोटा-सा उदाहरण लें। भाई और भाई का संबंध, माता और पुत्री का संबंध, पिता और पुत्र का संबंध, बहिन और भाई का संबंध, ये प्रकृति की देन हैं। ये संबंध जैसे मनुष्यों में होते हैं, वैसे पशुओं में भी होते हैं। जैसे एक मां के दो बेटे भाई हैं, वैसे एक गाय के दो बछड़े भाई होंगे। परन्तु अंतर कहाँ होता है। बेचारा पशु उस प्रकृति के संबंध को भूल जाता है, वह उस आधार के ऊपर अपने बाकी संबंधों का निर्माण नहीं कर पाता। किंतु मानव इस बात को याद रखता है और याद रखकर उसके आधार पर अपने जीवन के व्यवहार की दिशा निश्चित करता है। इस विचार से वह अपने पारस्परिक संबंधों का निर्माण करने का प्रयत्न करता है। मानव-मूल्यों तथा उसकी निष्ठाओं का निर्धारण इसी आधार पर होता है। अच्छे और बुरे के संबंध में उसकी जो धारणाएँ निर्मित होती हैं, वे इसी आधार पर निर्मित होती हैं। देखने को तो जीवन में भाई-भाई के बीच प्रेम और वर दोनों ही मिलते हैं, किंतु हम प्रेम को अच्छा मानते हैं। बन्धु-भाव का विस्तार हमारा लक्ष्य रहता है। इसके विपरीत वैर अभीष्ट नहीं समझा जाता। वैर को मानव-व्यवहार का आधार बनाकर यदि इतिहास का विश्लेषण किया जाये और फिर उसमें एक आदर्श जीवन का स्वप्न देखा जाये तो यह आश्चर्य की ही बात होगी।

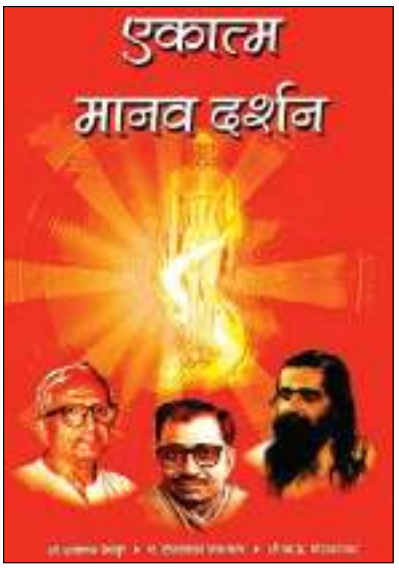

माँ बच्चों का पालन-पोषण करती है। बच्चे के लिए माँ का प्रेम सबसे बड़ा समझा जाता है। इसको आधार बनाकर ही हम जीवन का निर्माण करने वाले व्यवहार के नियम बना सकते हैं। कहीं माँ के इस प्रेम के विपरीत भी अनुभव आता है। बिल्ली के बारे में कहा जाता है कि प्रसव के बाद उसे इतनी भूख लगती है कि वह अपने बच्चे को खा जाती है। किंतु दूसरी ओर बंदरिया का बच्चा मर भी जाये, तो भी वह उसे चिपकाये लिये घूमती है। दोनों बातें देखने को मिलती हैं। अब प्रकृति के इन दो नियमों में से किस नियम को ढूँढ कर हम जीवन का आधार बना कर चलें? हमारा निर्णय तो यही होगा कि जो जीवन के लिए सहायक और पोषक है उसे ही हम आधार बनायें, इसके प्रतिकूल चलेंगे तो वह संस्कृति नहीं होगी। मनुष्य की प्रकृति में दो बातें हैं। मनुष्य की प्रकृति में क्रोध भी है, लोभ भी है। मनुष्य की प्रकृति में मोह भी है और प्रेम भी है। मनुष्य की प्रकृति में त्याग भी है और तपस्या भी है। ये सब मनुष्य के जीवन में हैं। यदि हम काम, क्रोध, मोह और लोभ को आधार बनाकर जीवन का विचार करें और कहें कि अन्ततः सब लोग क्रोधी होते हैं, हर एक को क्रोध आता है, पशु को भी क्रोध आता है, इसलिए वही जीवन का मानदण्ड होना चाहिए - क्रोध को ठीक मानकर तथा लोगों को क्रोध की सलाह देकर यदि हम व्यवस्था बनायें तो वे चल नहीं पायेंगी। अतः सर्वत्र कहा है कि क्रोध आने के बाद भी मनुष्य क्रोध को रोक सकता है, उसका दमन कर सकता है और इसलिए हमें उसका दमन करना चाहिए। अतः दमन हमारे जीवन का आधार हो सकता है, क्रोध नहीं।

इस प्रकार जीवन के जो नियम होते हैं, उन्हीं नियमों को नीति-शास्त्र के नियम कहते हैं। ये नियम कोई तय नहीं करता। यानी क्रोध आने पर हमें क्रोध को प्रकट नहीं करना चाहिए, बल्कि शांत रहना चाहिए, क्रोध को पी जाना चाहिए, ऐसे जो नियम बनाये हैं, ये नीतिशास्त्र के नियम हैं। अंग्रेजी में इन्हें इथिक्स कहते हैं। ये नियम किसी ने बनाये नहीं हैं, ये तो ढूँढे जाते हैं। जैसे यह नियम है कि यदि हम किसी पत्थर को फेंक दें तो वह नीचे गिर पड़ेगा। इसको गुरुत्वाकर्षण का नियम कहते हैं। गुरुत्वाकर्षण का नियम न्यूटन ने बनाया नहीं है। उन्होंने इस नियम को ढूँढ़ा। उसी प्रकार से मानव-संबंधों के भी कुछ नियम हैं। गुस्सा आये तो उस गुस्से को दबाओ, यह मानव के लाभ का होता है। नीतिशास्त्र के ये नियम ढूँढे हुए नियम हैं। एक-दूसरे के साथ झूठ मत बोलो, जैसा देखा है वैसा बोलो-यह सत्य है। इसका लाभ हमें हर घड़ी अनुभव में आता है। हमको, जो जैसा है वैसा ही बोलें तो अच्छा लगता है। यदि हमने एक बात देखी और दूसरी बोली, हर स्थान पर हम झूठ बोलते रहे तो हमको भी बुरा लगेगा। बोलने वाले को भी बुरा लगेगा और सुनने वाले को भी बुरा लगेगा। और जीवन तो चल ही नहीं पायेगा। बड़ी कठिनाई हो जायेगी।

सूरज निकला और हमने देखा कि सूरज निकला है। घर में किसी व्यक्ति ने पूछा कि सूरज निकल आया क्या? अब यदि हमने उसको झूठ बोल दिया कि नहीं निकला, या बाहर वर्षा हो रही है और कमरे में बैठा हुआ व्यक्ति हमें पूछ रहा है कि बाहर वर्षा हो रही या बादल साफ है? और हमने कहा कि बादल बिल्कुल साफ है, वर्षा नहीं हो रही है। हमारी बात मानकर जब वह बाहर निकलता है तो सहसा भीग जाता है। इस स्थिति में सोचें कि उसके-हमारे संबंध कैसे होंगे? इस प्रकार क्या जगत चल सकेगा?

यही नियम हमारे धर्म का है

यह सत्य का जो नियम है, उसे ढूँढ़ कर निकाला गया। इस प्रकार से ढूँढ़ कर निकाले हुए जो नियम हैं, उनको हमारे यहाँ **धर्म** कहा गया है। मानव-जीवन को स्थिर रखने वाले, मानव-जीवन की धारणा करने वाले (मैं इस समय मानवता की बात कर रहा हूँ, शेष बातें छोड़ रहा हूँ, वैसे तो धर्म का संबंध सब के साथ आता है, संपूर्ण सृष्टि के साथ भी आयेगा) जितने नियम हैं, वे सब धर्म हैं। उस धर्म का आधार लेकर हम संपूर्ण जीवन का विचार करें।

व्यक्ति के सुख का विचार

संपूर्ण समाज या सृष्टि का ही नहीं, व्यक्ति का भी हमने एकात्म एवं संकलित विचार किया है। सामान्यतः तो व्यक्ति का विचार उसके शरीर मात्र के साथ किया जाता है। शरीर-सुख को ही लोग सुख समझते हैं, किंतु हम जानते है कि मन में चिंता रही तो शरीर-सुख नहीं रहता। प्रत्येक व्यक्ति शरीर का सुख चाहता है, किंतु किसी को कारागार में डाल दिया जाये और बहुत अच्छा खाने को दिया जाये तो उसे सुख होगा क्या?

पुराना उदाहरण है कि भगवान् कृष्ण जब कौरवों के यहाँ संधि करने के लिए गये तो दुर्योधन ने उनको बुलाया और कहा, महाराज! हमारे यहाँ भोजन करने के लिए आइए। भगवान कृष्ण दुर्योधन के घर भोजन करने नहीं गये। किन्तु विदुर के यहाँ गये। जब विदुर के यहाँ पहुँचे तो वहाँ हालत ऐसी हो गयी कि विदुर की पत्नी ने अत्यधिक आनंद के मारे केले के छिलके छील-छील कर भगवान कृष्ण के सामने डाल दिये और गूदा दूसरी ओर फेंक दिया। भगवान कृष्ण भी उन छिलकों को आनंदपूर्वक खाते रहे। इसलिए लोग कहते हैं -भाई! आनंद के साथ, सम्मान के साथ यदि रूखी-सूखी भी मिल जाये तो बहुत अच्छी है, परंतु अपमान के साथ मेवा भी मिले तो उसे छोड़ना चाहिए। अतः मन के सुख का भी विचार करना पड़ता है।

इसी प्रकार बुद्धि का भी सुख है। इसके सुख का विचार करना पड़ता है, क्योंकि यदि मन का सुख हुआ भी और आपको बड़े प्रेम से रखा भी तथा आपके खाने-पीने को भी प्रचुर मात्रा में दिया, परन्तु यदि मस्तिष्क में कोई उलझन बैठी रही तो वैसी हालत होती है जैसे पागल की हो जाती है। पागल का क्या होता है? उसे खाने को पर्याप्त मिलता है, हृष्ट-पुष्ट भी हो जाता है, अन्य भी सुविधाएँ होती हैं, परंतु मस्तिष्क की उलझन के कारण बुद्धि का सुख प्राप्त नहीं होता। बुद्धि में भी तो शाँति चाहिए। इन बातों का हमें विचार करना पड़ेगा।

◆◆◆

PROJECT MANAGEMENT & CONSTRUCTION MANAGEMENT

ARCHITECTURAL DESIGN SERVICES | INTERIOR DESIGN

A2Z ONLINE SERVICES PRIVATE LIMITED

Tech Park One, Tower ‘E’, 191 Yerwada, Pune-411 006 (INDIA)

एण्टी-सैटेलाइट मिसाइल भारत की अन्तरिक्षीय परिसम्पत्तियों का रक्षक

– विजन कुमार पांडेय

अन्तरिक्ष की दुनिया में भारत की सबसे बड़ी कामयाबी से दुनिया हैरान है 'मिशन शक्ति' की सफलता से चीन और पाकिस्तान जैसे देश परेशान हैं, तो वहीं अमरीका ने इस मसले पर भारत के सहयोग का ऐलान किया है। अमरीकी विदेश मंत्रालय की ओर से कहा गया है कि वह अन्तरिक्ष और विज्ञान के क्षेत्र में भारत के साथ के लिए तैयार है। अमरीका ने कहा है कि स्पेस में सुरक्षा को लेकर दोनों देश साथ आगे बढ़ेंगे। हालांकि, अमरीका ने इस बयान में यह भी कहा है कि अन्तरिक्ष का मलवा हमारी सरकार के लिए एक चिन्ता का विषय है, हम इस मसले पर भारत सरकार से बात करेंगे। उन्होंने यह भी कहा कि भारत सरकार की ओर से अन्तरिक्ष के मलबे को लेकर जो बयान दिया गया है, हम उस पर भी नजर बनाए हुए हैं। भारत की सफलता के बाद सबसे पहले पाकिस्तान की प्रतिक्रिया आई। पाकिस्तान ने कहा है कि पाकिस्तान आउटर स्पेस में हथियारों की दौड़ रोकने का पक्षधर रहा है। अन्तरिक्ष सभी की साझा विरासत है और हर देश की जिम्मेदारी है कि ऐसे कदमों से बचे, जिससे वहाँ सैन्यकरण हों। पाकिस्तान के प्रधानमंत्री इमरान खान ने भी सुरक्षा को लेकर बड़ी बैठक बुलाई थी।

भारत ने अन्तरिक्ष में युद्धक क्षमता हासिल करते हुए किसी भी संदिग्ध सैटेलाइट को मार गिराने की शक्ति हासिल कर ली है। उसने अन्तरिक्ष में मारक क्षमता हासिल करते हुए ऐंटी–सैटेलाइट मिसाइल की सफल लॉन्चिंग की है। 27 मार्च को सुबह 11 बजे के करीब महज 3 मिनट में वैज्ञानिकों ने इस बेहद जटिल तकनीकी परीक्षण को अंजाम दिया। इस प्रोजेक्ट पर बीते करीब 6 महीनों से वैज्ञानिक काम कर रहे थे। भारत द्वारा 27 मार्च को मिशन शक्ति के तहत् एंटी सैटेलाइट मिसाइल का सफल परीक्षण किया गया है। भारत की इस उपलब्धि पर पहली बधाई अमरीका से आई। अमरीकी राष्ट्रपति ने अन्तरिक्ष अभियानों में भारत संग और सहयोग बढ़ाने की बात कही है। इसके विपरीत अमरीका अन्तरिक्ष एजेंसी नासा ने भारत के इस परीक्षण को खतरनाक बताया है। ऐसे में हमारे लिए यह जानना जरूरी है कि अमरीका वास्तव में भारत की इस कामयाबी पर खुश है या चिन्तित या फिर चिढ़ा हुआ। आइए, जानते हैं मिशन शक्ति से अन्तरिक्ष में खतरे सम्बन्धी नासा के बयान का सच क्या है?

नासा के अनुसार भारत के एंटी सैटेलाइट मिसाइल परीक्षण से अन्तरिक्ष की कक्षा में करीब 400 मलबे के टुकड़े फैल गए हैं। इससे भविष्य में अन्तर्राष्ट्रीय अन्तरिक्ष स्टेशन (ISS) में मौजूद अन्तरिक्ष यात्रियों के लिए नया खतरा पैदा हो गया है। नासा प्रमुख जिम ब्रिडेनस्टाइन का कहना है कि भारत ने पृथ्वी की निचली कक्षा में 300 किमी दूर मौजूद सैटेलाइट को मार गिराया, जो कक्षा में (ISS) और ज्यादातर सैटेलाइटों से नीचे था। नष्ट की गई सैटेलाइट

के 24 टुकड़े (ISS) से ऊपर मलबे के टुकड़े पहुँचना खतरनाक और अस्वीकार्य है। इससे भविष्य में स्पेस वॉक कर रहे अन्तरिक्ष यात्रियों के लिए खतरा हो सकता है। इसलिए ऐसी गतविधियाँ मानव स्पेस फ्लाइट के लिए अनुकूल नहीं हैं, लेकिन रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन (DRDO) के पूर्व मुखिया वीके सारस्वत, नासा की चिन्ताओं को पहले ही खारिज कर चुके हैं। उन्होंने नासा द्वारा व्यक्त की गई चिन्ता को पूर्णतया काल्पनिक बताया है। सारस्वत के अनुसार हमारे A-Sat मिसाइल टेस्ट से अन्तरिक्ष में जो भी कचरा फैला है, उनमें पर्याप्त गति नहीं है। इसलिए वे लम्बे समय तक अन्तरिक्ष में टिक नहीं सकते। 300 किमी की ऊँचाई पर मौजूद ये टुकड़े कुछ समय बाद अपने-आप गिरकर पृथ्वी के वातावरण में आएंगे और जलकर नष्ट हो जाएंगे।

अमरीका भी SBer सैटेलाइट मिसाइल परीक्षण करने वाले दुनिया के चार देशों में शामिल है। फिर अमरीका खुद भी यह परीक्षण कई बार कर चुका है, अमरीका के अलावा इस तकनीक से लैस रूस और चीन भी ऐसा परीक्षण कर चुके हैं, अमरीका के परीक्षण से भी अन्तरिक्ष में हजारों बड़े टुकड़े पैदा हुए। ऐसे में अमरीका को भारतीय परीक्षण पर सवाल नहीं उठाना चाहिए। भारत नें एंटी सैटेलाइट मिसाइल का परीक्षण 300 किमी ऊँचाई पर किया है, जबकि ISS पृथ्वी कि कक्षा से 435 किमी की ऊँचाई के बीच रहता है। तो फिर इसको मलवे से कैसे खतरा है? भारतीय एंटी सैटेलाइट परीक्षण को लेकर नासा की चिन्ता इसलिए भी व्यर्थ है क्योंकि अन्तरिक्ष में पहले से ही हजारों टन कचरा मौजूद है। जिनकी संख्या करोड़ों में है। यूरोपीय स्पेस एजेंसी के अनुसार अन्तरिक्ष में इस वक्त 10 सेमी या उससे बड़े आकार के 34000 टुकड़े, एक सेमी से 10 सेमी आकार के 90 हजार टुकड़े पहले से मौजूद हैं। इसके सामने 400 टुकड़े बहुत छोटा आँकड़ा है। भारतीय विशेषज्ञों के अनुसार अगर ये बात 400 टुकड़े खतरनाक हैं, तो क्या अन्तरिक्ष में वर्षों से मौजूद लाखों टुकड़े और हजारों टन कबाड़ा से ISS को खतरा नहीं है? मालूम हो कि प्रत्येक वर्ष पृथ्वी की निचली कक्षा में अलग-अलग आकार के लगभग 190 सैटेलाइट लाँच होते हैं। इनकी संख्या लगातार बढ़ती जा रही है। कुछ बेकार सैटेलाइट मलवे के रूप में अन्तरिक्ष में पड़े हुए हैं। इससे भी अन्तरिक्ष में मलबा बढ़ रहा है।

इसे स्पेस वेपन के रूप में भी जाना जाता है। जिसका उपयोग सैटेलाइट को नष्ट करने के लिए किया जाता है। कुछ देश इस तरह के एंटी-सैटेलाइट को अन्तरिक्ष में छोड़ते हैं। जिसका इस्तेमाल सैटेलाइट को नष्ट करने के लिए किया जाता है। हालांकि, युद्ध के दौरान किसी भी प्रकार के ए-सैट सिस्टम का उपयोग अभी तक नहीं किया गया है। भारत से पहले A-Sat को छोड़ने की क्षमता केवल अमरीका, चीन और रूस के पास थी। अब भारत ने मिशन पॉवर के तहत् लो अर्थ ऑर्बिट में ए-सैट का परीक्षण कर यह उपलब्धि हासिल की है। अमरीका और रूस को इस विरोधी उपग्रह प्रणाली के पिता के रूप में जाना जाता है। 1950 में रूस में एंटी-सैटेलाइट सिस्टम विकसित किया। 2007 में, चीन पृथ्वी की कक्षा में अपने स्वयं के उपग्रहों में से एक को मारकर इस तकनीक में कदम रखने वाला तीसरा देश बन गया। भारत 2010 में लो ऑर्बिट में ऐसी एंटी-सैटेलाइट मिसाइलों को मारने की तकनीक पर काम कर रहा था। हम सभी भारतीयों के लिए यह गर्व की बात है। यह पराक्रम भारत में ही तैयार ए-सैट मिसाइल द्वारा किया गया है। यह परीक्षण किसी भी तरह के अन्तर्राष्ट्रीय कानून या संधि समझौतों का उल्लंघन नहीं करता है। भारत इसका इस्तेमाल 130 करोड़ देशवासियों की सुरक्षा और शांति के लिए ही करना चाहता है। हमारा सामरिक उद्देश्य युद्ध का माहौल बनाए रखने की बजाय शांति बनाए रखना है। दुनिया को इसे एक सुरक्षित और शांतिपूर्ण राष्ट्र के लिए बढ़ते हुए कदम के तौर पर देखना चाहिए।

भारतीय एंटी सैटेलाइट परीक्षण को लेकर नासा की चिन्ता इसलिए भी व्यर्थ है क्योंकि अन्तरिक्ष में पहले से ही हजारों टन कचरा मौजूद है। जिनकी संख्या करोड़ों में है।

भारत ने 27 मार्च, 2019 को इस मिशन शक्ति को अंजाम दिया था। इस मिशन में डीआरडीओ ने अन्तरिक्ष में अपने ही एक बेकार पड़ा सैटेलाइट को मार गिराया। इसके साथ ही भारत दुनिया का चौथा देश बन गया, जिसके पास अन्तरिक्ष में मार करने की क्षमता है। इससे पहले अमरीका, रूस और चीन के पास यह ताकत थी। सबसे बड़ी बात तो यह है कि पोखरण की तरह ही मिशन शक्ति भी हैरान करने वाला कार्यक्रम था। बहुत ही कम लोगों को इस मिशन के बारे में पता था। अंतिम समय तक किसी को कुछ पता नहीं था कि क्या होने वाला है। 21 नवम्बर, 1963 को केरल में तिरुअंतपुरम के करीब थुंबा से पहले रॉकेट के लाँच के साथ भारत ने अपना अन्तरिक्ष कार्यक्रम शुरू किया था। 15 अगस्त, 1969 को डॉ. विक्रम साराभाई ने इसरो की स्थापना की थी। इसका एक ही मकसद था। अन्तरिक्ष के क्षेत्र में काम करना। एसएलवी-3 भारत का पहला स्वदेशी सैटेलाइट लाँच व्हीकल था। उस समय डॉ. ए.पी.जे अब्दुल कलाम इस परियोजना के निर्देशक थे। इसरो के पहले चंद्रयान मिशन पर करीब रू। 390 करोड़ खर्च हुए। जो नासा द्वारा इसी तरह के मिशन पर होने वाले खर्च के मुकाबले 8-9 गुना कम है। इसरो का मंगल मिशन अब तक सबसे सस्ता मिशन था। जिस पर महज रू. 450 करोड़ यांनी रू. 12 प्रतिकिमी खर्च आया जो ऑटो किराये के बराबर है। इसरो ने अब तक एक के बाद एक पीएसएलवी सफलता पूर्वक लाँच किए हैं। उसने अपने सैटेलाइट्स के अलावा अन्य देशों के सैटेलाइट्स भी छोड़े हैं। इस समय दुनिया में सिर्फ 6 अन्तरिक्ष एजेंसियों के पास ही सैटेलाइट बनाने और छोड़ने की क्षमता है। इसरो भी उनमें से एक है। अधिकतर देश अपने नैविगेशन से सम्बन्धित कार्य के लिए अमरीका आधारित जीपीएस सिस्टम के भरोसे रहते हैं। लेकिन, भारत में सफलतापूर्वक अपना खुद का नेविगेश सैटेलाइट्स आईआरएनएसएस लाँच किया है। 15 फरवरी, 2017 को इसरो ने दुनिया को चौंका दिया था। जब श्रीहरीकोटा स्थित सतीश धबन स्पेस सेंटर के पहले लाँच पैड से भारत ने अन्तरिक्ष में 104 सैटेलाइट छोड़े थे। अभी इसरो और ऊँची छलांग लगाने की तैयारी में है। अपने मानवयुक्त मिशन को अन्तरिक्ष में भेजने की योजना बनाई है। इस मिशन को गगनयान मिशन का नाम दिया है। इस मिशन के लिए सरकार ने जरूरी फण्ड भी आवंटित कर दिया है। मिशन शक्ति की कामयाबी पर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने डीआरडीओ के वैज्ञानिकों को बधाई दी। डीआरडीओ ने इस मिशन शक्ति को अन्जाम दिया है, जो लोअर्थ ऑर्बिट एरिया (एलईओ) में एक अपने सैटेलाइट को मार गिराया और अपनी एंटी-सैटेलाइट क्षमता का प्रदर्शन किया। यह मिशन पूरी तरह से स्वदेशी था और इसे सिर्फ 3 मिनट में अन्जाम दिया गया। डीआरडीओ ने यूपीए सरकार के शासनकाल में इस तरह की परियोजनाओं पर काम करने की घोषणा की थी, लेकिन योजनाओं को अंतिम रूप अब दिया गया। साल 2012

में अग्नि V लॉंचिंग भारत की एंटी सैटेलाइट क्षमता विकसित करने की दिशा में पहला कदम था। भारत के पास एक दशक पहले भी एंटी-सैटेलाइट मिसाइल क्षमता थी, लेकिन उस समय राजनीतिक इच्छा शक्ति की कमी के कारण इसे सफलतापूर्वख अन्जाम नहीं दिया जा सका। जिस समय चीन ने 2007 में यह परीक्षण किया और अपने मौसम उपग्रह को मार गिराया, उस समय भी भारत के पास ऐसा ही मिशन पूरा करने की तकनीक थी। लेकिन उस समय भारत के पक्ष में अन्य देश नहीं थे, इसलिए इसका परिक्षण नहीं हो सका।

चीन ने भी भारत के उपग्रह रोधी-मिसाइल परिक्षण पर सतर्कतापूर्वक प्रतिक्रिया देते हुए उम्मीद जतायी कि सभी देश बाहरी अन्तरिक्ष में शांति बनाये रखेंगे। दरअसल यह रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन (डीआरडीओ) का प्रौद्योगिकी मिशन था और इस मिशन में उपयोग किया उपग्रह निचली कक्षा में मौजूद भारत के उपग्रहों में से एक था। यह मिशन पूरी तरह से स्वदेशी प्रौद्योगिकी पर आधारित था। परीक्षण किसी देश को निशाना बनाकर नहीं किया गया है। अब प्रश्न यह है कि यह परीक्षण क्यों किया गया, यह परीक्षण इसलिए किया गया, ताकि भारत के अपने अन्तरिक्ष सम्बन्धी परिसम्पत्तियों की सुरक्षा की क्षमता की पुष्टि कर सके, हम बाहरी अन्तरिक्ष में अपने देश के हितों की रक्षा कर सकें। इसलिए यह परीक्षण जरूरी हो गया था। भारत का इरादा बाहरी अन्तरिक्ष में हथियारों की दौड़ में शामिल होना नहीं है। और उसने हमेशा इस बात का पालन किया है कि अन्तरिक्ष का केवल शांतिपूर्ण उद्देश्यों के लिए ही इस्तेमाल किया जाए। भारत बाहरी अन्तरिक्ष के शस्त्रीकरण के खिलाफ है और अन्तरिक्ष आधारित परिसम्पत्तियों की सुरक्षा के अन्तर्राष्ट्रीय प्रयासों का समर्थन करता है।

ए-सैट मिसाइल के सफल परिक्षण के बाद डीआरडीओ और इसरो किसी भी सम्भावित खतरे से निपटने की तैयारियों में जुट गये हैं। इसमें डाइरेक्ट एनर्जी वेपन (DEWs) और को-ऑर्बिटल किलर्स को विकसित करने के अलावा अपने सैटेलाइट्स को इलेक्ट्रॉनिक और फिजिकल हमले से बचाने के तरीके भी शामिल हैं। रक्षा अनुसंधान और विकास संगठन इस समय डाइरेक्ट एनर्जी वेपन, लेजर, इलेक्ट्रो मैग्नेटिक पल्स के साथ, कोऑर्बिटल किलर्स की तकनीकी को और उन्नत बनाने की दिशा में काम कर रहा है। तीन स्टेज वाली इंटरसेप्टर मिसाइल 1000 किलोमीटर तक मार करने में सक्षम हैं। इसके साथ ही यह मिसाइल एक बार में कई लक्ष्यों पर निशाना साध सकती है। कभी अगर दुश्मन देश हमारे मुख्य उपग्रहों को निशाना बनाता है, तो सशस्त्र बलों की माँग पर मिनी उपग्रहों को भी भविष्य में लाँच करने की योजना है। डीआरडीओ लम्बे समय से विभिन्न प्रकार के डीईडब्ल्यु जैसे ऊर्जा वाले लेजर व उच्च शक्ति वाले माईक्रोवेव कार्यक्रम चलाता रहा है, जिससे हवाई और जमीन पर स्थित लक्ष्यों को नष्ट किया जा सके।

आईएसएस अन्तरिक्ष में दुनिया की एक मात्र स्थायी प्रयोगशाला है। यह बहुत विशाल है, एक फुटबाल मैदान की तुलना में थोड़ी बड़ी ही है और इसका वजन 400 टन से ज्यादा है। आईएसएस पृथ्वी की सतह से करीब 400 किलोमीटर ऊपर स्थित है। अब प्रश्न यहाँ यह है कि क्या इतने बड़े पैमाने की बुनियाद ढाँचे के लिए छोड़े टुकड़े खतरे पैदा कर सकते हैं? दरअसल, टुकड़ों का असर और वजन अलग बात है। महत्वपूर्ण यहां यह है कि यह टुकड़े बहुत तेज गति से चलते हैं। पृथ्वी की निचली कक्षा में जहाँ भारतीय उपग्रह पर परीक्षण किया गया, वहाँ वस्तुएँ अपनी कक्षाओं में रहने के लिए आमतौर पर लगभग 8 मीटर प्रति सैकेण्ड या 28,000 किलोमीटर प्रति घण्टे की रफ्तार से चलती है। इतने रफ्तार में करीब 100 ग्राम की एक छोटी वस्तु भी टकराने पर उतना ही प्रभाव पैदा करेगी, जितना कि लगभग 100 किलोमीटर प्रति घण्टे की रफ्तार से चलने वाला 30 किलो का पत्थर टकराने पर करता है। नष्ट किए गये भारतीय उपग्रह से निकलने वाला मलबा आमतौर पर इतनी ही रफ्तार से आगे बढ़ेगा। अगर इसे नष्ट नहीं किया गया तो, अन्तरिक्ष में किसी भी अन्य उपग्रह से टकराने पर वह उस उपग्रह को बेकार बना सकता है।

किसी भी उपग्रह को अन्तरिक्ष के मलबे से लगातार खतरा है। नासा की विशिष्ट एजेंसियाँ सभी महत्वपूर्ण बड़े टुकड़ों को ट्रैक करती हैं, जिनकी संख्या 23,000 से अधिक है। यूरोपीय अन्तरिक्ष एजेंसी भी यह काम करती है, यह दोनों एजेंसी लगातार अन्तरिक्ष में जोखिम का मूल्यांकन करते हैं। और यदि आवश्यक हुआ तो जमीन पर मौजूद कंट्रोल स्टेशन उचित कार्यवाही भी करते हैं, हर दिन आईएसएस के परिक्रमा-पथ (ट्रैजेक्ट्री) की कम-से-कम तीन बार जाँच की जाती है। यदि कोई वस्तु आईएसएस के आसपास 25 किमी x 25 किमी x 4 किमी (ऊँचाई) के आकार के एक अन्तरिक्ष बॉक्स के दायरे में आ जाता है, तो इसे सम्भावित खतरा माना जाता है। इसके बाद टकराव की सम्भावना की गणना की जाती है और यदि जरूरी हुआ तो आईएसएस को उसके परिक्रमा-पथ से दूर कर दिया जाता है। इस तरह के नेविगेशन को मलबे से बचाव युद्धाभ्यास या डैम कहा जाता है। 1999 के बाद आईएसएस 25 बार डेम से गुजर चुका है। आखिरी बार ऐसा 2015 में किया गया था।

हाल ही में किए गये परीक्षण से उत्पन्न मलबे कभी भी दूसरों के लिए खतरे नहीं बन सकते। चूँकि, परीक्षण पृथ्वी की सतह से लगभग 300 किमी की दूरी पर पृथ्वी की निचली कक्षा में किया गया था, इसलिए मलबा हफ्तों में धरती पर वापस गिर जायेगा। लगभग 300 किमी की दूरी पर पृथ्वी की निचली कक्षा में वायुमण्डल और गुरुत्वाकर्षण दोनों ही काफी कमजोर होते हैं। इसलिए धरती पर इसका कोई असर नहीं होगा। भारतीय उपग्रह के टुकड़ों के वायुमण्डल के घर्षण की वजह से रफ्तार खतम होने की उम्मीद है और फिर गुरुत्वाकर्षण के कारण पृथ्वी की ओर गिरेंगे और हवा के घर्षण के कारण जल जायेंगे।

◆◆◆

Universal Sompo
General Insurance Co. Ltd.
Suraksha, Hamesha Aapke Saath

Hum Hai, Toh Kya Gam Hai.

Universal Sompo's
MOTOR INSURANCE

- 24X7 Road Assistance
- Daily Cash Allowance
- Depreciation Waiver
- Immediate Hospitalization

www.universalsompo.com | Toll Free No. 1800 22 4030

A joint venture of Allahabad Bank ★ Indian Overseas Bank ★ Karnataka Bank Ltd.★ Dabur Investment Corp★Sompo Japan Nipponkoa.

ENG/MOTOR/MAG/056/2019| IRDA Regd. No. 134 | Regd. Office : Unit No. 401, 4th Floor, Sangam Complex, 127, Andheri Kurla Road, Andheri (E), Mumbai – 400059, Maharashtra. | Fax# 022-29211844 | CIN# U66010MH2007PLC166770. | UIN# IRDA/NL/F&U/USGI/Motor/ Add-On/1; IRDA/USGI/2007-08/05. | Email: contactus@universalsompo.com. | Insurance is the subject matter of solicitation. | For more details on risk factors, terms and conditions please read sales brochure carefully before concluding a sale. IRDA or its officials do not involve in activities like sale of any kind of insurance or financial products nor invest premiums. IRDA does not announce any bonus; Those receiving such phone calls are requested to lodge a police complaint along with details of phone call and number.

cubishop.com

One Stop Solution
For
All Your Need

www.cubishop.com

Shopping | Recharge | Bill Pay | Flight
Bus | Hotel | Holiday | Logistics

Fohad Latiwala C.M.D.

SAAMI®

Saami Tradestar Logistics Ltd.

H.O.: 204, Millennium Plaza, Behind Sakinaka, Telephone Exchange Andheri Kurla Road, Andheri (E), Mumbai - 400 072.
Tel. 91-22-66711 463 /464 /28510106
info@tradestarindia.com

युवराज ने टी-20 लीग में खेलने के लिए बीसीसीआई से अनुमति मांगी

हाल ही में क्रिकेट से संन्यास लेने वाले भारतीय हरफनमौला युवराज सिंह ने बीसीसीआई से दुनिया भर की टी-20 लीग में खेलने की अनुमति मांगी है। बीसीसीआई के एक सूत्र ने बताया कि उन्होंने कल बोर्ड को पत्र लिखा है। अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट और आईपीएल से संन्यास के बाद मुझे नहीं लगता कि बोर्ड को उन्हें अनुमति देने में कोई परेशानी होगी। बीसीसीआई ने सक्रिय खिलाड़ियों को विदेशी टी-20 लीग में भाग लेने से मना किया है और यही कारण है कि युवराज ने दुनिया भर की प्रतियोगिताओं में भाग लेने के लिए संन्यास की घोषणा की। इससे पहले संन्यास लेने के बाद वीरेन्द्र सहवाग और जहीर खान जैसे क्रिकेटर यूएई में हुई टी-10 लीग में खेल चुके हैं। पिछले सप्ताह संन्यास की घोषणा के वक्त युवराज ने कहा था कि वह विदेशी टी-20 लीग में खेलना चाहते हैं। उन्होंने कहा कि मैं टी-20 क्रिकेट में खेलना चाहता हूं। इस उम्र में मैं मनोरंजन के लिए कुछ क्रिकेट खेल सकता हूं। मैं अब अपनी जिंदगी का लुत्फ उठाना चाहता हूं। अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट और आईपीएल के बारे में सोचना काफी तनावपूर्ण होता है।

विलियमसन एक दिवसीय में सार्वकालिक महान खिलाड़ी : विटोरी

न्यूजीलैंड के पूर्व स्पिनर डेनियल विटोरी ने कहा कि दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ विश्व कप मुकाबले में विषम परिस्थितियों में नाबाद शतकीय पारी खेल कर टीम को जीत दिलाने वाले केन विलियमसन ने यह साबित किया कि वह एक दिवसीय मैच में न्यूजीलैंड के सार्वकालिक महान खिलाड़ी हैं। विटोरी खुद भी न्यूजीलैंड के महान खिलाड़ियों में से एक हैं जिन्होंने अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट के विभिन्न प्रारूपों में 705 विकेट लेने के साथ 7000 से ज्यादा विकेट चटकाए है। विटोरी ने आईसीसी के कॉलम में लिखा कि केन विलियमसन न्यूजीलैंड के सार्वकालिक महान एक दिवसीय खिलाड़ी हैं और उन्होंने दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ जो पारी खेली उससे पता चलता है कि मैं ऐसा क्यों बोल रहा हूं। वह अभी ही महान खिलाड़ी बने हैं और करियर के अंत तक उनके आंकड़े वहां तक पहुंच जाऐंगे जहां तक न्यूजीलैंड के किसी पूर्व या मौजूदा खिलाड़ी के नहीं पहुंचे होंगे। विलियमसन ने 138 गेंद में नाबाद 106 रन की पारी खेल दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ टीम की जीत सुनिश्चित की। उन्होंने कहा कि विलियमसन ने कप्तान के तौर पर और बिना कप्तानी के ही इतना कुछ किया है। वह असाधारण हैं और उनकी बल्लेबाजी को देखना सुकून देता है। वह सभी शाट को खेलते हैं और उन्हें पता है स्ट्राइक कैसे बदलना है। उन्होंने कहा कि जो चीज उन्हें दूसरे बल्लेबाजों से अगल करती है वह है उनकी एकाग्रता।

उनका पूरा ध्यान मैच जीतने पर रहता है और वह अपनी बल्लेबाजी उसी पर केंद्रित रखते हैं। विलियमसन आज के दौर के शीर्ष बल्लेबाजों में शामिल हैं जिनके नाम 13,000 से ज्यादा रन हैं। बुधवार को खेले गये मुकाबले में न्यूजीलैंड की टीम 80 रन पर चार विकेट गंवा कर संघर्ष कर रही थी, लेकिन विलियमसन ने एक छोर संभाले रखा और 242 रन के लक्ष्य को चार विकेट खोकर हासिल कर लिया।

◆◆◆

राहुल ढोलकिया की अगली फिल्म में कृति सैनन

राहुल ढोलकिया के निर्देशन में बनने वाली अगली फिल्म में अभिनेत्री कृति सैनन मुख्य भूमिका में नजर आएंगी। एजर इंटरटेनमेंट के लिये सुनीर खेत्रपाल इस फिल्म का निर्माण करेंगे जिसका नाम अभी तय नहीं है। एक के बाद एक बरेली की बर्फी और लुका छिपी जैसी हिट फिल्म देने वाली कृति ने कहा कि वह लंबे समय से महिला केंद्रित थ्रिलर में काम करने की इच्छुक थीं। कृति ने एक बयान में कहा, मैं किसी सही महिला केंद्रित थ्रिलर में भूमिका का इंतजार कर रही थी। यह फिल्म सभी पैमानों पर खरी है जिसमें कमर्शियल फिल्म के सभी तत्व मौजूद हैं। यह मनोरंजक है और दर्शकों के दिलों को छू जाने वाले विषय पर आधारित है। उन्होंने कहा, मैं एक मीडिया कर्मी का किरदार निभा रही हूं जिसके लिये शोध पहले ही शुरू किया जा चुका है और मैं अगस्त में इस सफर के शुरू होने का इंतजार कर रही हूं। इस साल कृति की अर्जुन पटियाला, हाउसफुल 4 और आशुतोष गोवारीकर की पानीपत रिलीज होने वाली है।

ट्रेडस्टोन में नजर आएंगी श्रुति हसन

पिछले काफी समय से किसी फिल्म में नजर नहीं आईं अभिनेत्री श्रुति हसन को लेकर खबर है कि बहुत जल्द वह यूएसए नेटवर्क की आगामी सीरीज ट्रेडस्टोन में नजर आएंगी, जो जेसन बोर्न पर आधारित है। जी हां, खबर है कि श्रुति इस सीरीज में जैरेमी इरविन तथा ब्रायन जे। स्मिथ के साथ काम करेंगी, जिसका निर्माण कार्य अभी हाल ही में बुडापेस्ट में शुरू हुआ। बताया जा रहा है कि श्रुति इस सीरीज में दिल्ली की एक युवा महिला नीरा पटेल की भूमिका निभाएंगी, जिसकी वेटर की नौकरी एक खतरनाक दोहरी जिंदगी के लिए ढाल बनेगी। इसमें श्रुति के अलावा मिशेल फोर्ब्स, पैट्रिक फ्यूजिट, माइकल जेस्टन तथा टेज हाब्रिज की भी मुख्य भूमिकाएं होंगी। खैर, आपको बता दें कि आखिरी बार **बहन होगी तेरी** नामक फिल्म में नजर आईं श्रुति बहुत जल्द जहां महेश मांजरेकर की पावर नामक एक फिल्म में नजर आने वाली हैं, वहीं उनके पास कुछ साउथ की फिल्में भी हैं, जिनमें से कुछ इसी साल प्रदर्शित होंगी।

◆◆◆

तेलंगाना में विश्व की सबसे बड़ी सिंचाई परियोजना का लोकार्पण

भूपलपल्ली में कालेश्वरम लिफ्ट सिंचाई परियोजना के लोकार्पण अवसर पर तेलंगाना के राज्यपाल ईएसएल नरसिम्हन और मुख्यमंत्री के. चंद्रशेखर राव के साथ महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री देवेंद्र फड़नवीस तथा आंध्र के मुख्यमंत्री वाईएस जगनमोहन रेड्डी

80 हजार करोड़ रुपये की लागत वाली तेलंगाना की कालेश्वरम लिफ्ट सिंचाई परियोजना (केएलआइपी) का लोकार्पण प्रदेश के मुख्यमंत्री के. चंद्रशेखर राव ने किया। इस दौरान तेलंगाना व आंध्र प्रदेश के राज्यपाल ईएसएल नरसिम्हन, महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री देवेंद्र फड़नवीस व आंध्र प्रदेश के सीएम वाईएस जगनमोहन रेड्डी मौजूद थे। जयशंकर-भूपलपल्ली जिले के मेडीगड्डा में स्थित यह विश्व की सबसे बड़ी बहुचरण व बहुद्देश्यीय सिंचाई परियोजना है, जो रिकॉर्ड तीन साल में पूरी की गई। तेलंगाना के लिए वरदान बताई जा रही इस परियोजना के जरिये हर साल 45 लाख एकड़ भूमि में दो फसलों की सिंचाई हो सकेगी। राज्य सरकार ने बताया कि इसके जरिये महत्वाकांक्षी भागीरथ पेयजल परियोजना को 40 टीएमसी पानी उपलब्ध हो सकेगा। ग्रेटर हैदराबाद के करीब एक करोड़ बाशिंदों को पीने का पानी मिलेगा। राज्य के सैकड़ों उद्योगों को भी 16 टीएमसी पानी उपलब्ध होगा। बिजली का भी उत्पादन हो पाएगा। परियोजना में 203 किलोमीटर लंबी सुरंग के जरिये पानी मुहैया किया जाएगा। यह विश्व की एक मात्र ऐसी परियोजना है जो रोजाना दो टीएमसी पानी लिफ्ट कर सकती है। पहली बार समुद्र तल से 92 मीटर की ऊंचाई पर स्थित गोदावरी नदी से 618 मीटर की ऊंचाई पर पानी को लिफ्ट किया जा रहा है। तेलंगाना ने महाराष्ट्र सरकार के साथ परियोजना को लेकर आठ मार्च 2016 को समझौता किया था। इसके बाद राव ने दो मई 2016 को कन्नेपल्ली में इसकी नींव रखी। इससे पहले मुख्यमंत्री राव ने पत्नी के साथ मेडीगड्डा में गोदावरी नदी की पूजा की और यज्ञ भी किया। पूजा को श्रृंगेरी पीठम के आचार्यों ने संपन्न कराया।

अमेरिका व मिस्र की परियोजनाएं रह गई पीछे: केएलआइपी को मूर्त रूप देने वाली मेघा इंजीनियरिंग एंड इंफ्रास्ट्रक्चर लिमिटेड ने बताया कि इससे पहले अमेरिका की कोलोराडो और मिस्र की ग्रेट मैनमेड रिवर दुनिया की सबसे बड़ी लिफ्ट सिंचाई परियोजनाएं थीं। हालांकि, इनकी क्षमता कम थी और इन्हें बनाने में तीन दशक लगे थे।

दुनिया के सबसे ताकतवर शख्स मोदी: ब्रिटिश हेराल्ड

ब्रिटिश हेराल्ड के एक पोल में रीडर्स ने पीएम नरेंद्र मोदी को साल 2019 में दुनिया का सबसे ताकतवर इंसान चुना है। मीडिया रपटों के अनुसार, ब्रिटिश हेराल्ड के इस पोल में 25 से ज्यादा हस्तियों को शामिल किया गया, जिसमें दुनिया के अन्य ताकतवर नेताओं जैसे व्लादिमीर पुतिन, डॉनल्ड ट्रंप और शी जिनपिंग को भी जगह दी गई थी। लेकिन जज करने वाले पैनल ने सबसे ताकतवर शख्स के चुनाव के लिए 4 उम्मीदवारों का नाम सामने रखा और उनके बीच ही वोटिंग हुई।

वोटिंग के लिए दिया गया था ओटीपी

बताया जाता है कि दुनिया के सबसे ताकतवर शख्स का चुनाव करने के लिए केवल वोटिंग की आम प्रक्रिया का ही इस्तेमाल नहीं किया गया बल्कि ब्रिटिश हेराल्ड के रीडर्स को वोट करने के लिए वन टाइम पासवर्ड दिया गया। इसका मकसद था कि कोई भी व्यक्ति एक से ज्यादा बार किसी भी नेता के लिए वोट नहीं कर सके। वोटिंग के दौरान साइट क्रैश हो गई। वेबसाइट क्रैश होने का कारण वोट करने के लिए भारी संख्या में लोगों का साइट पर आना रहा।

चौथे नंबर पर रहे शी जिनपिंग

अमेरिकी राष्ट्रपति डॉनल्ड ट्रंप 21.9 प्रतिशत लोगों के वोट के साथ तीसरे नंबर पर रहे। सबसे आखिर में चीन के राष्ट्रपति शी जिनपिंग का नंबर आया, जिन्हें 18.1 प्रतिशत वोट मिले। पोल जीतने के बाद पीएम नरेंद्र मोदी की तस्वीर ब्रिटिश हेराल्ड मैग्जीन के जुलाई एडिशन के कवर पेज पर भी प्रकाशित की जाएगी। यह एडिशन 15 जुलाई को जारी होगा। बता दें कि इससे पहले भी पीएम मोदी देश-विदेश में कई उपलब्धियां हासिल कर चुके हैं।

आईजी कृष्ण प्रकाश ने रचा नया कीर्तिमान

पहली ही कोशिश में 'रेस अक्रॉस वेस्ट अमेरिका' (रॉ) के सोलो मेल कैटेगिरी में चौथी रैंक लाकर महाराष्ट्र के आईजी कृष्ण प्रकाश ने साइकलिंग में एक नया कीर्तिमान स्थापित किया है। 1500 किलो मीटर की साइकलिंग कंपटीशन को कृष्ण प्रकाश ने न केवल समय से पहले पूरा कर लिया, बल्कि ऐसा करने वाले वह पहले भारतीय भी बन गए हैं। कृष्ण प्रकाश ने बताया कि उन्हें पता ही नहीं था कि वह रैंक में हैं, वर्ना और भी बेहतर रैंक लाते। साइकलिंग और दौड़ के लिए जाने-जाने

वाले आईपीएस कृष्ण प्रकाश के नाम कई रेकॉर्ड हैं, जिसमें अब एक और नया रेकॉर्ड जुड़ गया है। 'रेस अक्रॉस वेस्ट अमेरिका' के बारे में बताते हुए उन्होंने कहा कि यह न केवल चैलेंजिंग था, बल्कि मेरे लिए एकदम नया था। इससे पहले मैंने कभी भी इस प्रतियोगिता में भाग नहीं लिया था, नतीजतन इसे पूरा करना मेरे लिए किसी चुनौती से कम नहीं था। इस कंपटीशन को पूरा करने के लिए अमेरिका के चार राज्यों से गुजरना पड़ा। इस दौरान कई बार बेहद अधिक तापमान का सामना करना पड़ा, तो कभी बेहद खतरनाक रास्तों से गुजरना पड़ा। रेस पूरा करने के लिए 56 हजार फीट की ऊंची पहाड़ियों से भी गुजरना पड़ा। इस दौरान कुछ ऐसे भी स्थान आए जहां उमस इतनी तेज थी कि शरीर में तेजी से पानी की कमी होने लगी। बता दें कि 1500 किमी के इस साइकलिंग रेस को 92 घंटों में पूरा करना होता है, लेकिन कृष्ण प्रकाश इसे 88 घंटों में ही पूरा करने में सफल रहे। इतनी कठिन रेस की तैयारी के बारे में पूछे जाने पर कृष्ण प्रकाश ने बताया कि इसके लिए वह अतिरिक्त समय नहीं निकाल पाते थे,नतीजतन सार्वजनिक छुट्टी के दौरान ही वह इसकी तैयारी कर पाते थे। एक समाचार पत्र से बात करते हुए उन्होंने बताया कि इसके लिए वह पुणे से गोवा साइकल चलाकर गए। वहीं कई बार नेताओं की सुरक्षा और अन्य बंदोबस्त में लगी ड्यूटी के बाद वह राज्य के आंतरिक हिस्सों से साइकिल चलाकर ही आया करते थे।

बेटी का मजाक उड़ाने वाले को स्मृति ने दिया करारा जवाब

केंद्रीय मंत्री स्मृति ईरानी ने अपनी बेटी जोइश के लुक्स का मजाक उड़ाने वाले को करारा जवाब दिया है। हाजिर जवाबी के लिए मशहूर केंद्रीय मंत्री ने इंस्टाग्राम पर एक नोट लिखकर इसकी पूरी जानकारी भी दी है।

स्मृति ने बेटी जोइश ईरानी के साथ इंस्टाग्राम पर अपनी एक सेल्फी पोस्ट की थी। इसमें जोइश के लुक्स को लेकर उसके एक सहपाठी ने क्लास में उसका मजाक उड़ाया था। इसके बाद जोइश ने स्मृति से कहकर वह सेल्फी इंस्टाग्राम से डिलीट करवा दी। मगर बेटी के इस अपमान पर केंद्रीय मंत्री को काफी गुस्सा आया और उन्होंने बेटी की एक नई फोटो इंस्टाग्राम पर शेयर कर उसके साथ बुली करने वाले शख्स को संबोधित करते हुए एक नोट लिखा। स्मृति ने लिखा है – " मैंने अपनी बेटी की सेल्फी डिलीट कर दी थी, क्योंकि एक बेवकूफ ने उसे क्लास में तंग किया था। एक झा ने उसके लुक्स के लिए उसका मजाक उड़ाया था और क्लास में अपने साथियों से कहा था कि अपनी मां के साथ सेल्फी में उसके लुक्स को लेकर उसे अपमानित करें। मेरी बच्ची ने मुझसे गुजारिश की थी कि मां कृपया इसे डिलीट कर दो, वे लोग मेरा मजाक उड़ा रहे हैं। मैंने कर दिया क्योंकि मुझसे उसके आंसू नहीं देखे गए। तभी मुझे इस बात का अहसास हुआ कि मैंने ऐसा करके तंग करने वालों को सपोर्ट ही किया है। इसलिए मिस्टर झा, मेरी बेटी एक प्रशिक्षित स्पोर्ट पर्सन है, लिम्का बुक्स में उसका रिकार्ड दर्ज है। कराटे में सेकंड डैन ब्लैक बेल्ट है। वर्ल्ड चैंपियनशिप में दो बार कांस्य पदक जीत चुकी है। एक प्यारी बेटी और बेहद खूबसूरत है। जितना चाहो उसे तंग करो, वह वापस लड़ेगी। वह जोइश ईरानी है और उसकी मां होने पर मुझे गर्व है। "

एमएमआरडीए की सीमा विस्तार का प्रस्ताव मंजूर

एमएमआरडीए की सीमा विस्तार का प्रस्ताव विधानसभा में मंजूर हो गया है। ऐसे में अब एमएमआरडीए के अंतर्गत पूरा मुंबई क्षेत्र,पालघर, ठाणे और रायगढ़ जिले का समावेश होगा। पश्चिम में अरब सागर, उत्तर में पालघर, पूर्व में तानसा नदी और दक्षिण में खलापुर तक एमएमआरडीए का विस्तार होगा। इससे मेट्रो-मोनो प्रोजेक्ट, ट्रांस हार्बर लिंक, जलाशय निर्माण का काम, नैनौ सिटी प्रोजेक्ट, विरार से अलीबाग मल्टी कॉरिडोर प्रोजेक्ट, वसई-विरार नॉलेज ग्रोथ सेंटर जैसी महत्वपूर्ण परियोजनाओं के लिए अब आसानी से एमएमआरडीए की तरफ से निधि मिलेगी। इसी कारण एमएमआरडीए की सीमा विस्तार का प्रस्ताव विधानसभा में मंजूर किया गया। इस निर्णय से ग्राम पंचायत से लेकर नगर निगम तक में आपसी समन्वय करना संभव हो सकेगा।

◆◆◆

6620 6717
www.rajgrandeur.com

Rajesh LifeSpaces

Exceptionally Exclusive

Views That Feel Like Poetry

Actual View

Limited Edition OC Ready Homes designed with Exceptional luxuries.

Now with an exclusive offer.

Move in today with just 25% & Pay No EMI for 1 year*

Offer valid till Akshay Tritiya, 28.4.2017

Raj GRANDEUR

POWAI

Aspired 3 & 4 Bed Residences

T & C Apply*

Breakfast se pehle...
subah bolo Good knight
Good knight
GOOD HABIT HAI
For more information log onto subahbologoodknight.com

Registration No. : MAHHIN/2009/30744
Postal Registration No. : MH/MR/N/139/MBI/10-12

जनहित में प्रकाशित

TITLE NO. MAHHINO7214/13/A2009-TC BY OFFICE THE REGISTRAR OF NEW PAPER FOR INDIA
MINISTRY OF INFORMATION & BRODCASTING, GOVT. OF INDIA.

हम सब की है यही पुकार । हरा-भरा हो यह संसार ।।